



Gharelu Ilaj (Hindi)

घरेलू इलाज



- गैरे तबीब को इलाज में हाथ डालना हराम है
- दाइमी नज़ले के 5 इलाज
- तवील अर्सा जवान रहने का नुस्खा
- गुदें की पथरी
- मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज
- शूगर के 8 इलाज
- सर में खुश्की के 3 इलाज
- हैज की खराबी के नुकसानात

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इब्न्याश अत्तार क़ादिरि २-जवी

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ
الْعَالِيَةِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 آمَنَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज् : शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज्वी بِرَحْمَتِهِمُ الْعَالِيَةِ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! एज़ु वज़ल ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले । (المستطرف ج ١ ص ٤٠، دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
 व बकीअ
 व मरिफ़त



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया) । (تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨، دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाईन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब (घरेलू इलाज)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है ।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क) को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डोट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है । मा'लूमात के लिये “हुरूफ़ की पहचान” नामी चार्ट मुला-हज़ा फ़रमाइये ।

(2) जहां जहां तलफ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन हर्फ़ के नीचे खोड़ा (˘) लगाने का एहतिमाम किया गया है ।

(3) उर्दू में लफ़ज़ के बीच में जहां ع़ साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है । म-सलन

دَعْوَت، استعمال (दा'वत, इस्ति'माल) वगैरा ।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

हुरूफ़ की पहचान

ک = ک	پ = پ	م = م	ن = ن	ا = ا
س = س	ع = ع	ط = ط	ث = ث	ت = ت
ج = ج	چ = چ	ح = ح	خ = خ	د = د
ذ = ذ	ڈ = ڈ	ذ = ذ	و = و	ز = ز
ز = ز	ح = ح	س = س	ر = ر	س = س
ش = ش	س = ص	ش = ش	س = س	ش = ش
ف = ف	غ = غ	ع = ع	ظ = ظ	ط = ط
ق = ق	ک = ک	م = م	ک = ک	ق = ق
ه = ه	و = و	ن = ن	م = م	ل = ل
ی = ی	ا = ا	ا = ا	ا = ا	ی = ی

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

इलाज के घरेलू नुस्खों पर मुश्तमिल म-दनी गुलदस्ता

घरेलू इलाज

मुअल्लिफ़

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये
दा 'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि र-ज़वी دامت برکاتہم
العالیہ

नाशिर :

मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- नाम किताब : घरेलू इलाज
 मुअल्लिफ़ : शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते
 इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
 मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जबी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ
 सिने तबाअत : रबीउल अब्वल 1437 सि.हि.
 नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अहमदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुस्ल्लिफ़ शाखें

- मुम्बई : 19,20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस
 के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
 देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद,
 देहली फ़ोन : 011-23284560
 नागपुर : मुहम्मद अली सराय रोड (C/o) जामिअतुल मदीना,
 कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपूर
 फ़ोन : 0712 -2737290
 अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के करीब, नला
 बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : (0145) 2629385
 हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के
 पास, हुब्ली - 580024. फ़ोन : 09343268414
 हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद
 फ़ोन : 040-24572786

म-दनी इल्लिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

फ़ेहरिस

उन्वान	स.	उन्वान	स.
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	7	धूप हासिल करने का तरीक़ा	25
हर बीमारी की दवा है	7	मोटापे का इलाज	26
शिफ़ा मिलने न मिलने का राज़	8	मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज	28
तिब यकीनी नहीं ज़नी है	9	सफ़र के ज़रीए इलाज	29
सुना सुनाया इलाज ख़तरनाक साबित हो सकता है	9	नींद के 5 इलाज	29
कौन सी दवा किस के लिये नुक्सान देह है	10	जिस को नींद न आती हो उस के लिये 8 इलाज	30
क्या हर मरीज़ के लिये शहद मुफ़ीद है ?	11	नींद लाने वाला मज़ेदार शरबत	32
क्या हृदीस में बताया हुआ इलाज हर एक कर सकता है ?	12	नींद लाने का सांस के ज़रीए इलाज	32
ग़ैरे तबीब को इलाज में हाथ डालना हराम है	13	नींद ज़ियादा होती हो तो....	33
माहिर तबीब की ता'रीफ़	14	नींद से जाग कर पढ़िये और मददे इलाही	
इल्मे तिब की दिलचस्प हिक़ायत	15	हासिल कीजिये	34
बीमारियों से बचने का ला ज़वाब नुस्खा	16	क्रिब्ला रुख़ बैठने से बीनाई तेज़ होती है	34
तवील अ़र्सा ज़वान रहने का नुस्खा	16	आंखों का लज़ीज़ चूरन	34
खून टेस्ट और इस की एह़तियातें	17	आंखों का मरीज़ और मछली	35
अस्पताल में दाख़िल होना पड़े तो	18	ऐनक के नम्बर कम करने के लिये	35
संगे मदीना ने जब ओपरेशन करवाया	18	ज़हरीले जानवरों के काटे के 10 इलाज	36
हवा से इलाज	19	सांप बिच्छू वग़ैरा से पनाह का आसान वज़ीफ़ा	36
धूप की अहमियत	19	सुब्द व शाम की ता'रीफ़	36
एग्ज़ोस्ट फ़ेन	20	जिल्दी अमराज़ के 16 इलाज	38
सूरज की किरनों का कमाल	21	फ़ोड़े और जख़म का रूहानी इलाज	38
शीशे से छन कर आने वाली धूप	22	खाके मदीना और खाके वतन	38
बच्चों की बीमारी	22	ख़ारिश की बेहतरीन हिक़ायत	39
घरों में धूप न आने का नुक्सान	23	उम्मे अ़त्तार की ख़ारिश कैसे ठीक हुई !	40
बच्चे में रिकेट्स की अ़लामात	23	मेंहदी से इलाज के बारे में आ'ला	
रिकेट्स के 14 दर्दनाक नुक्सानात	24	हज़रत का इर्शाद	40
ओपरेशन से बच्चे आने की एक वज़ह	24	ख़ारिश का खुश ज़ाएक़ा हल्वा	41
बच्चों को अन्डों की ज़र्दी खिलाइये	25	गुस्ल के ज़रीए ख़ारिश का इलाज	42
		सर्दी में हाथ पाउं फटने का इलाज	42
		बदन के दाग़ धब्बों का इलाज	43

उन्वान	स.	उन्वान	स.
खुश्क खारिश	43	गला बैठ गया हो तो.....	62
तर खारिश	44	मुंह के छाले के 7 इलाज	62
गरमी दानों का इलाज	45	केन्सर	63
सर में खुश्की के 3 इलाज	45	मुंह के केन्सर का एक सबब	63
दर्द का रूहानी इलाज	46	बुरे ख़्वाब के 5 म-दनी इलाज	64
दिल की बीमारियों के 7 इलाज	46	पीलिया (यरक़ान) के दो इलाज	65
दिल की घबराहट के लिये	46	बद ज़बानी का इलाज	65
दिल की बन्द शिरयानें खुलने की हिक़ायत	47	शूगर के 8 इलाज	65
दिल की शिरयानें खोलने वाला नुस्खा यह है	48	दांतों की मज़बूती का राज़। हिक़ायत	67
दर्दे सर का इलाज	48	दांतों और कानों की हिक़ायत का आसान अमल	68
आधे सर के दर्द के 6 इलाज	50	दांत कमज़ोर होने की एक वज़ह	68
दर्दे सर के 8 इलाज	51	दांतों के दर्द के दो इलाज	69
दाइमी नज़्ले के 5 इलाज	53	दांतों का खून बन्द करने के लिये पांच इलाज	69
नज़्ले का देसी इलाज	53	दांतों का पीलापन दूर करने के 3 इलाज	69
नज़्ला खोलने के लिये	54	दांतों से पीप आने के 4 इलाज	70
बवासीर और इस के बा'ज़ अस्बाब	54	दांतों के तमाम अमराज़ का इलाज	70
जैतून से बवासीर का इलाज	54	मिस्वाक के 14 म-दनी फूल	71
अन्जीर से खुश्क बवासीर का इलाज	55	दांतों की हिक़ायत के 3 म-दनी फूल	72
खूनी बवासीर के 4 इलाज	55	मुंह की बदबू के 4 इलाज	73
गुर्दे की पथरी	56	दांतों को बीमारी से बचाने का बेहतरीन नुस्खा	74
गुर्दे के दर्द के दो इलाज	56	पेशाब में जलन के 4 इलाज	74
दमा और सांस फूलना	56	पेशाब का इलाज	75
मे'दे में ज़ख़्म	57	बार बार पेशाब आने के 5 इलाज	75
जिगर या मे'दे के तमाम अमराज़ के लिये	57	पेशाब रुक रुक कर आने के 4 इलाज	76
हाई ब्लड प्रेशर	57	पेशाब में खून	77
चावल ब्लड प्रेशर में मुफ़ीद हैं	58	पेशाब में धात	77
खांसी के 18 इलाज	58	नींद में पेशाब निकल जाना, जिरयान,	
हिचकी के छ इलाज	60	एहतिलांम	77
हाथ पैर सुन हो जाने के 3 इलाज	61	औरत के बार बार पेशाब आने का इलाज	78
आवाज़ बैठ जाए तो तीन इलाज	61	अगर मर्द को शह्वत तंग करती हो तो...	78

उ़्वान	स.	उ़्वान	स.
मे'दा बीमार होने की पहचान	78	रात का खाना खाने का फ़ाएदा	98
हाज़िमा कैसे दुरुस्त हो ?	78	मसाने की पथरी का इलाज	99
“भूक न लगती हो तो” दो इलाज	79	तेज़ाबियत (सीने की जलन) के 7 इलाज	99
बद हज़्मी के दो म-दनी इलाज	80	दमा के 3 इलाज	100
गोस और बद हज़्मी का देसी इलाज	81	दमा के हम्ले के वक़्त करने के 3 इलाज	101
हाज़िमे का मन भाता इलाज	81	उंगली कट जाए तो	101
हाज़िमा दार चटनी बनाने का तरीका	82	कांटा निकालने का तरीका	101
कब्ज़ के तीन अस्बाब	82	जल जाने के 4 इलाज	101
कब्ज़ के 17 इलाज	82	थकन दूर करने के 4 इलाज	102
बेहोशी के 3 इलाज	85	बीमारियों से हिफ़ाज़त के लिये....	102
जोड़ों के दर्द के 6 इलाज	85	हैज़ की ख़राबी के नुक्सानात	103
हड्डी जोड़ने के लिये	86	हैज़ की ख़राबी और डरावने ख़्वाब	103
नक्सीर फूटने का इलाज	87	कसरते हैज़ के दो इलाज	104
नाक की हड्डी बढी हुई हो तो....	87	माहवारी की ख़राबियों के तीन इलाज	104
कान के दर्द के दो इलाज	87	हैज़ बन्द होने के 6 इलाज	104
कान में कीड़ा घुस जाए तो....	87	हैज़ के दर्द का इलाज	105
बुख़ार के इलाज की हिक्क़ायत	87	बांझपन के 5 इलाज	106
बुख़ार के 7 म-दनी इलाज	89	हामिला की तकालीफ़ के 6 इलाज	107
हड्डियों से इलाज के म-दनी फूल	91	हसीन व अक्ल मन्द औलाद के लिये	108
पेट के दर्द के 4 इलाज	92	अय्यामे हम्ल के लिये बेहतरिन अमल	108
बच्चों के पेट के दर्द के 4 इलाज	93	हम्ल में ताख़ीर	108
पेट की जलन के दो इलाज	93	अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया तो....	109
पेचिश	94	सफ़ेद पानी	109
पेट में कीड़े	94	हम्ल की हिफ़ाज़त के 7 इलाज	109
कै के फ़वाइद व नुक्सानात	94	लीकोरिया का इलाज	111
कै बन्द करने के 8 इलाज	95	इर्कुनिना के दो इलाज	111
पागल पन	96	देसी मुर्गी के फ़वाइद	112
पागल पन का इलाज	96	घरेलू झगड़ों का इलाज	112
गन्ज के चार इलाज	97	कलौजी के 19 म-दनी फूल	113
कमज़ोरी के 2 इलाज	98	अन्जीर के 33 म-दनी फूल	114

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

घरेलू इलाज

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले ।

(التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ٢ ص ٣٢٨ حديث ٢٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हर बीमारी की दवा है

अल्लाह तबा-र-क व तआला ही हकीकत में शाफ़ियुल अमराज़ या'नी बीमारियों से शिफ़ा देने वाला है । सभी जानते हैं कि बा'ज़ अवक़ात बड़े बड़े माहिरे तबीब बेहतर से बेहतरनी दवाएं देते हैं मगर “मरज़ बढ़ता गया जूं जूं दवा की” के मिस्ताक़ मरज़ में मुसल्लसल इज़ाफ़ा होता और बिल आख़िर मरीज़ दम तोड़ देता है । मुस्लिम शरीफ़ में है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सिह्हत निशान है : “हर बीमारी की दवा है, जब दवा बीमारी तक पहुंचा दी जाती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से मरीज़ अच्छा हो जाता है ।”

(مُسْلِمٌ ص ١٢١ حديث ٢٢٠٤)

فَرَمَانَهُ مُسْتَفْهِمًا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عز وجل उस पर दस रहमते भेजता है। (♣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइय्यो ! यकीनन बुढ़ापे और मौत के सिवा हर बीमारी का इलाज है। हां येह बात अलग है कि कई अमराज का इलाज **अतिब्बा** (या'नी डोक्टर्ज) अब तक दरयाफ्त नहीं कर पाए। लिहाजा येह कहने के बजाए के “फुलां मरज का इलाज नहीं है” मुनासिब येह है कि यूं कहा जाए कि हमारे पास इस बीमारी का इलाज नहीं या डोक्टर्ज अभी तक इस मरज का इलाज दरयाफ्त नहीं कर सके। बहर हाल **रब्बे जुल जलाल جَلَّ جَلَالُهُ** चाहे तो दवा शिफा का जरीआ बने वरना ऐन मुम्किन है कि वोही दवा मौत का सबब बन जाए ! और येह भी अक्सर देखा जाता है कि **माहिर डोक्टर** की तरफ से मिलने वाली दुरुस्त दवा के बा वुजूद किसी किसी मरीज को मन्फ़ी असर (REACTION) हो जाता और वोह मज़ीद शदीद बीमार, मा'जूर या फ़ौत हो जाता और फिर बा'ज लोगों की जहालत के बाइस बेचारे डोक्टर की शामत आ जाती है।

शिफा मिलने न मिलने का राज

मुफ़स्सिरे कुरआन, हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ الْمَسْنَان عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ اللهِ الْمَسْنَان عَلَيْهِ मज़कूरा हदीसे पाक के तहत मिरआत शर्हे मिश्कात जिल्द 6 सफ़हा 214 पर **साहिबे मिरकात رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के हवाले से नक्ल फ़रमाते हैं : “जब **अल्लाह عز وجل** किसी बीमार की शिफा नहीं चाहता तो दवा और मरज के दरमियान एक **फ़िरिशते** के ज़रीए आड़ कर देता है जिस की वजह से दवा मरज पर वाक़ेअ नहीं होती, जब शिफा का इरादा होता है तो वोह पर्दा हटा दिया जाता है जिस से दवा मरज पर वाक़ेअ होती है और शिफा हो जाती है।”

(مرقاة المفاتيح ج ٨ ص ٢٨٩ تحت الحديث ٤٥١)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (ترمذی)

तिब यकीनी नहीं ज़न्नी है

इस किताब में जो भी तिब्बी इलाज तच्चीज़ किये गए हैं वोह यकीनी नहीं हैं बल्कि सारे का सारा तिब ही ज़न्नी या'नी इस में ग़-लती का इम्कान रहता है, हर दवा इरादए इलाही عَزَّوَجَلَّ के ताबेअ है। अगर शिफ़ा मिल जाए तो दवा का कमाल नहीं, रब्बे मु-तअ़ाल का रहमो करम और जूदो नवाल है। अगर शिफ़ा न हो या खुदा न ख़वास्ता मज़ीद नुक़सान हो जाए तब भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहिये। अक्सर नुस्खा जात मुख़लिफ़ किताबों से और बा'ज अपने तजरिबात की रोशनी में तहरीर किये हैं। ग़-रज़ो ग़ायत ख़िदमते उम्मत और इस के ज़रीए हुसूले रिज़ाए रब्बुल इज़ज़त جَلَّ جَلَالُهُ है। उम्मत की ख़ैर ख़वाही बड़े सवाब का काम है कि خَيْرُ النَّاسِ أَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ या'नी बेहतरीन शख्स वोह है जो लोगों को फ़ाएदा पहुंचाए। (أَلْجَامِعُ الصَّغِيرُ مِنْ ٢٤٦ حَدِيثِ ٤٠٤٤) अल्लाह के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब,¹ हम गुनाहों के मरीज़ों के तबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मन्फ़अत निशान है : जो कोई तुम में से अपने भाई को नफ़अ पहुंचा सकता हो तो उसे नफ़अ पहुंचाना चाहिये। (مُسْلِمٌ مِنْ ١٢٠٧ حَدِيثِ ٢١٩٩)

सुना सुनाया इलाज ख़तरनाक साबित हो सकता है

इलाज के लिये किसी एक तबीब को मुस्तक़िलन मख़सूस कर

1 : लबीब या'नी अक्ल मन्द, दाना

فَرَمَانَهُ مُسْتَقِيمًا صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह جل وعز उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (طریق)

लेना चाहिये, वोह आप के तब्दी मिज़ाज से वाकिफ रहेगा तो इलाज जल्द हो सकेगा और मन्फ़ी अ-सरत के ख़तरात भी कम रहेंगे, वरना ख़्वाह म ख़्वाह जुदा जुदा तबीबों के पास जाएंगे तो वोह नए नए नुस्खे आजमाएंगे, इस तरह आप का पैसा और वक़्त दोनों बरबाद होते रहेंगे। इसी तरह किताबों या लोगों के बताए हुए नुस्खों के मुताबिक़ इलाज करना भी ख़तरनाक साबित हो सकता है, कि मसल मशहूर है “नीम हकीम ख़तूरए जान।” साथों साथ येह भी ख़ास ताकीद है कि इस किताब में दिया हुआ कोई भी नुस्खा अपने तबीब से मशवरा किये बिगैर इस्तिमाल न किया जाए अगर्चे येह नुस्खा उसी बीमारी के लिये हो जिस से आप दो चार हों। इस की बुन्यादी वजह येह है कि लोगों की तब्दी कैफ़िय्यात जुदा जुदा होती हैं, एक ही दवा किसी के लिये आबे ह्यात का काम दिखाती है तो किसी के लिये मौत का पयाम लाती है। लिहाज़ा आप की जिस्मानी कैफ़िय्यात से वाकिफ़ आप का मख़सूस तबीब ही बेहतर तै कर सकता है कि आप को कौन सा नुस्खा मुवाफ़िक़ हो सकता है और कौन सा नहीं। क्यूं कि किताब में इलाज के तरीके बयान करना और है जब कि किसी ख़ास मरीज़ का इलाज करना और।

कौन सी दवा किस के लिये नुक्सान देह है

मैं ने एलोपेथिक अदविय्या के शो'बे से वाबस्ता अपने मर्हूम बड़े भाईजान से सुना था कि जब पेनिसिलीन (PENICILLIN) का इन्जेक्शन नया नया ईजाद हुआ था तो लोगों को इस से काफ़ी शिफ़ाएं

فَرَمَانِے مُسْتَفْرَا صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया। (ابن سنی)

मिल रही थीं, मगर बा'ज मरीज़ इसी के मन्फ़ी असर (REACTION) के सबब फ़ौत भी हो जाते थे। शूगर के मरीज़ों के लिये शकर और मीठी चीज़ों वाले, फ़िशारुद्दम (हाई ब्लड प्रेशर) वालों के लिये नमक और चिकनाहट वाले और दिल के मरीज़ों के लिये घी तेल वाली दवाओं के नुस्खे नुक़सान देह साबित हो सकते हैं। इसी तरह बा'जों को ख़जूरों, छुहारों से मुंह में छाले पड़ जाते हैं और किसी को दूध हज़म नहीं होता।

क्या हर मरीज़ के लिये शहद मुफ़ीद है ?

शहद ही को ले लीजिये हालां कि इस में शिफ़ा है : ताहम बा'जों के वुजूद इस को बरदाशत नहीं कर पाते चुनान्चे मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 25 सफ़हा 88 पर रहूल मुहूतार के हवाले से नक़ल फ़रमाते हैं : “जिन मिज़ाजों (या'नी तबीअतों) पर सफ़ा¹ ग़ालिब होता है शहद उन्हें नुक़सान करता है बल्कि बारहा बीमार कर देता है ! बा आं-कि (या'नी बा वुजूद इस के कि) वोह (या'नी शहद) ब नस्से कुरआनी (दलीले कुरआनी से) शिफ़ा है।”

(رَدُّ الْمُحْتَرَجِ ١٠ ص ٥٠) आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह

1 : अख़्ताते अर-बआ या'नी चार ख़िल्लें (1) सफ़ा (या'नी पित) (2) खून (3) बल्यम और (4) सौदा (जला हुवा सियाह बल्यम) इन चारों में से जिन लोगों के वुजूद में सफ़ा (पित) या'नी पीले रंग का कड़वा पानी जाइद हो उस के लिये शहद का इस्ति'माल मुजिरे सिहहत है।

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (أصحّ الروايات)

इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَليهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن सफ़रा की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं : “वोह ज़र्द पानी कि पित्ते में होता है जिस को सफ़रा कहते हैं।” (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 20, स. 237) मिरआत जिल्द 6, सफ़हा 218 पर दिये हुए मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَليهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़रमान का खुलासा है : “तिब में शहद को दस्त आवर (या'नी दस्त लाने वाला) माना गया है लिहाज़ा दस्तों (या'नी डाएरिया, लूज मोशन) में शहद इस्ति'माल न किया जाए।”

क्या हदीस में बताया हुआ इलाज हर एक कर सकता है ?

अह्लादीसे मुबा-रका में बयान कर्दा इलाज भी अपनी मरज़ी से नहीं करने चाहिएं। बेशक सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के फ़रामीने वाला शान हक़, हक़ और हक़ ही हैं। मगर जो इलाज नबियों के सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तच्चीज़ फ़रमाए हैं हो सकता है वोह ख़ास ख़ास मौक़ाओं मौसिमों की मुनासि-बतों और मख़्पूस लोगों के मिज़ाजों और तबीअतों के मुवाफ़िक़ हों जैसा कि हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَليهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस हदीसे पाक فِي الْحَبَةِ السُّودَاءِ شِفَاءٌ مِنْ كُلِّ دَاءٍ إِلَّا السَّامَ (بُخَارِي ج ٤ ص ١٩ حديث ٥٦٨٧) के तहूत के सिवा हर बीमारी से शिफ़ा है” (हर मरज़ (में शिफ़ा) से मुराद हर बल्ग़मी और रतूबत के अमराज़ में (शिफ़ा है) क्यूं कि कलौंजी गर्म और खुश्क होती है लिहाज़ा मरतूब (या'नी तरी वाली) और सर्दी की बीमारियों में मुफ़ीद

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (मैराज़ान)

होगी। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : यहां मुराद अरब की आम बीमारियां हैं (مراتبات) या'नी कलौंजी अरब की आम बीमारियों में मुफ़ीद है। ख़याल रहे कि अहादीसे शरीफ़ा की दवाएं किसी हज़िक़ तबीब (या'नी माहिर तबीब) की राय से इस्ति'माल करनी चाहिए (अहले अरब को तज्वीज़ कर्दा दवाएं) सिर्फ़ (अपनी) राय से इस्ति'माल न करें कि हमारे (तब्ड़) मिज़ाज अहले अरब के (तब्ड़) मिज़ाज से जुदागाना हैं। (मिरआत, जि. 6, स. 216, 217)

गैरे तबीब को इलाज में हाथ डालना हराम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज लोग हकीकी मा'नों में बा काइदा डॉक्टर या हकीम न होने के बा वुजूद क्लीनिक या मतब खोल कर मरीजों का इलाज शुरू कर देते हैं। ऐसा करना क़ानूनन जुर्म होने के साथ साथ शरअन भी मम्मूअ है। नीज़ एक फ़न का माहिर दूसरे फ़न के तरीके इलाज के मुताबिक़ मरीजों पर तजरिबात न करे। म-सलन एलोपेथी या होमियोपेथी या बाइयोकेमी वाले डॉक्टर्ज़ बा काइदा सीखे बिगैर एक दूसरे के शो'बे की दवाओं से और यूनानी तिब (हिक्मत) के मुताबिक़ इलाज न फ़रमाएं। इसी तरह जो जो हकीम साहिबान बा काइदा डॉक्टर नहीं हैं वोह भी जड़ी बूटियों के साथ साथ डॉक्टरी दवाएं मरीजों पर न आजमाएं। मेडीकल स्टोर वाले भी अपनी अपनी समझ के मुताबिक़ मरीजों को दवाएं न दिया करें। और यूं भी बिगैर डॉक्टर की चिठ्ठी के दवा बेचना क़ानूनन जुर्म है। बा'ज

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الودائع)

लोगों की आदत होती है कि जहां किसी मरीज़ से मुलाक़ात हुई झट कोई न कोई दवा या नुस्खा इर्शाद फ़रमा देते हैं ! याद रखिये ! जो माहिर तबीब न हो उस को मरीज़ के इलाज में हाथ डालना कारे सवाब नहीं बल्कि हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। अगर कोई ऐसा ग़ैरे माहिर तबीब क्लीनिक या दवाख़ाना खोल कर मरीज़ों का इलाज करने बैठ गया हो तो फ़ौरन येह ना जाइज़ काम बन्द करना फ़र्ज़ है और तौबा के तकाज़े भी पूरे करने होंगे। हां ग़ैरे तबीब ने मतब या दवाख़ाना खोल रखा है मगर खुद इलाज नहीं करता बल्कि माहिर तबीब बिठा रखे हैं तो कोई मुज़ा-यका नहीं।

माहिर तबीब की ता'रीफ़

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 24 सफ़हा 206 पर एक सुवाल के जवाब में जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस का बा'ज़ हिस्सा आसान लफ़्ज़ों में पेश करने की कोशिश करता हूं : चुनान्चे फ़रमाते हैं : ना अह्ल या'नी जो पूरा तबीब न हो उस को इलाज में हाथ डालना हराम है और इस का तर्क फ़र्ज़। जिस ने फ़न्ने तिब के बा काइदा उसूल और तौर तरीके सीखे और काफ़ी मुद्दत किसी तबीबे हाज़िक़ या'नी माहिर तबीब के मतब (दवाख़ाना) में रह कर काम किया और तजरिबा हासिल हुवा। अक्सर मरीज़ उस के हाथ पर शिफ़ा पाते हों अगर्चे मरीज़ों का कम हिस्सा शिफ़ा पाने में नाकाम भी रहता हो। बे इल्म ना तज़िबे कार या'नी नीम हकीम जो कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

तश्खीस या'नी मरज़ की शनाख़्त और इलाज में जिस तरह की फ़ाहिश ग़-लतियां या'नी बड़ी बड़ी ख़ताएं किया करते हैं इस तरह की भूलें न करता हो वोह लाइक़ तबीब है। ऐसे माहिर तबीब से बा'ज़ अवकात तश्खीस (या'नी मरज़ की शनाख़्त) या इलाज में ग़-लती वाक़ेअ हो जाए तो उस को ना अह्ल नहीं कहा जाएगा कि ग़-लती से अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام मा'सूम हैं व बस। وَاللّٰهُ تَعَالَىٰ اَعْلَمُ ।

इल्मे तिब की दिलचस्प हिकायत

हज़रते अली बिन हुसैन बिन वाकिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد से एक नसरानी (क्रिस्चेन) डॉक्टर ने कहा : तुम्हारे दीन में “इल्मे तिब” बिल्कुल नहीं लिहाज़ा तुम्हारा दीन नाक़िस है। उन्हों ने जवाब दिया : हमारे प्यारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सारे का सारा इल्मे तिब कुरआने पाक की इस आधी आयत كَلُواْ وَاشْرَبُواْ وَلَا تُسْرِفُواْ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो और हृद से न बढ़ो। (प्यारे ८ सुरोअ अعرाफ ३१) में बयान फ़रमा दिया है। वोह डॉक्टर बोला : तुम्हारे नबी ने भी क्या कहीं इल्मे तिब का तज़्किरा किया है? फ़रमाया : तबीबों के तबीब अल्लाह के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने चन्द लफ़्ज़ों में सारा तिब जम्अ फ़रमा दिया है, इर्शाद फ़रमाया है : “मे'दा सारी बीमारियों का घर और परहेज़ सारे इलाजों का सर है, बदन के हर हिस्से को उस का हक़ दो।” यह सुन कर नसरानी (क्रिस्चेन) डॉक्टर हैरान हो कर कहने लगा : वाक़ेई तुम्हारे कुरआन और तुम्हारे रसूल ने जालीनूस (जो कि दुन्या का बहुत बड़ा तबीब गुज़रा है) के लिये तिब का कोई

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक को कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाइस है। (अभिलेख)

मस्अला छोड़ा ही नहीं, सब कुछ बयान कर दिया !

(Zad al-Misir لابن الجوزى ج 1 ص 161, स. 393, पारह : 8, तफ़सीरे नईमी,

बीमारियों से बचने का ला जवाब नुस्खा

सुन्नत के मुताबिक़ खाएं पियें और अगर नफ़स के मुता-लबे पर जो हाथ में आया वोह खाया म-सलन पिज़्जे पराठे और कबाब समोसे वगैरा देर से हज़्म होने वाली गिज़ाएं मे'दे में न ठोंसते रहें और फ़्रीज का एक दम ठन्डा पानी और ठन्डी ठन्डी कोला बोटलें पेट में न उंडेलते रहें तो إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आप का मे'दा दुरुस्त रहेगा और जब हाज़िमा सहीह होगा तो न कब्ज़ हो न पेट में गन्द जम्अ हो न बदन का बे जा वज़्न बढ़े न पेट की ख़राबियों के सबब बीमारियां जनम लें कि बकौले अतिब्बा तक़ीबन 80 फ़ीसद बीमारियां पेट की ख़राबी के बाइस पैदा होती हैं। यकीनन मे'दा बीमारियों का घर और परहेज़ दवाओं का सर है।

सो दवा की इक दवा परहेज़ है

तवील अर्से जवान रहने का नुस्खा

जो खाने पीने में एहतियात नहीं अपनाते और ख़ूब डट कर खाते हैं वोह गोया पैसे खर्च कर के बीमारियां ख़रीद फ़रमाते और उमूमन सख़्त तकालीफ़ उठाते और आख़िरे कार पछताते हैं। कम खाने की हिक़मतें तो साइन्स दान भी तस्लीम करते हैं चुनान्चे एक ख़बर मुला-हज़ा हो : “जदीद तहक़ीक़ के मुताबिक़ अमरीका में कम खाने वाले चूहे और कुत्ते तीन गुना ज़ियादा अर्सा ज़िन्दा रहे, ज़ियादा न खाने

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

से इन्सान जल्द बूढ़ा नहीं होता, बल्कि त्वील अर्से तक जवान नज़र आता है।”
(रोज़नामा आगाज़, 5 दिसम्बर 2007)

खून टेस्ट और इस की एह्तियातें

कोशिश कर के शूगर, लिपिड प्रोफाइल वगैरा हर तीन माह के बा'द टेस्ट करवाइये बल्कि कभी कभी मुकम्मल चेकअप भी करवा लेना चाहिये। मर्द, मर्द से और औरत, औरत ही से टेस्ट के लिये खून निकलवाए। जिस लेबोरेट्री में येह सहूलत न हो वहां से हरगिज़ टेस्ट मत करवाइये। इसी तरह हाथ रख कर नब्ज़ दिखाने, मरज़ की जगह पर चेक करवाने के लिये हाथ लगवाने, ब्लड प्रेशर चेक करवाने, ज़ख़म पर पट्टी बंधवाने, इन्जेक्शन लगवाने वगैरा मुआ-मलात के लिये बिना इजाज़ते शर-ई मर्द व औरत का एक दूसरे के जिस्म के किसी हिस्से को छूना छुवाना जाइज़ नहीं। अगर येह ग़-लतियां हो चुकी हैं तो सच्ची तौबा कर के आयिन्दा बचने का अहद कीजिये। मर्द डॉक्टर से मरीज़ा सिर्फ़ इसी सूरत में रुजूअ करे कि उस की बीमारी के लिये लेडी डॉक्टर न मिल सके। इन वस्वसों पर तवज्जोह मत दीजिये कि टेस्ट में “कुछ” निकला तो टेन्शन हो जाएगा। येह टेन्शन आसान है वरना अचानक अस्पताल में जा पड़े तो आप का टेन्शन भी “टेन्शन” में आ जाएगा! अस्पताल में दाख़िल हो कर डॉक्टर के खौफ़ज़दा करने पर परहेज़ करने से बेहतर है कि आदमी घर में ही परहेज़ कर ले। कि सो दवा की इक दवा परहेज़ है। टेस्ट वगैरा के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अक्वल सफ़हा 619 ता 628 का मुता-लआ कर लीजिये।

فَرَمَانِهِ مُسْتَفَاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : تُمْ جَهَاً بِهِي مُؤْجِزٍ عَلَى دُرُودِهَا قِي تُمْهَارَا دُرُودِ مُؤْجِزٍ تَك
 پھُتھا ہے ! (طبرانی)

अस्पताल में दाखिल होना पड़े तो

अगर अस्पताल में दाखिल होने की नौबत आए तो घबरा न जाइये। जेहन को हाज़िर रख कर पलंग की तरकीब इस तरह करवाइये कि क़िल्बे की तरफ़ पाउं न हों। तहारत, वुजू व नमाज़ की सहूलतें देख लीजिये, येह भी देख लीजिये कि इस्तिन्जा खाने का रुख़ तो ग़लत नहीं। (इस्तिन्जा करते वक़्त का'बा शरीफ़ को मुंह या पीठ करना ना जाइज़ है। येह एहतियात ज़रूरी है कि मुंह या पीठ 45 डिग्री के ज़ाविये के बाहर रहे) **बहारे शरीअत** (मत्बूआ मक-त-बतुल मदीना) का चौथा हिस्सा साथ ले लीजिये और उस में **मरीज़ की नमाज़** का तरीका देख लीजिये। कोरी मिट्टी की प्लेट (इस पर कांच का ज़िर्म या'नी तह न हो) या पाक साफ़ ईंट ले लीजिये ताकि ज़रूरतन तयम्मूम किया जा सके। "मरीज़" ताकीद कर दे कि औरत (नर्स या लेडी डॉक्टर) और "मरीज़ा" कह दे कि मर्द (डॉक्टर या बोर्ड बोय) मेरा बदन न छूए।

सगे मदीना ने जब ओपरेशन करवाया

21-12-2002 में मेरा मसाने का ओपरेशन हुवा था। इस ज़िम्न में की जाने वाली बा'ज़ एहतियातें तरगीबन अर्ज़ हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ओपरेशन से क़ब्ल व बा'द कोई नमाज़ क़ज़ा न हुई, डॉक्टर ने दो पहर या शाम का वक़्त देना चाहा तो मैं ने अर्ज़ की, कि इशा के बा'द ओपरेशन किया जाए ताकि कोई नमाज़ बेहोशी की वज्ह से न रह जाए चुनान्चे इशा के बा'द ओपरेशन का तै हुवा, येह भी तै कर लिया कि कोई नर्स ओपरेशन में हिस्सा नहीं लेगी। चूंकि बे पर्दगी होनी थी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुद्दर से उठे। (شعب الایمان)

लिहाज़ा येह भी दर-ख़्वास्त कर दी कि ओपरेशन के लिये ज़रूरी अमले के इलावा कोई मर्द भी बिला ज़रूरत क़रीब न हो। अल्ट्रा साउन्ड और चेकअप के वक़्त भी येही एहतियातें करने की कोशिश की, कि ग़ैर ज़रूरी फ़र्द के सामने सित्र खुलने न पाए। ज़ाइद मुअविनीन को बाहर भिजवाने की दर-ख़्वास्त कर दिया करता था।

हवा से इलाज

खुली फ़ज़ा में (बेहतर फ़ज़्र का वक़्त) आहिस्ता से सांस लेना शुरूअ कीजिये और जितना गहरा ले सकते ले लीजिये फिर जितनी देर तक अन्दर रोक सकते हैं रोक रखिये। रोज़ाना कम अज़ कम 40 बार इस तरह कीजिये। (कामकाज करते हुए या मरीज़ बिस्तर पर लैटे लैटे भी येह अमल कर सकते हैं) येह अमल मुख़्तलिफ़ अमराज़ बिल खुसूस ज़ीकुन्नफ़स (या'नी दमा) और फेफ़ड़ों की बीमारियों के लिये मुफ़ीद है, मरीज़ अगर सांस की येह वर्ज़िश करे तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** रू ब सिह्हत हो और सिह्हत मन्द करे तो अमराज़ से हिफ़ज़त हो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**। **सगे मदीना** **عَفَى عَنْهُ** (राकिमुल हुरूफ़) को एक बूढ़े हकीम साहिब ने बताया था कि वोह सांस लेने के बा'द एक या दो घन्टे तक अन्दर ही रोक लेते हैं और इस दौरान अवरादो वज़ाइफ़ वग़ैरा भी पढ़ लेते हैं मगर **أَلْحَسْبُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** सांस नहीं टूटता ! (येह सब मशक़ करने से आ सकता है)

धूप की अहम्मियत

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की एक बहुत बड़ी ने'मत सूरज भी है और इस की धूप में बहुत सारे फ़वाइद रखे गए हैं। जिस्मे इन्सानी की सिह्हत

فَرَمَانَهُ مُسْتَفْهِمًا عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (جمع الحوائج)

के लिये धूप का अहम किरदार है। एक कहावत है : “जिस घर में सूरज दाखिल नहीं होता उस में डॉक्टर दाखिल होता है।” बे शुमार जरासीम ऐसे होते हैं जो धूप और ताज़ा हवा से मर जाते हैं। चुनान्चे जिन घरों की खिड़कियां महज़ गर्दो गुबार के खौफ़ से हर वक़्त बन्द रखी जाती हैं, और उन में धूप और ताज़ा हवा नहीं पहुंच पाती, वहां तरह तरह के जरासीम परवरिश पाते और ख़ूब बीमारियां फैलाते हैं, लिहाज़ा रोज़ाना दिन का अक्सर वक़्त खिड़कियां खुली रखनी चाहिएं। हर कमरे में आमने सामने दो खिड़कियां इस तरह बनवाई जाएं कि एक से ताज़ा हवा दाखिल हो और दूसरी से बाहर निकलती रहे। सिर्फ़ एक खिड़की खुली रखना काफ़ी नहीं होता, अगर आमने सामने दो खिड़कियां न हो तो फिर खिड़की और दरवाज़े की ऐसी तरकीब हो कि एक तरफ़ से हवा दाखिल हो और दूसरी तरफ़ से ख़ारिज।

एग्ज़ोस्ट फ़ेन

बैतुल ख़ला और बावर्ची ख़ाना बल्कि ज़रूरतन कमरे में भी “एग्ज़ोस्ट फ़ेन” लगवाया जाए मगर प्लास्टिक का सिर्फ़ चार इन्च वाला मुन्ना सा नहीं बल्कि मुनासिब साइज़ वाला लोहे का हो, म-सलन घरेलू बावर्ची ख़ाने में 12 इन्च का लोहे का एग्ज़ोस्ट फ़ेन मुनासिब है, प्लास्टिक वाला देर पा नहीं होता और हवा भी निस्बतन कम उठाता है। एग्ज़ोस्ट फ़ेन वाली पूरी दीवार में बल्कि चारों तरफ़ कहीं एक मा'मूली सी दराड़ भी खुली न हो, अगर सिर्फ़ दरवाज़े से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عُزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अिन सूर)

हवा खिंचने की तरकीब रही तो कमरे की हवा भी साफ़ होती रहेगी, ऐसी सूरत में ज़रूरतन दरवाज़ा पूरा या थोड़ा सा खुला रखना होगा ताकि कमरे वगैरा की हवा बाहर निकले और दरवाज़े से ताज़ा हवा दाख़िल हो सके वरना एग्ज़ोस्ट फ़ेन ही सुस्त चलेगा ! कमरा बड़ा हो तो 18 इन्च और हस्बे ज़रूरत 24 इन्च का एग्ज़ोस्ट फ़ेन भी लगवाया जा सकता है । अगर बड़ा हॉल हो तो येह सूरत भी हो सकती है कि आमने सामने दो बड़े बड़े एग्ज़ोस्ट फ़ेन लगवाए जाएं एक हवा के रुख़ म-सलन पाकिस्तान में मग़रिब (WEST) या'नी किब्ले की जानिब वाली दीवार में इस तरह भी लगाया जा सकता है कि बाहर की हवा अन्दर लाए और सामने वाला अन्दर की हवा बाहर ख़ारिज करे । इन्दज़ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) दो से जाइद एग्ज़ोस्ट फ़ेन भी लगाए जा सकते हैं । जब येह फ़ेन चल रहे हों उस वक़्त अगर चारों तरफ़ खिड़कियां वगैरा बन्द रखी जाएं तो इस सूरत में اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ हबस (या'नी घुटन) भी नहीं होगा और बड़े कमरे या हॉल की फ़ज़ा साफ़ हवा की फ़राहमी के सबब ठन्ठी रहेगी । अगर एग्ज़ोस्ट फ़ेन की गोलाई के अतराफ़ में जगह खुली रही या दराड़ और खिड़कियां बन्द न की गईं तो एग्ज़ोस्ट फ़ेन चलने की सूरत में ख़ातिर ख़्वाह नतीजा हासिल नहीं होगा ।

सूरज की किरनों का कमाल

इन्सान की जिस्म की खाल में विटामिन D (सोई हुई हालत) या'नी Inactive form में होता है । उस का नाम 7 डी हाइड्रो कोलेस्ट्रॉल

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

(7-DEHYDRO.CHOLESTROL) है। जब सूरज की अल्ट्रा वॉइलेट शुआएं **ULTRA VOILET RAYS** इन्सानी जिस्म पर पड़ती हैं तो खाल में सोया हुआ **विटामिन D** बेदार हो कर मु-तहर्रिक होता और **विटामिन डी3 (VITAMIN D3)** में तब्दील हो कर खून में शामिल हो जाता है। वहां से येह जिगर में जाता है जहां इस को मज़ीद कारआमद बनाया जाता है फिर येह गुर्दों में पहुंच कर मुकम्मल तौर पर सरगर्मे अमल हो जाता है। अब येह **विटामिन डी3** आंतों से केल्सियम और फ़ोस्फ़ोरस (PHOSPHORUS) को खून के अन्दर ज़ब्ब करने में मदद देता बल्कि इस अमल को तेज़ तर कर देता है। और इन की जो मिक्दार हमारी ख़ूराक में शामिल हो कर हमारी आंतों में पहुंच रही है उस को जाएअ नहीं होने देता बल्कि तेज़ी से उसे खून में ज़ब्ब कर लेता है। केल्सियम और फ़ोस्फ़ोरस हमारी हड्डियों की सहीह नशवो नमा के लिये बेहद ज़रूरी हैं।

शीशे से छन कर आने वाली धूप

सूरज की वोह शुआएं जो बन्द खिड़कियों के शीशे से पार हो कर इन्सानी जिस्म तक पहुंचती हैं उन में अल्ट्रा वॉइलेट शुआएं नहीं होतीं लिहाज़ा उन में येह ख़ासिय्यत भी नहीं होती कि सोए हुए **विटामिन डी3** को बेदार कर के कारआमद बना सकें।

बच्चों की बीमारी

जिस तरह उमूमन पौदों की नशवो नमा के लिये धूप का अहम किरदार है इसी तरह बच्चा हो या जवान, उधेड़ उम्र का हो या बूढ़ा हर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश को दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

ब-दने इन्सानी के लिये ताज़ा हवा और धूप मुफ़ीद है। 6 माह से 2 साल की उम्र के दरमियान बच्चों की हड्डियां तेज़ी से बढ़ती हैं। अगर हड्डियों की सहीह नश्वो नमा न हो तो उन में “रिकेट्स” नामी बीमारी पैदा होती है। हड्डियों की सहीह नश्वो नमा के लिये विटामिन डी3 बहुत ज़रूरी होता है अगर इस में कमी वाक़ेअ हो जाए तो हड्डियों में मुख़्तलिफ़ नक़ाइस (ख़ामियां) रह जाते हैं जो आगे चल कर परेशानी का बाइस बनते हैं।

घरों में धूप न आने का नुक़सान

आज कल “रिकेट्स” नामी बीमारी बच्चों में आम होती जा रही है, इस की वुजूहात में से ख़ूराक में विटामिन डी3 (VITAMIN D3) की कमी भी शामिल है, मगर सब से बड़ी वजह तंग महल्लों और छोटी छोटी गलियों के अन्दर बड़ी बड़ी इमारतों के बन्द घरों में रिहाइश है। क्यूं कि ऐसी जगहों पर सूरज की अल्ट्रा वोइलेट शुआएं ULTRA VOILET RAYS सहीह तौर पर इन्सानी जिस्म तक नहीं पहुंच पातीं और नतीजतन बच्चा RICKETS (रिकेट्स) का शिकार हो सकता है, अगर ऐसा हुवा तो उस की हड्डियों में एक या एक से ज़ियादा मुख़्तलिफ़ नौइय्यत के नक़स (ऐब) पैदा हो जाएंगे।

बच्चे में रिकेट्स की अलामात

﴿1﴾ बार बार नुमूनिया हो जाना ﴿2﴾ आए दिन दस्त लग जाना ﴿3﴾ चिड़चिड़ा पन और ﴿4﴾ खून की कमी।

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े कियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा । (ابن بشكوال)

रिकेट्स के 14 दर्दनाक नुक्सानात

«1» सामने से पेशानी की हड्डी बढ़ जाती है «2» सर की हड्डी अन्दर से खोखली हो जाती है कि अगर हाथ से दबाएं तो गेंद की तरह दबती है «3» सर बड़ा और चौकोर सा हो जाता है «4» दांत देर से निकलते हैं «5» मसूड़े ख़राब हो जाते हैं «6» पस्लियों और सीने की हड्डी के जोड़ गोल गोल उभर कर नुमायां हो जाते हैं «7» कबूतर के सीने की तरह सामने से सीना उभर जाता है «8» कुब निकल आता या'नी पीठ टेढ़ी हो जाती है «9» रीढ़ की हड्डी बल खाती हुई निकलती है जिस से पूरा बदन टेढ़ा हो जाता है «10» सीने की हड्डी बीच में से मुड़ कर सीने को सामने की तरफ़ उभार देती है «11» कलाई की हड्डी चौड़ी हो जाती है «12» टख़्नों की हड्डी अन्दर की तरफ़ मुड़ जाती है «13» टांग की बड़ी हड्डी गोलाई में मुड़ जाती है «14» घुटने अन्दर की तरफ़ बढ़ने लगते हैं ।

ओपरेशन से बच्चे आने की एक वजह

कूल्हे की हड्डी उमूमन फैली हुई और चौड़ी होती है । मर्दों के मुक़ाबले में औरतों में कुदरती तौर पर येह चीज़ ज़ियादा होती है ताकि आगे चल कर बच्चे की विलादत में सहूलत हो । **विटामिन D3** की कमी की वजह से कूल्हे की हड्डी की सहीह नश्वो नमा नहीं होती और येह बजाए फैलने के सुकड़ जाती है जिस से पैदाइश का रास्ता तंग हो जाता है और ख़वातीन को बच्चों की विलादत के वक़्त तरह तरह की

فَرَمَانِهِ مُسْتَفَا حَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيَّوَالِآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोजे क़ियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढे होंगे । (ترمذی)

परेशानियों का सामना होता है और आखिरे कार ओपरेशन करना पड़ता है । आज कल बच्चे की विलादत के वक्त जो ब कसरत ओपरेशन हो रहे हैं उन की एक बड़ी वजह इन के कूलहे की हड्डी का सुकड़ा हुवा होना है ।

बच्चों को अन्डों की ज़र्दी खिलाइये

बच्चों को आयिन्दा की मुसीबतों से बचाने के लिये ज़रूरी है कि एक या दो माह की उम्र ही से मुनासिब धूप मुहय्या की जाए नीज 4 माह की उम्र से गिज़ा में अन्डे की ज़र्दी भी इस्ति'माल करवाई जाए ।

धूप हासिल करने का तरीका

तुलूए आफ़ताब के फ़ौरन बा'द और गुरूबे आफ़ताब के आखिरी लम्हात में कम अज़ कम बारह बारह मिनट के लिये (मौसिम के लिहाज़ से वक्त में कमी बेशी कर के) बच्चे को ऐसी जगह लिटाइये या बिठाइये जहां मुकम्मल धूप आती हो, हर उम्र में धूप खाना ज़रूरी है लिहाज़ा इन्हीं अवकात में हर एक को इतनी देर तक मुकम्मल धूप में रहना चाहिये कि खाल गर्म हो जाए । बयान कर्दा अवकात बेहतरीन हैं, अगर न बन पड़े तो दिन भर में किसी भी वक्त में कुछ न कुछ धूप हासिल कर लेनी चाहिये । अगर छाउं में हों और धूप आनी शुरूअ हो जाए तो कुछ धूप और कुछ छाउं में मत बैठिये बल्कि वहां से हट जाइये या मुकम्मल धूप में आ जाइये या मुकम्मल छाउं में । हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीनए मुनव्वरह,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतेँ भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियाँ लिखता है। (ترمذی)

सरदारे मक्काए मुकर्मा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने शफ़क़त निशान है : तुम में अगर कोई साए में बैठा हो और उस पर से साया हट जाए उस का कुछ हिस्सा धूप में और कुछ साए में हो जाए तो उस को चाहिये कि वहां से उठ खड़ा हो।

(ابوداؤد ج ٤ ص ٣٣٨ حديث ٤٨٢١)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ फ़रमाते हैं : या तो साए में ही चला जावे या बिल्कुल धूप में हो जावे क्यूं कि साया ठन्डा है और धूप गर्म और ब-यक वक़्त एक जिस्म पर ठन्डक व गरमी लेना सिहहूत के लिये मुज़िर (नुक़सान देह) है इस लिये ऐसा न करे नीज़ येह शैतानी निशस्त है जिस से शैतान खुश होता है लिहाज़ा इस तश्बीह से बचना ज़रूरी है।

(मिरआत, जि. 6, स. 387)

मोटापे का इलाज

वज़न कम करने के लिये सब्ज़ियाँ (आलू, वगैरा बादी अश्या के इलावा) बेहतरीन ने'मत हैं। मगर सिर्फ़ पानी में उबली हुई हों या एक फ़र्द के लिये सिर्फ़ चाय की एक चम्मच कोर्न ओइल डाल कर पकाई गई हों। मिर्च मसा-लहा और हल्दी डालने में हरज नहीं। रोज़ाना एक ग्राम (या'नी चुटकी भर) हल्दी सभी के पेट में जानी चाहिये إِنَّ شَاءَ اللهُ تَعَالَى। केन्सर से हिफ़ाज़त होगी। हर बार के खाने में मज़क़ूरा तरीके पर बनी हुई सब्ज़ी की कम अज़ कम एक पूरी रिकाबी खा लीजिये। अगर रोटी और चावल वगैरा खाना ज़रूरी हो तो सिर्फ़ आधी चपाती, पानी में उबले हुए चावल सिर्फ़ आधा कप, छोटी सी

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

एक बोटी, आम खाना ज़रूरी हो तो दिन भर में सिर्फ़ आधा आम, चाय पीना चाहें तो “स्कीमड मिलक” की फीकी ही पी लीजिये अगर बिगैर मिठास के न पी सकें तो डॉक्टर के मश्वरे से मिठास के लिये चाय के कप में **Sweetener** की एक गोली डाल लीजिये। (कहा जाता है कि बा’ज **Sweetener** मुजिरे सिहहत होती हैं) अगर शूगर का मरज़ न हो तो मुम्किना सूरत में चीनी की जगह चाय में शहद या गुड़ डाल लीजिये। (दिन रात में सिर्फ़ दो बार दरमियाना कप वोह भी आधा आधा पियें) सलाद, ककड़ी, खीरा वगैरा (बिगैर छिलका उतारे) भी ब कसरत इस्ति’माल कीजिये। हर तरह के खाने और सालन वगैरा में कोर्न ओइल **CORN OIL** वोह भी कम से कम मिक्दार में इस्ति’माल कीजिये। खाने से क़ब्ल सालन के पियाले के ऊपर से चम्मच के ज़रीए घी या तेल इस तरह से निकाल दीजिये कि एक क़तरा भी नज़र न आए। अगर मसा-लहा गाढ़ा हो तो बरतन को किसी चीज़ की मदद से तिरछा खड़ा कर दीजिये और सालन ऊपरी हिस्से की जानिब कर लीजिये इस तरह ज़ाइद तेल नीचे की तरफ़ इकट्ठा हो जाएगा। उस को निकाल दीजिये। मगर बे इजाज़ते शर-ई येह तेल या घी फेंक देना मम्नू है। दोबारा पकाने में इस्ति’माल फ़रमा लीजिये। चावल, ऊंट, गाय और बकरे के गोशत, घी, मखखन, दूध की मलाई, अन्डे की ज़र्दी, केक पेस्ट्रियों, मीठे कोको चॉकलेट और टोफ़ियों निम्को वालों की तली हुई चीज़ों, **CREAM** लगी हुई या मीठी गिज़ाओं, मिठाइयों, आइसक्रीम, ठन्डे मशरूबात, पकोड़े, कबाब, समोसे, पिज़्जे पराठे वगैरा हर वोह

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक कीरात अज़्र लिखता है और कीरात उहूद पहाड़ जितना है। (मैदान)

चीज़ जिस में मेदा, चिक्नाहट या मिठास शामिल हो उन से बचिये।
 اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ वज़न में कमी आएगी। और आप اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ खुश
 अन्दाम (SMART) हो जाएंगे। डॉक्टरों के पास खाने का “चार्ट”
 मिलता है उन के ज़रीए भी वज़न का तनासुब बर करार रखा जा सकता
 है। अपने डॉक्टर से मशवरा कर के वज़न कम करना ज़ियादा मुनासिब
 है। हत्तल इम्कान एक ही डॉक्टर से इलाज का सिल्लिसला रखना चाहिये।
 इस से फ़ाएदा येह होगा कि वोह डॉक्टर आप की जिस्मानी कैफ़ियत
 से वाक़िफ़ हो जाएगा लिहाज़ा इलाज बेहतर तरीक़े पर हो सकेगा।
 वरना डॉक्टर बदलते रहेंगे तो हर नया डॉक्टर “एक इकाई” से इलाज
 शुरूअ करेगा और आप हर एक का तख़्तए मशक़ बनते रहेंगे।

मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज

सब से बेहतरीन इलाज अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हबीब, हबीबे
 लबीब, तबीबों के तबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का तज्वीज़ फ़रमूदा
 है और वोह येह कि “भूक के तीन हिस्से कर लिये जाएं एक हिस्सा
 ग़िज़ा, एक हिस्सा पानी और एक हिस्सा हवा और सांस।”
 (مَجْمَعُ الرُّوَايَةِ ج ٥ ص ٥٩ احديث ٨٣٤٦) अगर खाने में येह तरीक़ा अपना लिया
 जाए तो اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ न कभी बदन मोटा होगा न कभी गेस, बादी, पेट
 में गड़बड़, कब्ज़ वगैरा का अ़रिज़ा। मगर हाए! लज़ज़त ख़ोर नफ़्स की
 हीला बाज़ियां :

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरुद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

सफ़र के ज़रीए इलाज

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल इयूब सَافِرُونَ تَصِحُّوا : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सिह्हत निशान है : सफ़र करो, तन्दुरुस्त हो जाओगे। (مسند امام احمد ج 3 ص 322 حديث 8904) सफ़र के ज़रीए आबो हवा तब्दील होती है और तजरिबात बढ़ते हैं। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में सवाब की नियत से सफ़र करते रहा कीजिये, إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ सवाब भी मिलेगा और जिम्नन सिह्हत में भी ब-र-कत हासिल होगी अगर फ़क़त हुसूले सिह्हत की नियत की तो सवाबे आख़िरत नहीं मिलेगा। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वालों की बीमारियों से सिह्हत याबियों की म-दनी बहारें सुनने को मिलती रहती हैं। मक़ूला है

سفر وسيلة ظفر (या'नी सफ़र काम्याबी का ज़रीआ है)

“अजमेर” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से नींद के 5 इलाज

﴿1﴾ नींद से ज़ेहन पुर सुकून, मे'दा दुरुस्त और खाना हज़्म होता है
 ﴿2﴾ रात का सोना सिह्हत के लिये मुफ़ीद और रात भर जागना मुज़िर है। रात जागते रहने से बदन में खुशकी, बद हज़्मी, दिमाग़ की कमज़ोरी और अक्ल में कमी आती और बा'ज़ अवक़ात आदमी पागल हो जाता है
 ﴿3﴾ बेशक बा'ज़ رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى का रात भर इबादत करना साबित है। लेकिन उन्हें रूहानी कुव्वत हासिल हो जाती है, जैसा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोजे कियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاحیاء)

कि सरकारे गौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से 40 दिन तक के फ़ाके भी मन्कूल हैं। (बहजतुल असरार, स. 118) हालां कि आम आदमी के लिये येह ना मुम्किन है ﴿4﴾ बू अली सीना का कौल है : दिन को ज़ियादा सोना सोए हुए अमराज़ को जगाता, तिल्ली को सख़्त करता, और रंग को ख़राब करता है ﴿5﴾ रात इबादत करने वालों के लिये दो पहर के खाने के बा'द क़ैलूला या'नी कुछ देर आराम करना सुन्नत और मुफ़ीदे सिह्हत है। इस से दिमाग़ क़वी और अक़ल तेज़ होती है।

“आठ जव्वतें” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से जिस को नींद न आती हो उस के लिये 8 इलाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नींद आवर गोलियों से हत्तल इम्कान दूर रहिये और इस की आदत तो हरगिज़ मत बनाइये क्यूं कि शुरूअ में अगर्चे इन से नींद आ जाती है मगर फिर रफ़ता रफ़ता इन गोलियों की मिक्दार बढ़ानी पड़ती है और बिल आख़िर नौबत यहां तक पहुंचती है कि चाहे कितनी ही गोलियां खा ली जाएं नींद नहीं आती ! और येह गोलियां मुजिरे सिह्हत भी होती हैं लिहाज़ा नीचे दिये हुए इलाज फ़रमाइये। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ करम फ़रमाएगा।

नींद न आती हो तो सोने से क़ब्ल اِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿57﴾ (प 22/अहزاب 56) पढ़ कर दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ नींद आ जाएगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक को कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा़रत है । (बुख़ारी)

﴿1﴾ रात को सोने से पहले यह दुआ पढ़िये : **اللَّهُمَّ بِأَسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا :**

तरजमा : या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** मैं तेरे नाम से मरता और जीता हूँ ।

﴿2﴾ नींद न आती हो तो पारह 30

सू-रतुन्नबा की आयत नम्बर 9 **وَجَعَلْنَاكُمْ سُبَاتًا** (तर-ज-मए कन्ज़ुल

ईमान : और तुम्हारी नींद को आराम किया) बार बार पढ़े **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**

जल्दी नींद आ जाएगी ﴿3﴾ नींद न आती हो तो सोने से क़व्ल अव्वल

आख़िर दुरूदे पाक के साथ कम अज़ कम तीन बार यह पढ़िये :

“**يَا نِي كَوَيْدِي مَا بُوَد نَهِي مَغَر وَهِي (अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ सब से सच्चा और ज़ाहिर”

﴿4﴾ नींद न आती हो तो सोते वक़्त यह दुआ पढ़िये :

اللَّهُمَّ غَارَتِ النُّجُومُ وَهَدَاتِ الْعُيُونُ وَأَنْتَ حَيُّ قَيُّوْمٌ لَا تَأْخُذُكَ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ أَهْدِنِي لَيْلِي وَأَنْمِ عَيْنِي - (عمل اليوم والليلة لابن السنّي ص 222 رقم 749)

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) तरजमा : “**या अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ तारे छुप गए और आंखें सोने लगीं और तू हमेशा ज़िन्दा और दूसरों को

काइम रखने वाला है तुझ को न ऊंघ आए न नींद ऐ हमेशा ज़िन्दा और

दूसरों को काइम करने वाले ! मेरी रात को सुकून बख़्शा और मेरी आंखों को

नींद अता फ़रमा ।” **إِنْ شَاءَ اللهُ** इस की ब-र-कत से नींद आ जाएगी

﴿5﴾ बे ख़्वाबी (या'नी नींद न आना) बहुत पुराना मरज़ है ज़मानए

क़दीम में इस का इलाज आ़म तौर पर **प्याज़** से किया जाता था । जिस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله و سلم : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा । (क़ुरआन)

को नींद न आती हो वोह या तो कच्ची प्याज़ चबा कर खा ले या उबली हुई प्याज़ गर्म दूध में डाल कर इस्ति'माल करे **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** ख़ूब नींद आएगी (मुंह में बदबू होने की सूरत में मस्जिद का दाख़िला ह़राम है लिहाज़ा नमाज़े फ़ज़्र के लिये जाने से क़ब्ल ख़ूब अच्छी तरह मुंह साफ़ करे यहां तक कि बदबू ख़त्म हो जाए)

नींद लाने वाला मजेदार शरबत

﴿6﴾ आध किलो पानी में छ माशा (या'नी तक़रीबन 6 ग्राम) सौंफ़ डाल कर पानी को चूल्हे पर जोश दीजिये जब दो छटांक (या'नी तक़रीबन 125 ग्राम) पानी रह जाए तो उस में गाय का दूध 250 ग्राम और एक तोला (या'नी तक़रीबन 12 ग्राम) गाय का घी और ह़स्बे ज़रूरत चीनी मिला कर इस्ति'माल कीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** नींद आने लगेगी ﴿7﴾ एक दरमियाना प्याज़ काट कर दही (मुनासिब मिक्दार) में मिला कर सोने से पहले खा लें । **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** नींद आ जाएगी ।

नींद लाने का सांस के ज़रीए इलाज

﴿8﴾ चटाई, बिछोने या पलंग पर चित लैट जाइये, दोनों हाथ सीधे कर के पहलूओं के बराबर कर लीजिये, अब 6 सेकन्ड तक आहिस्ता आहिस्ता गहरा सांस लीजिये, तीन सेकन्ड तक हवा को अन्दर रोक लीजिये और फिर 6 सेकन्ड में आहिस्ता आहिस्ता मुंह से ख़ारिज कीजिये, इस के बा'द उल्टी करवट लैट कर चन्द बार येह अमल दोहराइये **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** नींद आ जाएगी ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो
और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (माम)

नींद ज़ियादा होती हो तो.....

﴿1﴾ إِنَّ رَبَّكُمْ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ
أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُعْشَىٰ اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا
وَالشَّمْسِ وَالْقَمَرِ وَالنُّجُومِ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ
وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٦﴾ اُدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۗ
إِنَّهُ لَا يَحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٧﴾ وَلَا تَقْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ
إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۗ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾

(पारह 8 سورة الاعراف آیت 54-56)

पढ़ कर येह दुआ मांगिये, या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मिठे मुस्तफ़ा
صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वासिता मेरी गैर ज़रूरी नींद दूर फ़रमा दे ।
إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हासिल होगा । (अव्वल आखिर एक बार दुरूद
शरीफ़) ﴿2﴾ रोज़ाना सुबह नहार मुंह नीम गर्म पानी के गिलास में एक
चम्मच शहद घोल कर उस में आधा लीमूँ निचोड़ कर पी लीजिये ।
येह लज़ीज़ शरबत पीने की मुस्तक़िल आदत बनाएं तब भी हरज
नहीं बल्कि इِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा । जब दौराने मुता-लआ वगैरा
नींद चढ़े तो हो सके तो वुजू कर लीजिये वरना मुंह धो लीजिये, कोई
चीज़ चबाइये, कुछ देर चहल कदमी कर लीजिए या कुछ देर खड़े हो
जाइये इस तरह की तराकीब से इِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ वक़्ती तौर पर काम चल
जाएगा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमते भेजता है। (१८)

नींद से जाग कर पढ़िये और मददे इलाही हासिल कीजिये

20 बार जो नींद से बेदार हो कर पढ़ लिया करेगा उस के हर काम में मददे इलाही عَزَّوَجَلَّ शामिल रहेगी।

क़िब्ला रुख़ बैठने से बीनाई तेज़ होती है

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं :

चार चीज़ें आंखों की (बीनाई की) तक्वियत का बाइस हैं : (1) क़िब्ला रुख़ बैठना (2) सोते वक़्त सुरमा लगाना (3) सब्ज़े की तरफ़ नज़र करना और (4) लिबास को पाक व साफ़ रखना। (احیة العُلُوم ج ۲ ص ۲۷)। सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي के इर्शाद के मुताबिक़ सब्ज़े का नज़र भी निगाहों की तेज़ी का बाइस है। सब्ज़ रंग की तो क्या ही बात है! एक रिवायत के मुताबिक़ सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद वाले आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को तमाम रंगों में सब्ज़ रंग सब से प्यारा था। (الْتَعَجُّمُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِي ج ۶ ص ۶۹ حدیث ۲۷-۸۰)।

आंखों का लज़ीज़ चूरन

सोंफ़, मिस्सी और ईरानी बादाम तीनों हम-वज़न ले कर

अच्छी तरह बारीक पीस कर यकजान (MIX) कर के बड़े मुंह की बोतल में महफूज़ कर लीजिये और बिला नागा रोज़ाना नहार मुंह एक चाय की चम्मच बिगैर पानी के खा लीजिये (एक चम्मच से कुछ ज़ियादा खाने में भी हरज नहीं) तवील अर्सा इस्ति'माल करने से

ان شاء الله عَزَّوَجَلَّ आंखों की बीनाई को फ़ाएदा होगा। तजरिबा : एक म-दनी मुन्नी की आंखों में पानी आता था, बिल आखिर आंखों के

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

डॉक्टर से वक़्त ले लिया था, मैं ने येही लज़ीज़ चूरन पेश किया, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** एकआध बार खाने ही से उस की बीमारी जाती रही और डॉक्टर के पास जाने की नौबत ही न आई। जिन को तकलीफ़ न हो वोह भी मुस्तक़िल इस्ति'माल कर सकते हैं।

आंखों का मरीज़ और मछली

आंखों के मरीजों, ज़रूरी मिक्दार से जाइद कोलेस्ट्रॉल वालों के लिये भी **मछली** खाना मुफ़ीद है। मगर तेल में तली हुई दीगर गिज़ाओं की तरह मछली भी मुज़िरेँ सिह्हत है। कोएले पर सेंकी हुई मछली बहुत मुफ़ीद है कहते हैं कि मे'दे में ऐसी मछली की मौजू-दगी में अगर ब्लड कोलेस्ट्रॉल का मरीज़ खून टेस्ट करवाएगा तो खून में कोलेस्ट्रॉल की मिक्दार में कमी ज़ाहिर होगी।

ऐनक के नम्बर कम करने के लिये

गाजर के मौसिम में रोज़ाना एक गाजर खा लिया करें **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** हाफ़िज़ा क़वी और बीनाई तेज़ होगी हत्ता कि चश्मा है तो **اِنْ شَاءَ اللهُ** नम्बर कम होना शुरूअ हो जाएंगे। (गाजर धो लीजिये और छिले बिगैर खा लीजिये कि छिलने से ऊपरी तह के ऐन नीचे मौजूद विटामिन C जाएअ हो सकता है, वोह सब्जियां और फल जिन के छिलके खाए जा सकते हों वोह छिलकों समेत ही खाने ज़ियादा मुफ़ीद हैं। म-सलन कहू शरीफ़, आलू, टमाटर, खीरा, तूरी, टिन्डे, पेठा, शकर कन्दी, सेब, चीकू, आडू, वगैरा के छिलके और अनार व मोसम्बी की अन्दरूनी झल्लियां वगैरा खा लीजिये)

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

“या इमाम हुसैन” के दस हुस्नफ़ की निश्चत से जहरीले जानवरों के काटे के 10 इलाज सांप बिच्छू वगैरा से पनाह का आसान वज़ीफ़ा

﴿1﴾ बारगाहे रिसालत में एक शख़्स ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कल शाम मुझे एक बिच्छू ने डंक मार दिया। फ़रमाया : काश ! अगर तुम ने शाम को - عَزَّوَجَلَّ اَللّٰهُ تَعَالٰی كَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ - (या'नी मैं अल्लाह के कामिल कलिमात के साथ मख़लूक के शर से पनाह लेता हूँ) कह लिया होता तो तुम्हें कोई चीज़ तकलीफ़ न पहुंचाती। (مسلم من ۱۴۰۳ حدیث ۲۷۰۹) “श-ज-रए कादिरिय्या र-ज़विय्या अत्तारिय्या” सफ़हा 11 पर है : रोज़ाना सुब्ह व शाम तीन तीन बार मज़क़ूरा दुआ पढ़ लेने से सांप बिच्छू वगैरा मूज़िय्यात (या'नी ईज़ा देने वाले जानवरों) से पनाह मिलती है।

सुब्ह व शाम की तारीफ़ : आधी रात के बाद से ले कर सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह है और इब्तिदाए वक़ते ज़ोहर से गुरुबे आफ़ताब तक शाम कहलाती है। (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 12)

﴿2﴾ सांप, बिच्छू, शहद की मख़बी या कोई सा भी ज़हरीला जानवर काट ले, पानी में नमक मिला कर डंक की जगह पर लगाइये बल्कि मुम्किन हो तो वोह जगह उस नमक वाले पानी में डबो दीजिये और मुअव्व-ज़तैन या'नी सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास पढ़ कर दम कीजिये। اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ज़हर का असर ज़ाइल हो जाएगा।

﴿3﴾ अगर शहद की मख़बी वगैरा काट ले तो फ़ौरन उस जगह अपना

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया। (रिन)

या किसी मुसल्मान का थूक लगा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** राहत मिलेगी।

﴿4﴾ अगर आप ऐसी जगह रहते हैं जहां शहद की मखिखियां या बिच्छू होते हैं तो प्याज़ का रस 3 तोला (तक़ीबन 35 ग्राम), अनबुझा चूना 4 ग्राम, नौशादर एक तोला (तक़ीबन 12 ग्राम) बाहम मिला कर निथार लीजिये। और महफूज़ कर लीजिये और ब वक्ते ज़रूरत **बिच्छू** और **शहद की मखिखी** के काटने के मक़ाम पर लगाइये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** फ़ाएदा होगा।

﴿5﴾ अगर किसी को सांप डस ले तो प्याज़ का रस और सरसों का तेल हम-वज़न मिला कर मरज़ की शिहत के मुताबिक़ आध आध घन्टा या एक एक घन्टा बा'द 4 तोला (तक़ीबन 50 ग्राम) की मिक्दार में पिलाइये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** आराम आ जाएगा।

﴿6﴾ अगर शहद की मखिखी काट ले तो उस पर प्याज़ का टुकड़ा बांध लीजिये। गर्म पानी या आग से जल जाने की सूरत में भी येही तरीका इख़्तियार कीजिये।

﴿7﴾ अगर बिच्छू या शहद की मखिखी वगैरा काट ले तो उस पर प्याज़ काट कर या मसल कर लगाइये और नमक लगा कर प्याज़ खिलाइये।

﴿8﴾ जब किसी को सांप डस जाए तो उस को प्याज़ कसरत से खिलाइये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ज़हर का असर दूर हो जाएगा।

﴿9﴾ कन-खजूरा काट ले तो प्याज़ और लहसन को पीस कर ज़ख़्म पर लेप कर दीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ज़हर का असर ख़त्म हो जाएगा।

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरुद पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُنْجِي الرَّاوَد)

﴿10﴾ अगर प्याज़ को पानी में घोट कर घर में छिड़कें तो إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ सांप बिच्छू वगैरा भाग जाएंगे ।

“या रब ! शिफ़ा इनायत फ़रमा” के शौलह हुरूप की निश्चत से जिल्दी अमराज के 16 इलाज

﴿1﴾ फोड़े और ज़ख़म का रूहानी इलाज

जब किसी शख्स का कुछ दुखता या उसे फोड़ा फुन्सी और ज़ख़म होता तो नबिय्ये करीम रऊफ़रहीम, महबूबे रब्बे अज़ीम بِاسْمِ اللهِ تَرْبِيَةٌ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपनी उंगली के साथ यूँ फ़रमाते : اَرْضَانَا بِرَيْقَةٍ بَعْضِنَا لِشِفَايِ بِهِ سَقَمُنَا يَا ذَنْ رَبِّنَا کے तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, हमारी ज़मीन की मिट्टी, हमारे बा'ज के लुआब (थूक) से हमारा बीमार, रब عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से शिफ़ा पाएगा । (مسلم ص ۱۲۰۶ حدیث ۲۱۹۴)

खाके मदीना और खाके वतन

मुफ़स्सिरे शहीर हक्कीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان दी हुई हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : या'नी अव्वलन आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मरज़ की जगह उंगली रखते फिर उंगली पर कुछ लुआब शरीफ़ लगा कर मिट्टी लगाते, फिर उस का लेप मरज़ की जगह कर देते और येह फ़रमाते जाते कि बि फ़ज़िलही हमारा लुआब और मदीने की मिट्टी शिफ़ा है । इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए, एक येह कि बीमारी पर टोटके और मन्तर जाइज़ हैं बशर्ते कि उस के अल्फ़ाज़ कुफ़्रिय्या न हों और कोई काम हराम न हो । आगे चल कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عمارة)।

मज़ीद तहरीर करते हैं (हज़रते अल्लामा अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي كَارِي ने) “मिरक़ात” में फ़रमाया : वतन की ख़ाक भी शिफ़ा होती है अगर कोई मुसाफ़िर अपने वतन की मिट्टी परदेस ले जाए जिस में से थोड़ी पीने के घड़े में डाल दिया करे तो إِنَّ شَاءَ اللهُ वहां का पानी नुक़सान न देगा। (मिरआत, जि. 2, स. 407, 408)

﴿2﴾ ख़ारिश की बेहतरीन हिकायत

किसी शख्स के ख़ारिश हो गई थी और किसी तदबीर से फ़ाएदा न होता था। उस ने हिजाज़े मुक़द्दस जाने वाले एक काफ़िले के साथ सफ़र इख़्तियार किया मगर आज़िज़ आ कर इस्नाए राह कूफ़ा शरीफ़ में रुक गया और अमीरुल मुअमिनीन मौलाए काएनात, हज़रते मौला मुशिकल कुशा, अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ के मज़ारे फ़ाइजुल अन्वार पर मुक़ीम हो गया, रात जब सोया तो उस की सोई हुई किस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी और उस ने ख़्वाब में मौला मुशिकल कुशा, अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ का जल्वए जैबा देखा। तड़प कर अपनी बीमारी की फ़रियाद की। आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने येह आयते करीमा पढ़ी :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ فَكَسَوْنَا الْعِظْمَ لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۝

سُبْحٰنَكَ اللهُ أَحْسَنَ الْخُلُقِيْنَ ﴿١﴾ (پ المؤمنون ١٤)

सुब्ह जब उठा तो ख़ारिश की बीमारी से मुकम्मल शिफ़ा मिल चुकी थी। मज़कूरा आयते करीमा ख़ारिश का मरीज़ खुद पढ़ कर अपने ऊपर दम कर ले या कोई दूसरा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा । (جمع الجوامع)

पढ़ कर मरीज़ पर दम कर दे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा देने वाला है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो ।

أُمِّيْنِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِيْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿3﴾ उम्मे अत्तार की ख़ारिश कैसे ठीक हुई !

अम्मीजान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهَا को बरसों तक हथेलियों में परेशान कुन “मीठी खुजली” ने दिक् (परेशान) किया, किसी इलाज से न जाती थी । किसी के बताने के मुताबिक़ उन्होंने ने मेंहदी पानी के ज़रीए ज़रा पतली कर के उस में मुनासिब मिक्दार में लीमूं निचोड़ कर थोड़ा सा नीला थोथा¹ शामिल कर के ख़ारिश पर लगाना शुरूअ किया । उन को फ़ाएदा हो गया । येह इलाज ता हुसूले शिफ़ा जारी रखना चाहिये । अगर फिर ख़ारिश हो जाए तो दोबारा भी येही इलाज कर लेना चाहिये ।

﴿4﴾ मेंहदी से इलाज के बारे में आ 'ला हज़रत का इर्शाद

मेंहदी ख़ारिश के लिये मुफ़ीद है मगर हाथ पाउं में ख़ारिश होने की सूरत में मर्द उसी वक़्त लगाए जब कि दूसरा इलाज मुम्किन न हो, बदन की ऐसी जगह जहां औरतें नहीं लगाया करतीं वहां मर्द मेंहदी लगा सकता है म-सलन रान, कन्धा, वगैरा । इस ज़िम्न में हुक्मे शर-ई बयान करते हुए मेरे आका आ 'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या

1 : येह ज़हर है, पन्सारी के यहां मिल सकता है ।

فَرَمَانِهِ مُسْتَفَا حَسْبِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा विक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

जिल्द 24 सफ़हा 542 पर फ़रमाते हैं : मर्द को हथेली या (पाउं के) तल्वे बल्कि सिर्फ़ नाखूनों ही में मेंहदी लगानी हराम है कि औरतों की तशब्बोह (या'नी मुशा-बहत, मुवा-फ़क़त) है। मज़ीद सफ़हा 543 पर मौजूद तहरीर का खुलासा है : इस से मर्द इलाज इसी सूरत में कर सकता है जब कि मेंहदी के काइम मक़ाम कोई दूसरी चीज़ न हो नीज़ मेहंदी किसी ऐसी दूसरी चीज़ के साथ मख़्लूत (MIX) न हो सके जो उस के रंग को जाइल (या'नी ख़त्म) कर दे, ज़ैबो ज़ीनत और आराइश मक्सूद न हो।

﴿5﴾ ख़ारिश का ख़ुश जाएक़ा हल्व़ा

सौफ़ 250 ग्राम, धन्या 250 ग्राम दोनों को बारीक पीस कर इस में अस्ली घी 750 ग्राम और एक किलो चीनी डाल कर मिला कर (मिक्स कर के) महफूज़ कर लीजिये। रोज़ाना सुब्ह व शाम दो दो तोला (तक़रीबन 25, 25 ग्राम) खा लीजिये। ख़ून की ख़राबी, ख़ारिश, जिरयान और ज़ो'फ़े बसर (या'नी नज़र की कमज़ोरी) के लिये
 اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद पाएंगे।

﴿6﴾ रोज़ाना सुब्ह नहार मुंह या रोज़ा हो तो ब वक्ते इफ़तार (फ़्रिज के ठन्डे नहीं बल्कि) सादा पानी में दो तोले ख़ालिस शहद मिला कर पीने से जिल्द की बीमारियां म-सलन ख़ारिश, जलन और फोड़ों वगैरा से
 اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ छुटकारा हासिल होगा।

﴿7﴾ ख़ारिश वाली जगह को गर्म या सादा पानी से धोना भी मुफ़ीद रहता है।

فَرْمَانِے مُسْتَفَا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक को कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाइस है। (البیہقی)

﴿8﴾ गुस्ल के ज़रीए ख़ारिश का इलाज

रोज़ाना नहाना यूं भी सिह्हत के लिये मुफ़ीद है और अगर आप को ख़ारिश है तो रोज़ाना कोई सा साबुन अच्छी तरह लगा कर नहाइये और अगर सूखी ख़ारिश हो तो ख़ूब मल कर बल्कि बाज़ार से नहाने के इस्ति'माल का लम्बे हेन्डल वाला प्लास्टिक का ब्रश ख़रीद कर उस से अच्छी तरह रगड़ कर गुस्ल कीजिये। जो कपड़े उतारे हैं वोह धूप में डाल दीजिये ताकि जरासीम मर जाएं। दूसरे दिन नहा कर पहले दिन जो उतारे थे वोह पहन लीजिये और आज जो उतारे हैं वोह धूप में डाल दीजिये। येह अमल रोज़ाना जारी रखिये إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ख़ारिश में काफ़ी राहत महसूस करेंगे। अगर धूप में डालना मुम्किन न हो तो किसी भी मुनासिब जगह पर रस्सी वगैरा पर डाल दीजिये मगर धूप ज़ियादा मुफ़ीद है। (मेडीकल स्टोर से ख़ारिश में इस्ति'माल के खुसूसी साबुन भी मिल सकते हैं)

﴿9﴾ प्याज़ का रस, ख़ालिस शहद और नमक मिला कर खरल कर लीजिये और ख़ूब अच्छी तरह मिला लीजिये रोज़ाना बरस (कोढ़) के दागों पर लेप कीजिये। कुछ ही अर्से में إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ दाग़ दूर हो जाएंगे।

﴿10﴾ जो फोड़ा फूटता न हो उस पर प्याज़ को कूट कर गर्म कर के बांध दीजिये। إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ चन्द बार के बांधने से फूट जाएगा।

﴿11﴾ सर्दी में हाथ पाउं फटने का इलाज

सर्दी की शिद्दत से बा'ज अवक़ात हाथ पाउं और होंट फट

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

जाते हैं और उन में चीरे से पड़ जाते हैं जो सख़्त तक्लीफ़ देते हैं। इस का आसान इलाज यह है कि रात को आग के सामने बैठ कर मु-तअस्सिरा मक़ाम पर प्याज़ का टुकड़ा मलिये।

﴿12﴾ बदन के दाग़ धब्बों का इलाज

बा'ज अवक़ात जिस्म पर सियाह धब्बे निकल आते हैं जो देखने वाले को बहुत बदनुमा मा'लूम होते हैं। इस का इलाज यह है कि रोज़ाना पानी में नमक पिघला कर उस में प्याज़ के एक टुकड़े को डुबो कर धब्बों पर आहिस्ता आहिस्ता रगड़िये إِنْ شَاءَ اللهُ थोड़े ही दिनों में शिफ़ा नसीब हो जाएगी।

﴿13﴾ ट्रावो कोर्ट क्रीम (TRAVO CORT CREAM) को सूखी ख़ारिश पर लगा कर उंगली वगैरा से रगड़िये إِنْ شَاءَ اللهُ मुफ़ीद तरीन पाएंगे। यह मरहम हर तरह की ख़ारिश फोड़े फुन्सियों और ज़ख़म वगैरा के लिये कारआमद है।

﴿14﴾ खुश्क ख़ारिश

खुश्क ख़ारिश अगर लम्बा अर्सा रहे तो “एग्ज़ीमा” में तब्दील हो जाती है और आगे चल कर इस से पानी भी बहने लगता है और ज़ख़म भी हो जाते हैं। इस को Infected eczema कहते हैं। इस के इलाज के लिये यह नुस्खा إِنْ شَاءَ اللهُ मुफ़ीद पाएंगे।

- (1) सोलीसायसीलिक एसिड 2 फ़ीसद Salicylic acid 2%
- (2) लिक्वीड पाइसिज़ कार्ब 2 फ़ीसद Liquid pices carb 2%
- (3) क्लोबिटासोल 30 फ़ीसद Clobbetasyl 30%

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (ط)।

- (4) रेसोर्सिनाल 1 फ़ीसद Resorcinal 1%
- (5) व्हाइट पेट्रोलियम जेली 100 फ़ीसद White petroleum jelly 100%
- तरीक़ा इस्ति 'माल : जिस्म के मु-तअस्सिरा हिस्सों पर सुब्ह व शाम येह मरहम लगाइये। ज़ियादा तक्लीफ़ न हो तो ह्स्बे ज़रूरत कभी कभी लगा लेना भी إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ मुफ़ीद होगा। न मा'लूम हो तो किसी भी मेडीकल स्टोर से पूछ लीजिये।

﴿15﴾ तर ख़ारिश

स्केबीज़ scabies : येह ख़ारिश की वोह किस्म है कि जिस में इब्तिदाअन खुश्क ख़ारिश होती है बा'द में फुन्सियां और ज़ख़्म हो जाते हैं, इस ख़ारिश में ज़ियादा तर हाथ, पाउं की उंगलियों के दरमियान की जगह, बग़ल और पेशाब की जगह मु-तअस्सिर होती और तक़ीबन पूरे जिस्म में रात को ख़ारिश होती है। इस का नुस्खा येह है :

- (1) सल्फ़यूरीक पावडर दस ग्राम Sulphuric powder 10 gram
- (2) व्हाइट पेट्रोलियम जेली सो ग्राम White petroleum jelly 100 gram

इस का नाम "10 फ़ीसद सल्फ़यूरीक ओइन्टमेन्ट" है। Sulphuric ointment

रात को सोने से पहले अच्छी तरह से गुस्ल कर लीजिये और बा'द में पूरे जिस्म पर गरदन से ले कर पाउं के तल्वों तक मरहम लगा लीजिये। और सुब्ह गर्म पानी से नहा लीजिये। जो कपड़े या बिस्तर तब्दील करेंगे तो उन को अच्छी तरह धो कर ख़ूब धूप में रखिये। येह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरुद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

अमल मुसल्सल तीन दिन तक कीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** ख़ारिश का मुकम्मल ख़ातिमा हो जाएगा। (इस मरहम का ज़ियादा इस्ति'माल नुक़सान देह भी हो सकता है। बेहतर यह है कि इस्ति'माल से पहले किसी ज़िल्दी अमराज़ के डॉक्टर से मश्वरा कर लीजिये। Dispenser या chemist से यह मरहम बनवाया जा सकता है)

﴿16﴾ गरमी दानों का इलाज

गरमी दाने सताते हों तो नीम की 11 कूंपलें (नई निकली हुई छोटी छोटी पत्तियां) सात दिन और तकलीफ़ ज़ियादा हो तो 40 दिन तक नहार मुंह (या'नी नाश्ते से क़ब्ल ख़ाली पेट) पानी के साथ खा लीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** गरमी दाने और फोड़े फुन्सियां ख़त्म। अगर गर्मियां शुरूअ होने से क़ब्ल ही 30 दिन तक येह कोर्स कर लें तो **إِنْ شَاءَ اللهُ** गरमी दाने वगैरा निकलेंगे ही नहीं।

“हरम” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सर में खुश्की के 3 इलाज

﴿1﴾ सर में जैत या'नी जैतून शरीफ़ का तेल डाल कर रोज़ाना कम अज़ कम सात मिनट बालों की जड़ों में अच्छी तरह मालिश कीजिये। **إِنْ شَاءَ اللهُ** सात दिन में सर की खुश्की, पपड़ियां उतरना, सर में खुजली आना वगैरा सब ख़त्म हो जाएगा ﴿2﴾ रोज़ाना थोड़े से नीम के पत्ते पीस कर पानी में डाल कर सर धोइये ﴿3﴾ अंगूर, तरबूज, नाशपाती, सेब और मोसम्बी वगैरा ज़ियादा इस्ति'माल फ़रमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الجوامع)

दर्द का रूहानी इलाज

बदन में दर्द या किसी चीज़ की शिकायत हो तो तक्लीफ़ की जगह पर सीधा हाथ रख कर बिस्मिल्लाह तीन बार और फिर सात मरतबा येह दुआ पढ़िये : **أَعُوذُ بِاللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ** या 'नी अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** और उस की कुदरत के साथ उस चीज़ के शर से पनाह चाहता हूं जिसे मैं पाता हूं और जिस से आयिन्दा खौफ़ करता हूं) (مسلم ص २०९ احديث २०२ احصن حصين ص १०९)

“अल मदीना” के सात हुरूफ़ की निस्बत से

दिल की बीमारियों के 7 इलाज

दिल की घबराहट के लिये

﴿1﴾ **وَلَيْزِيْطُ عَلٰى تَلْوِيْكُمْ وَيُثَبِّتُ بِهَا الْقَدَامَ ۝** (پ ۹ الانفال ۱۱) ﴿1﴾

ऊपर दी हुई दो आयतें मरीज़ खुद पढ़ कर दम किया हुवा पानी पिये या कोई पढ़ कर पिला दे ﴿2﴾ हर नमाज़ के बा'द दिल पर हाथ रख कर कम अज़ कम सात बार (ज़ियादा बार की कोई कैद नहीं) **يَا اللهُ قَوْنِيْ وَقَلْبِيْ** (तरजमा : या अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** मुझे और मेरे दिल को कुव्वत अता फ़रमा) पढ़िये । जब कभी दिल में तक्लीफ़ उठे उस वक़्त भी येह अमल कीजिये **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इफ़ाका (कमी) हो जाएगा । ग़ैरे मरीज़ भी हर नमाज़ के बा'द येह अमल करे **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** दिल के अमराज़ से महफूज़ रहेगा ﴿3﴾ रोज़ाना किसी भी वक़्त एक बार यासीन शरीफ़ पढ़ कर एक सेब पर दम कर लीजिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عُزُّوَجَلُّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अबुयू)

फिर नहार मुंह (या'नी नाशते से क़ब्ल ख़ाली पेट) खा लीजिये । **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**
 कभी भी दिल की बीमारी नहीं होगी ﴿4﴾ रोज़ाना लाल अंगूरों का रस (JUICE) आधा गिलास पियें ﴿5﴾ रोज़ाना दो या तीन गिलास गाजर का रस पियें ﴿6﴾ दिल के मरीज़ के लिये मोसम्बी और कीनू बहुत मुफीद हैं ।

﴿7﴾ दिल की बन्द शिरयानें खुलाने की हिकायत

एक साहिब का बयान है : दिल की तक्लीफ़ की वजह से मैं ने “एन्जियोग्राफी” करवाई तो दिल की तीन शिरयानें या'नी खून की छोटी छोटी रगें (VEINS) बन्द थीं, डॉक्टरों ने एक माह बा'द ओपरेशन की तारीख़ दी । इस दौरान मैं ने एक हकीम साहिब से रुजूअ किया, उन्होंने ने मुझे एक नुस्खा तज्वीज़ किया । मैं ने एक माह तक उस को इस्ति'माल किया । मुक़र्ररा तारीख़ पर कार्डियो लोजी सेन्टर में सवा दो लाख रूपै जम्अ करवा दिये । डॉक्टरों ने मुख़लिफ़ टेस्ट करवाए । दूसरे रोज़ “बायपास सर्जरी” होने वाली थी, तीन डॉक्टरों का बोर्ड मेरी एक माह पहले की और इस बार की नई रिपोर्टों को ले कर बैठा । उन्होंने ने मुझ से पूछा : एन्जियोग्राफी (ANGIOGRAPHY) करवाने के बा'द आप ने कौन सी दवा इस्ति'माल की थी ? मैं ने हकीम साहिब के दिये हुए नुस्खे की तफ़्सील बयान कर दी । डॉक्टरों ने बताया : आप की तीन बन्द शिरयानों में से दो खुल चुकी हैं येही नुस्खा जारी रखिये हो सकता है बकि़य्या (VEINS) भी खुल जाए । फ़िलहाल आप को “बायपास सर्जरी” की ज़रूरत नहीं । चुनान्चे मैं ने अपनी

فَرَمَانَهُ مُسْتَفِئًا عَلَيْهِ وَاللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ : मुझे पर कसरत से दुरुदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझे पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगिफरत है। (ابن عساکر)

जम्अ करवाई हुई रकम वापस ली और खुशी खुशी लौट आया।

दिल की शिरयानें खोलने वाला नुस्खा येह है :

﴿1﴾ लीमूं का रस एक पियाली ﴿2﴾ अदरक का रस एक पियाली ﴿3﴾ लहसन का रस एक पियाली ﴿4﴾ सेब का सिर्का एक पियाली। इन चारों को यकजान (MIX) कर के हल्की आग पर आधे घन्टे तक उबालिये, जब एक पियाली के बराबर रस कम हो जाए या'नी तीन पियाली जितना रस रह जाए तो चूल्हे पर से उतार लीजिये। जब ठन्डा हो जाए तो तीन पियाली शहद उस में हल कर लीजिये दवा तय्यार है, इस को बोतल में भर लीजिये रोज़ाना सुब्ह नहार मुंह तीन चम्मच येह दवा पी लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** दिल की जानिब जाने वाली तमाम बन्द शिरयानें खुल जाएंगी।

दर्दे सर का इलाज

कैसरे रूम ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को ख़त लिखा कि मुझे दाइमी दर्दे सर की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा हो तो भेज दीजिये ! हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उस को एक टोपी भेज दी। कैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का दर्दे सर काफूर हो जाता और जब सर से उतारता तो दर्दे सर फिर लौट आता। उसे बड़ा तअज्जुब हुवा। आख़िरे कार उस ने उस टोपी को उधेड़ा तो उस में से एक कागज़ बरआमद हुवा जिस पर **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** लिखा था।

(تفسير كبير ج ١ ص ١٠٠)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिक़ायत से येह भी मा'लूम हुवा कि जिस को दर्दे सर हो वोह एक काग़ज़ पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ लिख कर या लिखवा कर उस का ता'वीज़ सर पर बांध ले। लिखने का तरीक़ा येह है कि अनमिट सियाही म-सलन बोल पोइन्ट से लिखिये और بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के ० और तीनों "म" के दाएरे खुले रखिये, ता'वीज़ लिखने का उसूल येह है कि आयत या इबारत लिखने में हर दाएरे वाले हर्फ़ का दाएरा खुला हो या'नी इस तरह म-सलन वगैरा। ए'राब लगाना ज़रूरी नहीं, लिख कर मोमजामा (या'नी मोम में तर किये हुए कपड़े का टुकड़ा लपेट लीजिये) या प्लास्टिक कोटिंग कर लीजिये फिर कपड़े, रेगज़ीन या चमड़े में ता'वीज़ बना लीजिये, और सर पर बांध लीजिये जिन को इमामा शरीफ़ का ताज सजाने की सआदत हासिल है वोह चाहें तो इमामा शरीफ़ की टोपी में सी लें। इसी तरह इस्लामी बहनें दुपट्टे या बुरक़अ के उस हिस्से में सी लें जो सर पर रहता है। अगर ए'तिक़ाद कामिल होगा तो إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर जाता रहेगा। सोने या चांदी या किसी भी धात की डिबिया में ता'वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं। इसी तरह किसी भी धात की जन्जीर ख़्वाह उस में ता'वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है। इसी तरह सोने, चांदी और स्टील वगैरा किसी भी धात की तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुवा हो या न लिखा हुवा हो अगर्चे अल्लाह का मुबारक नाम या कलिमाए तय्यिबा वगैरा खुदाई किया हुवा हो उस का पहनना मर्द के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क्रियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा। (ابن بشكوال)

लिये ना जाइज़ है। औरत सोने चांदी की डिबिया में ता'वीज़ पहन सकती है। (फैज़ाने सुन्नत, जिल्द अब्वल, स. 68, 69)

“या अल्लाह” के छ हुरूफ़ की निस्बत से आधे सर के दर्द के 6 इलाज

- ❶ अगर किसी को आधे सर का दर्द हो तो एक बार सू-रतुल इख़लास (अब्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये, हस्वे ज़रूरत तीन बार, सात बार या ग्यारह बार इसी तरह दम कीजिये। ग्यारह का अ़दद पूरा होने से क़ब्ल ही **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** आधे सर का दर्द ठीक हो जाएगा।
- ❷ जब दर्द हो रहा हो उस वक़्त सूँठ (या'नी सूखी हुई अदरक जो कि पन्सारी या'नी देसी दवा वालों से मिल सकती है) को थोड़े से पानी में घिस कर सूँठ का घिसा हुवा हिस्सा पेशानी पर मलने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** आधे सर का दर्द जाता रहेगा।
- ❸ खुश्क धन्या के थोड़े दाने और थोड़ी सी किशमिश (या'नी खुश्क छोटे अंगूर जिस को पंजाबी में “सोगी” कहते हैं) मटके के ठन्डे या सादा पानी में चन्द घन्टे भिगो कर पीने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा होगा।
- ❹ गर्म दूध में देसी घी मिला कर पीने से भी फ़ाएदा होता है।
- ❺ नारियल का पानी पीने से आधा सीसी (या'नी आधे सर का दर्द) और पूरे सर के दर्द में कमी आती है।
- ❻ नीम गर्म पानी के बड़े बरतन में नमक डाल कर दोनों पाउं 12

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोजे क़ियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

मिनट के लिये उस में डाले रहिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** फ़ाएदा हो जाएगा ।
(ज़रूरतन वक़्त में कमी बेशी कर लीजिये)

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 70, 71)

“या रब्बे करीम” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से दर्दे सर के 8 इलाज

- 1) **لَا يُصَدِّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنْفُونَ** (तर-ज-मए कन्ज़ुल इमन : इस से न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फ़र्क आए । ۲۷ الواقعة ۱۹) येह आयते करीमा तीन बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दर्दे सर वाले पर दम कर दीजिये । **إِنْ شَاءَ اللهُ** फ़ाएदा हो जाएगा । (तरजमा पढ़ने की ज़रूरत नहीं)
- 2) **सू-रतुन्नास** सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर सर पर दम कीजिये, और पूछिये, अगर अभी दर्द बाकी हो तो दूसरी बार भी इसी तरह दम कीजिये । अगर अब भी दर्द हो तो तीसरी बार भी इसी तरह दम कीजिये । **पूरे सर** का दर्द हो या **आधे सर** का कैसा ही शदीद दर्द हो तीन बार में **إِنْ شَاءَ اللهُ** जाता रहेगा ।
- 3) **पूरे सर** का दर्द हो या शकीका (या'नी आधे सर का दर्द) बा'द नमाज़े अ़स्स **सू-रतुत्तकासुर** एक बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** दर्द में इफ़ाका होगा ।
- 4) **ज़बान** पर एक चुटकी **नमक** रख कर 12 मिनट के बा'द एक

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

गिलास पानी पी लीजिये सर में कैसा ही दर्द हो **إِنْ شَاءَ اللهُ** इफ़ाका हो जाएगा। (हाई ब्लड प्रेशर के मरीज़ के लिये नमक का इस्ति'माल नुक़सान देह होता है)

﴿5﴾ एक कप पानी में एक चम्मच हल्दी डाल कर जोश दे कर पीने या भाप लेने से **إِنْ شَاءَ اللهُ** सर का दर्द दूर हो जाएगा। (सालन वगैरा में हल्दी ज़रूर इस्ति'माल कीजिये, रोज़ाना एक ग्राम (या'नी चुटकी भर) हल्दी खाने वाला **إِنْ شَاءَ اللهُ** केन्सर से महफूज़ रहेगा)

﴿6﴾ रोज़ाना रात को सात दाने बादाम और 21 दाने किशमिश या'नी सूखे हुए अंगूर (छोटे बड़े कोई से भी हों) पानी में भिगो दीजिये और येह दोनों चीज़ें सुब्दू दूध के साथ खा लीजिये। बिल खुसूस बादाम अच्छी तरह चबा कर या पीस कर खाइये। **إِنْ شَاءَ اللهُ** दर्दे सर दूर हो जाएगा। कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये भी येह नुस्खा मुफ़ीद है।

﴿7﴾ देसी घी में तली हुई, गर्मा गर्म ताज़ा जलेबियां तुलूए आफ़ताब से क़ब्ल खाने से **إِنْ شَاءَ اللهُ** दर्दे सर में आराम आ जाएगा।

﴿8﴾ कभी इत्तिफ़ाक़िय्या दर्दे सर हो जाए तो खाना खाने के बा'द डिस्प्रीन (DISPIRIN) की दो टिक्या पानी में घोल कर पी लीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** ठीक हो जाएगा। (हर तरह के दर्द की टिक्या खाना खाने के बा'द ही इस्ति'माल की जाए वरना नुक़सान का अन्देशा है)

म-दनी मश्वरा : अगर दवाओं से दर्दे सर ठीक न होता हो तो आंखें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद को कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

टेस्ट करवा लीजिये अगर नज़र कमज़ोर हो तो ऐनक पहनने से ददे सर ठीक हो जाएगा । फिर भी ठीक न हो तो दिमाग़ के खुसूसी डोक्टर से रुजूअ करना ज़रूरी है । इस में कोताही बा'ज़ अवकात सख़्त नुक्सान देह साबित होती है ।

“मदीना” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से दाइमी नज़ले के 5 इलाज

﴿1﴾ 30 दिन तक रोज़ाना नाश्ते के दो घन्टे बा'द मछली का तेल (CODLIVER OIL) आधी चम्मच पियें । सर्दियों में रात को भी मज़ीद आधी चम्मच इस्ति'माल कर सकते हैं **﴿2﴾** बच्चों को अगर बार बार नज़ला होता हो तो मछली का तेल तीन तीन क़तरे दिन में एक या दो बार 30 दिन तक पिलाइये । बच्चों के लिये खुशबूदार मछली का तेल मेडीकल स्टोर से त़लब कीजिये **﴿3﴾** रोज़ाना रात मुठ्ठी भर भुने हुए चने छिलके समेत खाना फिर एक घन्टे तक पानी या चाय वगैरा कोई सा मशरूब न पीना दाइमी नज़ले के लिये मुफ़ीद है **﴿4﴾** नाक से गहरे गहरे सांस लीजिये । नमाज़े फ़ज़्र के बा'द ज़ियादा बेहतर है **﴿5﴾** हर वुजू में (रोज़ा न हो तो) नाक में तीनों बार पानी क़दरे (या'नी थोड़ा सा) ज़ोर से चढ़ाइये ।

नज़ले का देसी इलाज

एक तोला (या'नी तक्रीबन 12 ग्राम) सौंफ़ और सात अ़दद लोंग दो किलो पानी में डाल कर चूल्हे पर खूब जोश दीजिये । जब 250 ग्राम पानी रह जाए तो एक तोला (या'नी तक्रीबन 12 ग्राम)

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उहूद पहाड़ जितना है। (मिरआत)

मिस्री डाल कर चाय की तरह नोश फ़रमाइये। दो तीन बार के इस्ति'माल से **نَجْلًا** व **جुकाम** दूर हो जाएगा।

नज़ला खोलने के लिये

दहक्ते हुए कोएलों पर पिसी हुई हल्दी डाल कर धूनी लेने से नाक खुल जाती और नज़ले की रूतूबत बहने लगती है।

बवासीर और इस के बा'ज अस्बाब

बासूर या'नी मक्अद में होने वाला मस्सा, **बासूर** की जम्अ **बवासीर** है। **बवासीर** के तीन अहम अस्बाब हैं : (1) पुरानी कब्ज़ (2) तब्खीरे मे'दा (या'नी वोह बुख़ारात (भाप) जो खाना खाने के बा'द मे'दे से दिमाग़ को चढ़ते और बदन को भी थोड़ा सा गर्मा देते हैं) (3) अक्सर कुर्सी पर बैठना, इन चीज़ों से मक्अद (दुबुर) के आस पास की अन्दरूनी रगों में खून का ठहराव हो जाता है जिस के सबब वोह रगें फूल कर मस्सों (PILES) की सूरत में बाहर निकल आती हैं या अन्दर की तरफ़ रहती हैं। इस को **बवासीर** कहते हैं। बा'ज लोगों की **बवासीर** ब-यक वक़्त अन्दरूनी और बैरूनी दोनों तरफ़ होती है।

जैतून से बवासीर का इलाज

हदीस शरीफ़ में है कि : **जैतून का तेल** खाओ इसे लगाओ कि येह मुबारक दरख़्त से है और इस में सत्तर बीमारियों की शिफ़ा है जिन में जुज़ाम भी है इस में **बवासीर** को भी शिफ़ा है। (मिरआत, जि.

6, स. 226, ६०३० تحت الحديث ३०८ ص ८ (مرقاة المفاتيح ج ८) **जैतून का तेल** बिगैर पकाए खाना फ़ाएदा मन्द होता है और येह कोलेस्ट्रॉल को भी कम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

करता है। लिहाज़ा कच्चा इस्ति'माल किया जाए। कच्चा खाने में किसी किस्म की बद मज़गी नहीं होती, खाना खाते वक़्त अपनी रिकाबी में चावल, सालन वगैरा निकाल कर चम्मच से जैतून शरीफ़ का तेल डाल कर शौक़ से तनावुल फ़रमाइये।

अन्जीर से ख़ुश्क बवासीर का इलाज

अगर तकलीफ़ ज़ियादा हो तो शहद के शरबत (या'नी शहद मिले पानी) के साथ रोज़ाना नहार मुंह पांच अदद ख़ुश्क अन्जीर खा लीजिये। मुसलसल इस तरीक़े पर अमल करने से إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ चार माह से ले कर दस माह के अर्से में बवासीर के मस्से ख़ुश्क हो जाएंगे (येह तरीक़े इलाज ख़ूनी बवासीर के लिये भी मुफ़ीद है) अगर बवासीर में तकलीफ़ कम और बद हज़्मी ज़ियादा हो तो हर बार खाना खाने से आधा घन्टा क़ब्ल ख़ुश्क अन्जीर तीन अदद खा लीजिये। अगर्चे बवासीर न भी हो यूं ही पेट में बोज़ होता हो तब भी हर बार खाना खाने के बा'द तीन अदद अन्जीर तनावुल फ़रमाइये।

ख़ूनी बवासीर के 4 इलाज

﴿1﴾ 6 माह तक रोज़ाना तीन अन्जीर और इतने ही वज़्ज का अदरक का मुरब्बा नहार मुंह खाइये إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ बवासीर में फ़ाएदा हो जाएगा ﴿2﴾ 5 अन्जीर के टुकड़े कर के मुनासिब मिक्दार में दूध के अन्दर पका लीजिये और ठन्डा कर के सोते वक़्त खा लीजिये। येह ख़ूनी बवासीर का मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा) इलाज है إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ ख़ून बन्द हो जाएगा। ता हुसूले शिफ़ा जारी रखिये अगर मुस्तक़िल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोजे कियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاحبار)

इस्ति'माल करें तब भी **﴿3﴾ अनार** का छिल्का सुखा कर बारीक पीस कर बोतल में महफूज़ कर लीजिये और सुब्ह व शाम छ माशा (या'नी तक़ीबन 6 ग्राम) ताज़ा पानी से निगल लीजिये, **﴿4﴾ नीम** के दरख़्त से जो पकी हुई "निबोलियां" गिर पड़ती हैं वोह रोज़ाना 12 अ़दद छिल्का उतार कर खा लिया करें, मुसल्सल खाते रहने से **बवासीर** में फ़ाएदा होगा और ख़ून भी साफ़ होगा।

गुर्दे की पथरी

हम-वज़न **मूली** और **आलू** भून कर हस्बे ज़रूरत सोंफ़, नमक और काली मिर्च शामिल कर के इस्ति'माल करना गुर्दे के दर्द और पथरी के लिये मुफ़ीद है।

गुर्दे के दर्द के दो इलाज

﴿1﴾ ख़रबूजे के थोड़े से बीज छील कर रोज़ाना खा लीजिये और ऊपर पानी पी लीजिये। **﴿2﴾ मूली** और उस के पत्ते, ककड़ी, खीरा, तरबूज़, ख़रबूज़ा कसरत से खाना भी **गुर्दे के दर्द** से नजात का बाइस होगा।

दमा और सांस फूलना

5 अ़दद काली मिर्च, दस अ़दद मज़ज़ बादाम, दस ग्राम मुनक्का सोते वक़्त खाइये, उस के बा'द पानी न पियें। **दमा और सांस फूलना** राहत महसूस करेंगे।

فَرْمَانِے مُسْتَفَا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक को कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (البیہقی)

मे'दे में ज़ख़्म

दो हफ़्ते तक दिन में तीन मरतबा बन्द गोभी का रस एक एक गिलास पी लीजिये, बन्द गोभी का सालन भी खाइये بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ सब बेहतर हो जाएगा।

जिगर या मे'दे के तमाम अमराज़ के लिये

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِوَادًا لَّكَلَّمْتُ رَبِّي (1)
 (1) बा'दे नमाज़े फ़ज़्र तीन अदद सादी चीनी की प्लेटों पर या मोमी कागज़ों पर ज़र्दे के रंग से ऊपर दी हुई आयते मुबा-रका लीखिये (ए'राब लगाने की हाज़त नहीं अलबत्ता दाएरे वाले हुरूफ़ के दाएरे खुले रखिये) और सुब्ह, दो पहर और रात एक एक प्लेट पानी से धो कर पी लीजिये। (मुद्दते इलाज 40 दिन) इस के इलावा इसी रंग से लिख कर रेगज़ीन या चमड़े में ता'वीज़ बना लीजिये। इस्लामी बहनें अपने गले में और इस्लामी भाई अपने सीधे बाजू पर बांध लें। येह इलाज जिगर और मे'दे के इलावा गुर्दों के दर्द के लिये भी मुफ़ीद है। जब भी ता'वीज़ पहनना हो उस को प्लास्टिक कोर्टिंग या मोमजामा कर लेना चाहिये।

हाई ब्लड प्रेशर

﴿1﴾ सात अदद काली मिर्च और सात अदद नीम की कूपलें (या'नी नीम के दरख़्त की इब्तिदाई छोटी छोटी पत्तियां) रोज़ाना खाइये या नीम की पत्तियों का एक चम्मच रस रोज़ाना सुब्ह पी लीजिये। हाई ब्लड

1 : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो।

फरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआं दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा। (अब्रहाम)

प्रेशर के साथ साथ शूगर, जिल्द, जिगर और जिन्सी बीमारियों से भी **﴿2﴾** हर खाने के साथ लहसन का एक (या तीन) जवा (या'नी लहसन की पोथी की रेक, फांक) छील कर कच्ची निगल लिया करें। टुकड़े कर के या कूट कर भी इस्ति'माल कर सकते हैं **﴿1﴾** बहुत सारी बीमारियों से तहफ़ुज़ हासिल होगा। (कच्चा लहसन, कच्ची मूली, और कच्ची प्याज़ वगैरा कोई भी ऐसी चीज़ खाई जिस से मुंह में बदबू हो जाती है तो जब तक मुंह में बदबू हो मस्जिद का दाख़िला हराम है। इस मस्अले की तफ़सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ मुख़्तसर रिसाला "मस्जिदें खुशबूदार रखिये" हदिय्यतन हासिल कर के पढ़ लीजिये)

चावल ब्लड प्रेशर में मुफ़ीद हैं

फ़िशारुद्दम या'नी हाई ब्लड प्रेशर, दिल के मरज़ और मे'दे की ख़राबी के दो हज़ार मरीज़ों पर डॉक्टरों ने दस साल तक तजरिबात करने के बा'द येह राय काइम की है कि इन अमराज़ में "चावल की ग़िज़ा" बेहतरिन इलाज है। बिल खुसूस ब्लड प्रेशर के मरज़ के आगाज़ में चावल ज़ियादा मुफ़ीद हैं।

"परहेज़ में आधा इलाज है" के अडारह हुरूफ़ की निस्बत से खांसी के 18 इलाज

﴿1﴾ हर तरह की खांसी के मरीज़ दिन में कई बार ख़ालिस शहद चाटें खांसी बल्कि गले के हर तरह के दर्द में भी **﴿1﴾** इन् श़ा'अल्लै **﴿2﴾** अगर काली खांसी हो तो मुनासिब मिक्दर में पिसी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह रज़ल उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

हुई सूंठ (या'नी खुश्क अदरक) ख़ालिस शहद पर छिड़क दीजिये और सात दिन रोज़ाना सुबह व शाम थोड़ा थोड़ा चाट लीजिये। काली ख़ांसी बल्कि हर तरह की ख़ांसी के लिये **﴿1﴾** मुफ़ीद पाएंगे **﴿3﴾** हर घन्टे के बा'द एक लोंग मुंह में रख कर चबाते और चूसते रहिये **﴿4﴾** ख़ांसी का जोर टूटेगा **﴿5﴾** चन्द खजूरें खा कर एक कप नीम गर्म पानी पी लीजिये **﴿6﴾** बलाम पतला हो कर ख़ारिज हो जाएगा। ख़ांसी और दमा दोनों के लिये येह इलाज फ़ाएदा मन्द है (जिन को खजूरें मुवाफ़िक नहीं आतीं वोह येह इलाज न करें और आंखों के मरीज के लिये भी खजूरें खाना नुक्सान देह हो सकता है) **﴿7﴾** तक्रीबन 25 ग्राम अदरक के रस में शहद मिला कर दिन में तीन बार चाटने से भी बलाम ख़ारिज होगा **﴿8﴾** केले के दरख़्त का पत्ता सुखाने के बा'द तवे पर जला कर उस की राख शहद में मिला कर ख़ांसी के मरीज को थोड़ी थोड़ी चटाते रहिये। **﴿9﴾** आराम आ जाएगा **﴿10﴾** शहद में प्याज़ का रस मिला कर पीने से **﴿11﴾** थोड़ी सी पिसी हुई काली मिर्च दूध में जोश दे कर पी लीजिये **﴿12﴾** दो चम्मच अदरक का रस और एक चम्मच शहद मिला कर पी लीजिये **﴿13﴾** ख़ांसी से नजात मिलेगी **﴿14﴾** प्याज़ उबाल कर पीने से बलाम निकलता और ख़ांसी में आराम आता है **﴿15﴾** किशमिश (या'नी खुश्क अंगूर) और शकर या अनार का छिल्का चूसना ख़ांसी के लिये

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

मुफ़ीद है ﴿13﴾ गर्म दूध में थोड़ी सी हल्दी और देसी घी मिला कर पीने से खांसी में फ़ाएदा होता है ﴿14﴾ पानी में थोड़ा सा नमक घोल कर पीने से **खांसी** को आराम मिलेगा ﴿15﴾ रात को नमक की डली मुंह में रख लीजिये **खांसी** में कमी हो जाएगी ﴿16﴾ दवाओं की दुकान पर मिलने वाला जूशांदा भी इस्ति'माल किया जा सकता है ﴿17﴾ पान के दो चार पत्ते तवे वगैरा पर गर्म कर के उन पर हलका गर्म तेल लगा कर गले पर बांधना **पुरानी खांसी** के लिये मुफ़ीद है । (पान के पत्ते गर्म करते वक़्त येह ख़याल रखिये कि जल न जाएं और गले पर बांधते वक़्त गर्म हों मगर न इतने कि तक्लीफ़ पहुंचे) ﴿18﴾ **रोज़ाना** किशमिश (खुश्क छोटे अंगूर जिस को पंजाबी में “सोगी” कहते हैं) के 40 दाने (अगर मुवाफ़िक़ आते हों तो दुगने करने में भी हरज नहीं) और तीन अ़दद बादाम ले कर इस पर 11 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दम कर के खा लीजिये इस के ऊपर दो घन्टे तक पानी न पियें । **खांसी** में बहुत फ़ाएदा होगा । **बल्ग़म** निकलेगा और मज़ीद नहीं बनेगा । (ज़रूरतन किशमिश की ता'दाद बढ़ा दीजिये) बहुत छोटे बच्चों के लिये ह़स्बे ज़रूरत मिक्दार कुछ कम कर दीजिये । ता हुसूले शिफ़ा इलाज जारी रखिये ।

“या अल्लाह” के छ हुरूफ़ की निस्बत से हिचकी के 6 इलाज

(वोह हवा जो कि गले से रुक रुक कर आवाज़ के साथ निकलती है उस को हिचकी बोलते हैं)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

﴿1﴾ दो लोंग मुंह में डाल कर उन का रस चूसिये إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

हिचकी फ़ौरन बन्द हो जाएगी ﴿2﴾ थोड़ी सी हल्दी या थोड़ा सा ज़ीरा पानी के साथ फांक लीजिये ﴿3﴾ मूली या गन्ने का रस पी लीजिये ﴿4﴾ गाजर को पीस कर सूँघ लीजिये ﴿5﴾ आम के दरख़्त के पत्ते जला कर धूनी ले लीजिये ﴿6﴾ अगर बच्चे को बार बार हिचकी आ रही हो और खुद ब खुद बन्द न हो तो थोड़ा सा शहद चटा दीजिये

इِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ हिचकी बन्द हो जाएगी।

“क़रम” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से
हाथ पैर सुन हो जाने के 3 इलाज

﴿1﴾ रोज़ाना नहार मुंह (नाश्ते से क़ब्ल या रोज़ा हो तो इफ़्तार के वक़्त ख़ाली पेट) चुटकी भर कलौंजी पानी के साथ इस्ति'माल कीजिये
﴿2﴾ ग्यारह अ़दद ख़ुश्क ख़ूबानी रात को पानी में भिगो लीजिये और सुब्ह खा लीजिये (कम अज़ कम 40 दिन तक) ﴿3﴾ पानी के गिलास में एक चम्मच शहद मिला कर उस में आधा लीमूँ निचोड़ कर रोज़ाना नहार मुंह (नाश्ते से क़ब्ल या रोज़ा हो तो इफ़्तार के वक़्त ख़ाली पेट) पी लीजिये (मुद्दते इलाज कम अज़ कम 40 दिन)

“ख़ुदा” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से
आवाज़ बैठ जाए तो तीन इलाज

﴿1﴾ नमक का छोटा सा टुकड़ा आग में ख़ूब गर्म कर के किसी चीज़ से पकड़ कर फ़ौरन ठन्डे पानी के गिलास में बुझा दीजिये, फिर वोह नमक की डली पानी से निकाल कर उस पानी को पी जाइये। दो तीन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद् बख्त हो गया । (अिन)

बार येह इलाज करने से **﴿2﴾** इन् शَاءَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ फ़ाएदा हो जाएगा एक चम्मच **जव शरीफ़** के दाने चबाइये और चूसिये फिर आखिर में निगल जाइये **﴿3﴾** ख़शख़ाश के छिलके और अज्वाइन हम वज़न लीजिये और पानी में उबाल कर बरदाशत के क़ाबिल हो जाने के बा'द इस पानी से ग़रारे कीजिये ।

गला बैठ गया हो तो....

प्याज़ का रस एक तोला (तक़रीबन 12 ग्राम), **शहद** दो तोला (तक़रीबन 25 ग्राम) मिला कर गर्म कर के पीने से **इन् शَاءَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** बैठी हुई **आवाज़** साफ़ हो जाएगी, मगर आतिशक (एक जिन्सी बीमारी) और जुज़ाम (या'नी कोढ़) के मरीज़ को इस से फ़ाएदा नहीं होगा ।

“गौंसे झा'ज़म” के सात हुरूफ़ की निस्बत से मुंह के छाले के 7 इलाज

﴿1﴾ अतिब्बा (या'नी तबीबों) का कहना है : “बा'ज़ अवक़ात मे'दे की गरमी और तेज़ाबिय्यत से मुंह में छाले पड़ जाते हैं और इस मरज़ से ख़ास किस्म के जरासीम मुंह में फैल जाते हैं । इस के लिये मुंह में **ताज़ा मिस्वाक** मलिये और इस के लुआब को कुछ देर तक मुंह के अन्दर फिराते रहिये । इस तरह कई मरीज़ ठीक हो चुके हैं ।” **﴿2﴾** मुठ्ठी भर बर्गे हिना (या'नी मेंहदी के पत्ते) पानी में उबाल कर (दिन में दो बार) इस के ग़रारे कीजिये **इन् शَاءَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** फ़ाएदा हो जाएगा **﴿3﴾** पाव भर गर्म पानी के अन्दर एक **लीमूं** निचोड़ कर उस से कुल्लियां कीजिये । (दिन में तीन बार) **﴿4﴾** अन्डे की सफ़ेदी फेंट कर रूई की फुरेरी से छालों पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُعْتَبَرَات)

लगाइये **﴿5﴾** दिन में दो तीन बार ग्लिसिरीन लगाना भी **﴿6﴾** मेडीकल स्टोर से DAKTARIN (MICONAZOLE) नामी ट्यूब ले कर दिन में चन्द बार थोड़ी थोड़ी दवा डाल कर मुंह में चन्द मिनट फिराइये फिर थूक दीजिये **﴿7﴾** मुंह के छालों और तक्रीबन 80 फ़ीसद बीमारियों का इलाज कम खाने में है अगर यकीन न आता हो तो पेट भर कर खाना छोड़ दीजिये और रहमते इलाही **﴿8﴾** के करिश्मे देखिये । **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल के बाब “पेट का कुफ़ले मदीना” में दी हुई हिदायात के मुताबिक़ अमल कीजिये । आप इस की ब-र-कतें देख कर हैरान रह जाएंगे । यकीन मानिये ! ज़ियादा खाने से जान “बनती” नहीं “बिगड़ती” है ।

केन्सर

﴿1﴾ पिसा हुवा काला ज़ीरा तीन तीन ग्राम दिन में तीन मरतबा पानी से इस्ति’माल कीजिये **﴿2﴾** रोज़ाना चुटकी भर पिसी हुई ख़ालिस हल्दी खाने से **﴿3﴾** कभी केन्सर नहीं होगा ।

मुंह के केन्सर का एक सबब

सिगरेट नोशी, तम्बाकू, खुशबूदार मीठी छालिया, इलायची

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा को। (عمر الزّيات)

के खुशबूदार बीज, मेनपूड़ी, पान गुटका, सिटी और पान के मुख़्तलिफ़ खुशबूदार मसा-लहे का कसरत से इस्ति'माल सांस की नाली में ज़ख़्म, फेफ़ड़ों में पीप पड़ जाना और तरह तरह की ख़ौफ़नाक बीमारियों का सबब बन सकता है और इस से मुंह का केन्सर भी हो सकता है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ मुख़्तसर रिसाला "पान गुटके की तबाह कारियां" का मुता-लआ फ़रमा लीजिये)

“या नबी” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से बुरे ख़्वाब के 5 म-दनी इलाज

﴿1﴾ बा वुजू सोने की आदत बनाइये ﴿2﴾ सोने से क़ब्ल **أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ** सात बार पढ़ कर दुआ कीजिये, “या अल्लाह ! मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का सदका मुझे बुरे ख़्वाबों से बचा।” (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) **بُرَا خِوَابٌ نَّهَىٰ** आएगा। ﴿3﴾ बुरा ख़्वाब देख कर आंख खुलने पर **أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ** और **لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ** तीन बार पढ़ लीजिये ﴿4﴾ बुरा ख़्वाब देखने के बाद बाएं कन्धे की तरफ़ थुत्कार कर करवट बदल लीजिये और तीन बार पढ़िये : **يَا مُتَكَبِّرُ** ﴿5﴾ **أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ** 21 बार (सोने से क़ब्ल) पढ़ लीजिये **بُرَا خِوَابٌ نَّهَىٰ** आएगा। (मज़क़ूरा तमाम म-दनी इलाज अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उम्र भर जारी रखिये और शिफ़ा के साथ साथ सवाब भी कमाइये)

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा। (جمع الجوامع)

पीलिया (यश्क़न) के दो इलाज

﴿1﴾ भुने हुए चनों पर अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास एक एक बार या तीन तीन बार पढ़ कर दम कर दीजिये और थोड़े थोड़े खाते रहिये ﴿2﴾ गन्ने को रात शबनम में रख दीजिये और सुब्ह इस्ति'माल कर लीजिये।

बद ज़बानी का इलाज

जो बे तुकी बातें कर के, गुस्से से झाड़ कर लोगों के दिल दुखा बैठता हो वोह रोज़ाना **اَسْتَغْفِرُ الله** सो मरतबा (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े। **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** बद ज़बानी की आदत निकल जाएगी। मुसल्मानों की नाहक़ दिल आज़ारियां कर बैठने की सूरत में **اَللّٰهُ تَوَكَّلْ** की जनाब में तौबा के साथ साथ जिन जिन का दिल दुखाया हो उन से मुआफ़ी मांगना ज़रूरी है।

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में ज़बान की तेज़ी की शिकायत की तो फ़रमाया, तुम इस्तिफ़ार को लाज़िम क्यूं नहीं कर लेते? बेशक़ मैं दिन में सो बार इस्तिफ़ार करता हूं।

(مُسْتَدْرَأُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ٩ ص ٩٥ حَدِيثُ ٢٣٤٠٠)

“नबी का करम” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से शूगर के 8 इलाज

رَبِّ أَدْخِلْنِي مَدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مَخْرَجَ صِدْقٍ وَأَجْعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطٰنًا نّٰوَسِيْرًا ﴿1﴾
(پ ١٥ بنی اسرائیل ٨٠) رोज़ाना सुब्ह व शाम ऊपर दी हुई आयते मुबा-रका

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

तीन बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लीजिये। **1** **شَاءَ اللهُ** से नजात मिलेगी (ता हुसूले शिफ़ा) **2** एक कप कलौंजी, एक कप राई, आधा कप अनार का सूखा छिल्का और आधा कप पत (पापड़ी) मिला कर पीस लीजिये। इस पर सात बार सू-रतुल फ़ातिहा (अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये और 30 रोज़ तक बिला नागा रोज़ाना नहार मुंह (या'नी नाशते से क़ब्ल या रोज़ा हो तो इफ़्तार के वक़्त ख़ाली पेट) आधा चम्मच इस्ति'माल कीजिये। परहेज़ भी जारी रखिये एक हफ़्ते के बा'द शूगर टेस्ट करवा लीजिये **3** इफ़ाका (कमी) पाएंगे **3** खुश्क सोंफ़ और खुश्क आमला हम-वज़्न पीस कर बारीक छान कर इस पर 313 बार दुरूदे पाक पढ़ कर दम कर के रख लीजिये और अन्दाज़न छ छ माशा (6 ग्राम) ता हुसूले शिफ़ा रोज़ाना सुब्ह व शाम ताज़ा या मटके के पानी से इस्ति'माल कीजिये। **4** **شَاءَ اللهُ** इसे शूगर कम करने का बेहतरीन इलाज पाएंगे **4** रोज़ाना एक अ़दद सदा बहार फूल (सफ़ेद) नहार मुंह खा लीजिये **5** एक किलो सूखे करेले पीस कर रख लीजिये। रोज़ाना सुब्ह नहार मुंह चौथाई चम्मच, पानी के साथ इस्ति'माल कीजिये और अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के फ़ज़्लो करम का नज़ारा फ़रमाइये (मुद्दते इलाज कम अज़ कम 92 दिन) **6** करेले के पावडर के बजाए अगर रोज़ाना सुब्ह व शाम करेले का रस एक एक चम्मच पी लें तब भी **7** **شَاءَ اللهُ** शूगर की बीमारी में हैरत अंगेज़

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक को कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाइस है। (अबुयुसैफ़)

तौर पर फ़ाएदा होगा। इस के साथ अगर खाना कम खाएंगे तो शूगर के मरज़ के साथ साथ जिम्नन मोटापे का इलाज भी होता चला जाएगा ﴿7﴾ पिसे हुए काले चने और जव शरीफ़ की रोटी रोज़ाना खाइये या भुने हुए चने खा लीजिये, ब्राउन खुब्ज़ (या'नी ब्राउन रोटी) या ब्राउन ब्रेड (येह दोनों बेकरी से मिल सकते हैं) इस्ति'माल कीजिये। मगर कोई सी भी ग़िज़ा ज़ियादा मिक्दार में मत खाइये कि शूगर बढ़ने का ख़तरा रहेगा ﴿8﴾ बड़ी इलायची के अन्दर से दाने निकाल कर (ता हुसूले शिफ़ा) रोज़ाना सुब्ह व शाम पांच पांच दाने चबा कर निगल लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى बहुत फ़ाएदा होगा।

दांतों की मजबूती का राज़ : हिकायत

एक साहिब जिन की उम्र 100 बरस से कुछ कम थी अपने दांतों से गन्ना खा लेते थे और फ़रमाते थे कि जब गन्ना खाता हूं तो मेरे दांतों पर जवान आदमी रश्क करते हैं। किसी ने उन से दांतों की महफूज़ी और मजबूती का सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : “आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने मुझे बचपन में येह अमल बताया था कि इशा के वित्र जब पढ़े जाएं तो पहली रकअत में बा'दे अल हम्द सूरए اِذَا جَاءَ दूसरी में تَبَّتْ يَدَاكَ और तीसरी में सू-रतुल इख़लास पढ़ने से दांत उम्र भर तक्लीफ़ से महफूज़ रहते हैं। जब से मैं इसी तरह पढ़ता हूं और इसी अमल की येह ब-र-कत है।”

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्नूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

दांतों और कानों की हिफ़ाज़त का आसान अमल

जब छींक आए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहे और अगर رَبِّ الْعَالَمِیْنَ भी बढ़ा दे या'नी اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ कहे तो बेहतर है जब कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ عَلَى كُلِّ حَال कहना बहुत ही बेहतर है। हज़रते मौला मुश्किल कुशा, अलिय्युल मुर्तजा, शेरे खुदा وَجْهَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं : जो शख्स छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ عَلَى كُلِّ حَال¹ कहेगा उसे कभी दाढ़ और कान का दर्द न होगा। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

(مرفاة ج ۸ ص ۴۹۹ تحت الحدیث ۴۷۳۹) मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ ف़रमाते हैं : जो कोई शख्स छींक पर कहे : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ عَلَى كُلِّ حَال और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फैर लिया करे तो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से महफूज़ रहेगा, मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा अमल) है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 396) बहारे शरीअत जिल्द 3 सफ़हा 477 पर है : छींकने वाले से पहले ही सुनने वाले ने اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहा तो एक हदीस में आया है कि येह शख्स दांतों और कानों के दर्द और तुख़्मा² से महफूज़ रहेगा। और एक हदीस में है कि कमर के दर्द से महफूज़ रहेगा।

(رَدُّ الْمُحْتَرَج ج ۹ ص ۱۸۴)

दांत कमज़ोर होने की एक वजह

ख़ाने के बा'द ख़िलाल कीजिये न करने से दांत कमज़ोर हो जाते हैं।

دايته

1 : तरजमा : या'नी हर हाल में सब खूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो तमास जहान वालों का मालिक है। 2 : तुख़्मा या'नी बद हज़्मी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

दांतों के दर्द के दो इलाज

«1» “हींग” को पानी में जोश दे कर कुल्लियां करने से दांतों का दर्द दूर होता है «2» हिलते हुए दांतों में दर्द हो तो “हींग” या “अकर करहा” दांत में दबाने से आराम आ जाता है। मसूड़ों की सूजन दूर होती है।

“बरेली” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से दांतों का खून बन्द करने के लिये पांच इलाज

«1» (गर्म तवे वगैरा के ज़रीए) फुलाई हुई फट्करी का पावडर मसूड़ों में लगाइये «2» लीमूं का रस मसूड़ों पर मलिये «3» सेब के रस में खाने का सोडा मिला कर मसूड़ों में लगाइये «4» दिन में तीन मरतबा लाल टमाटर का रस थोड़ा थोड़ा पी लीजिये «5» अनार के फूल छाउं में सुखा कर खूब बारीक पीस कर बोतल में भर लीजिये सुब्ह व शाम मन्जन के तरीके पर दांतों पर मलिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ खून बन्द हो जाएगा और हिलते दांत भी मज़बूत होंगे।

“मक्का” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से दांतों का पीलापन दूर करने के 3 इलाज

«1» तिल का तेल, लीमूं का रस और नमक मिला कर दांतों पर मलने से दांतों का पीलापन दूर होता, खून बन्द और दर्द भी दूर होता है «2» लीमूं के छिलके सुखा कर, पीस कर उस में नमक मिला कर दांत मांझिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ चमकदार हो जाएंगे «3» तीन हिस्से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الإيمان)

नमक और एक हिस्सा खाने का सोडा मिला कर डिब्बिया में रख लीजिये, रोज़ाना दांतों पर लगा कर दो तीन मिनट रहने दीजिये फिर दांत मांझ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ दांत साफ़ हो जाएंगे ।

“बक्कीअ” के चार हुरूफ़ की निस्बत से पाएरिया (दांतों से पीप आने) के 4 इलाज

﴿1﴾ गन्दुम की चपाती सालन के साथ ख़ूब अच्छी तरह चबा कर खाइये इस तरह मसूड़ों की वर्जिश भी होगी और गन्दुम पाएरिया के लिये मुफ़ीद भी है । नीज़ अच्छी तरह ख़ूब चबा कर खाने से बहुत सारी बीमारियों से तहफ़ुज़ भी हासिल होता है (अगर चबाने के दौरान ख़ून या पीप आता हो तो येह इलाज मत कीजिये वरना ख़ून या पीप पेट में जाएगा) ﴿2﴾ पालक का रस पीना भी मुफ़ीद है, बेहतर है कि इस में गाजर का रस भी शामिल कर लीजिये ﴿3﴾ अमरूद के दरख़्त की कूपलें (नए नर्म पत्ते) मुनासिब मिक्दार में खाइये ﴿4﴾ हड़, नमक और काली मिर्च हम-वज़्न बारीक पीस लीजिये और इस से दिन में दो बार मन्जन कीजिये إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ मसूड़ों की सूजन और पाएरिया का बेहतरीन इलाज है ।

दांतों के तमाम अमराज़ का इलाज

मिस्वाक दांतों के तमाम अमराज़ का इलाज है जब कि इस को उसूल के मुताबिक़ किया जाए । आज कल अक्सर लोग शायद मिस्वाक नहीं, फ़क़त् “रस्मे मिस्वाक” अदा करते हैं ।

फरमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

“मिस्वाक करना सुन्नत है” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के 14 म-दनी फूल

﴿1﴾ मिस्वाक की मोटाई छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ﴿2﴾ मिस्वाक एक बालिशत से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैतान बैठता है ﴿3﴾ मिस्वाक के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूड़ों के दरमियान ख़लाअ (GAP) का बाइस बनते हैं ﴿4﴾ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ﴿5﴾ मिस्वाक के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कारआमद रहते हैं जब तक उन में तलख़ी बाक़ी रहे ﴿6﴾ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ﴿7﴾ जब भी मिस्वाक करना हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ﴿8﴾ हर बार धो लीजिये ﴿9﴾ मिस्वाक सीधे हाथ में इस तरह लीजिये कि छुंग्लिया इस के नीचे और बीच की तीन उंग्लियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ﴿10﴾ पहले सीधी तरफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उल्टी तरफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी तरफ़ नीचे फिर उल्टी तरफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ﴿11﴾ चित लैट कर मिस्वाक करने से तिल्ली बढ़ जाने और ﴿12﴾ मुठ्ठी बांध कर करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ﴿13﴾ मिस्वाक वुजू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता सुन्नते मुअक्कदा उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो। (माखूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 623) ﴿14﴾ मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) मिस्वाक के रेशे

فَرَمَانِے مُسْتَفَا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह رَحْمٰتِہٖ عَلَیْکُمْ دَس رَحْمَتِے भेजता है। (۱)

नीज़ जब **मिस्वाक** ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलाए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एहतियात से रख दीजिये या दफ़न कर दीजिये या पथ्थर वगैरा वज़न बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिये। **मिस्वाक** या मुक़द्दस अवराक़ वगैरा किनारे पर डाल देने से बह कर वापस आ जाने का इम्कान रहता है। गहरे समुन्दर में डालते वक़्त भी मुक़द्दस अवराक़ के थेले या बोरी में दो एक जगह शिगाफ़ या'नी चीरे वगैरा ज़रूर डालिये ताकि पानी अन्दर आ जाए और तह में बिठा दे। (तफ़सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 294 ता 295 का मुता-लआ फ़रमा लीजिये)

“गौस” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से दांतों की हिफ़ाज़त के 3 म-दनी फूल

﴿1﴾ हमेशा चाय या कोफ़ी पीने के बा'द थोड़ा थोड़ा पानी पियाले में डाल कर ख़ूब हिला कर कुल्ली भर लीजिये और चन्द बार मुंह में फिरा कर ख़ूब **जुम्बिशें** दे कर पी लीजिये या निकाल दीजिये, ऐसा ही तीन बार कीजिये। इसी तरह हर ग़िज़ा खाने के बा'द भी येह अमल कीजिये। **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ** दांत साफ़ रहेंगे ﴿2﴾ जब भी मौक़अ मिले मुंह में **कुल्ली** भर लीजिये और चन्द मिनट तक हिलाते रहिये फिर उगल दीजिये। येह अमल रोज़ाना मुख़लिफ़ अवक़ात में चन्द बार कीजिये ﴿3﴾ अगर मज़क़ूरा अन्दाज़ पर **कुल्लियों** के लिये सादा

فَرَمَانِهِ مُسْتَفِيدًا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

पानी के बजाए नमक वाला नीम गर्म पानी इस्ति'माल किया जाए तो मज़ीद मुफ़ीद है। अगर पाबन्दी से येह इलाज जारी रखेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللهُ** दांतों के दरमियान अटके हुए गिज़ा के अज़्ज़ा धुल धुल कर निकलते रहेंगे, न वोह मसूड़ों में ठहरेंगे कि सड़ें, **إِنْ شَاءَ اللهُ** इस तरह करने से मसूड़ों में ख़ून की शिकायत भी न होगी और दांतों की बे शुमार बीमारियों से बचे रहेंगे।

“का'बा ” के चार हुरूफ़ की निस्बत से मुंह की बदबू के 4 इलाज

﴿1﴾ **اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ الطَّاهِرِ** येह दुरूद शरीफ़ मौक़अ ब मौक़अ एक ही सांस में ग्यारह मरतबा पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** मुंह की बदबू जाइल हो जाएगी ﴿2﴾ अगर मुंह में बदबू आती हो तो हरा धनिया चबा कर खाइये नीज़ ﴿3﴾ गुलाब के ताज़ा या सूखे हुए फूलों से दांत मांड़ने से भी **إِنْ شَاءَ اللهُ** बदबू दूर हो जाएगी ﴿4﴾ हां अगर पेट की ख़राबी की वजह से बदबू आती हो तो “कम खोरी” (या'नी हमेशा खाना कम खाने) की सआदत हासिल कर के भूक की ब-र-कतें लूटने से **إِنْ شَاءَ اللهُ** टांगों और बदन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों के दर्द, कब्ज़, सीने की जलन “मुंह के छाले, बार बार होने वाले नज़्ले खांसी और गले के दर्द, मसूड़ों में ख़ून आना वगैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ मुंह की बदबू से भी जान छूट जाएगी। भूक से कम खाने की ब-र-कत से 80 फ़ीसद अमराज़ से बचत हो सकती है। (तफ़सीली

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पद अल्लाह رَجُلٌ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के बाब “पेट का कुफ़्ले मदीना” का मुता-लआ फ़रमाइये) अगर नफ़्स की हिर्स का इलाज हो जाए तो कई ज़ाहिरी बातिनी अमराज़ खुद ही ख़त्म हो जाएं।

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

दांतों को बीमारी से बचाने का बेहतरीन नुस्खा

याद रहे ! डट कर खाने से हाज़िमा ख़राब होता, तरह तरह की बीमारियां पैदा होतीं और अक्सर मसूड़ों से खून भी आता है। **पेट का कुफ़्ले मदीना** लगाने या'नी भूक से कम खाने की आदत बनाइये। पिज़्ज़ों, पराठों, होटल की नहारियों, कबाब समोसों, मिठाइयों, पकोड़ों, पूरियों, कचोरियों और अन्वाअ व अक्साम की तली हुई चीज़ों, तरह तरह की मीठी डिशों और इसी तरह की दीगर देर से हज़म होने वाली ग़िज़ाओं नीज़ आइस्क्रीमों, कोला मशरूबों और ठन्डे ठन्डे शरबतों वगैरा के इस्ति'माल से परहेज़ कीजिये। **موتاपे** समेत बहुत सारी बीमारियों के साथ साथ मसूड़ों से आने वाला खून भी बन्द हो जाएगा। इस की तफ़सीली मा'लूमात के लिये **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल के बाब **पेट का कुफ़्ले मदीना** का मुता-लआ कीजिये।

पेशाब में जलन के 4 इलाज

﴿1﴾ पेशाब में जलन हो या रुक कर बार बार आता हो इस के लिये तिल के लड्डू मुफ़ीद हैं बाज़ार में अ़ाम तौर पर पोलिश वाले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया। (ज़िन)

तिल मिलते हैं, पोलिश करने से तिल, चावल, दालों वगैरा के हयातीन (VITAMINS) को शदीद नुक़सान पहुंचता है, तेल के कारख़ाने से बिगैर पोलिशी के तिल मिल सकते हैं, हो सके तो घर ही पर गुड़ की चाशनी बना कर लड्डू तय्यार कर लीजिये ﴿2﴾ गर्म दूध में शकर और अस्ली घी डाल कर पीने से **पेशाब की जलन**, रुकावट और दर्द में फ़ाएदा होता है ﴿3﴾ सो ग्राम दूध में सिर्फ़ एक ग्राम खाने का सोडा डाल कर दिन में दो मरतबा पीने से **पेशाब** खुल कर आता और **जलन** दूर होती है ﴿4﴾ “जव शरीफ़” उबाल कर उस का पानी पीने से पेशाब साफ़ आता और **जलन** दूर होती है।

पेशाब का इलाज

बार बार और वोह भी ज़ियादा मिक्दार में **पेशाब** आना और ख़ूब प्यास लगना ज़ियाबीतुस (DIABETIC) की अलामात हैं। इस के लिये **ख़ालिस हल्दी** बारीक पिसी हुई सुब्ह व शाम चार चार माशा (या'नी तक़ीबन चार चार ग्राम) ताज़ा पानी से इस्ति'माल कीजिये और **अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ** के फ़ज़्लो करम से इस ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाली दवा की ब-र-कतों का नज़्ज़ारा कीजिये।

बार बार पेशाब आने के 5 इलाज

﴿1﴾ “ज़ियाबीतुस” न होने के बा वुजूद अगर **बार बार पेशाब** आ रहा हो तो “उड़द की दाल” चन्द घन्टे भिगो कर नर्म कर के पीस कर हस्बे ज़रूरत शकर डाल कर अस्ली घी में भून लीजिये। येह

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مُعْتَبَرَات)

हल्वा मुनासिब मिक्दार में सात दिन तक रोज़ाना तीन बार खाइये। साथ में रोटी और दही खाना ज़ियादा मुफ़ीद है ﴿2﴾ रोज़ाना सुब्ह व शाम एक चम्मच तिल और एक चम्मच शहद मिला कर ख़ूब चबा कर खाइये। ﴿3﴾ पेशाब मा'मूल पर आ जाएगा रोज़ाना रात को तीन बादाम पानी में भिगो दीजिये और सुब्ह छिल्के उतार कर नहार मुंह खा लीजिये ﴿4﴾ सर्दी की वजह से बार बार पेशाब आता हो तो बारीक पीसी हुई दारचीनी दो माशा (या'नी तक़रीबन दो ग्राम) दूध से इस्ति'माल कीजिये, ﴿5﴾ "मा'जूने फ़लासफ़ा" बार बार पेशाब आने बल्कि पेशाब की मुख़्तलिफ़ बीमारियों के लिये मुफ़ीद है। (हकीम के मश्वरे से इस्ति'माल कीजिये) पानी और चाय एक साथ न पियें। चाय बहुत ही कम पियें कि चाय पीने से पेशाब भी ज़ियादा आता है और येह गुर्दे के लिये भी मुज़िर है। (दूध वाली चाय का ज़ियादा इस्ति'माल मोटापा लाता और चीनी वाली चाय का इस्ति'माल शूगर को बढ़ाता है)

पेशाब रुक रुक कर आने के 4 इलाज

﴿1﴾ मुनासिब मिक्दार में मूली का रस पीने से पेशाब खुल कर आता है ﴿2﴾ ताज़ा छाछ में गुड़ डाल कर पीने से पेशाब की रुकावट दूर होती है बल्कि अगर पेशाब बन्द हो गया हो तो येह पीने से इस्ति'माल आ जाएगा ﴿3﴾ रात को गेहूं भिगो कर रख दीजिये और सुब्ह पीस कर शकर मिला कर हल्वा बना लीजिये इस का इस्ति'माल

فَرَمَانِهِ مُسْتَفَا عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

भी पेशाब की रुकावट को दूर करता है ﴿4﴾ इलायची और सूंठ (या'नी खुश्क अदरक) थोड़ी सी हम-वज़न पीस लीजिये फिर नमक मिले हुए पानी में डाल कर पीने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** पेशाब खुल कर आ जाएगा।

पेशाब में खून

अगर शूगर न हो तो खूब गन्ने का रस पियें, पेशाब की रुकावट और खून आना सब ख़त्म **إِنْ شَاءَ اللَّهُ**। दौलत कमाने के शौक में आज कल उमूमन गन्ने के रस में बर्फ़ का पिघला हुआ पानी काफ़ी मिक्दार में मिलाया जाता और सेक्रीन¹ के ज़रीए इस को मीठा किया जाता है। लिहाज़ा आप ज़ियादा पैसे दे कर बिगैर बर्फ़ के गन्ने का ख़ालिस रस निकलवाइये।

पेशाब में धात

सूंठ (या'नी सूखी अदरक) को पानी में जोश दे कर पिसी हुई हल्दी और गुड़ डाल कर पीने से पेशाब के साथ अगर धात आती है तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** बन्द हो जाएगी।

नींद में पेशाब निकल जाना, जिरयान, एहतिलाम

गूंद एक माशा, कतीरा एक माशा, सबूस अस्पगोल तीन माशा आपस में मिला कर सुब्ह व शाम पी लें।

1 : सेक्रीन एक सफ़ेद रंग का सफूफ़ होता है जो कि मसूई तौर पर बनाया जाता है और चीनी से तक़रीबन पांच सो गुना मीठा होता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस को शफ़ाअत करूँगा । (جمع الجوامع)

औरत के बार बार पेशाब आने का इलाज

आमला और शकर पक्के केले के साथ मिला कर इस्ति'माल करने से औरत को कसरते पेशाब से नजात मिलती है ।

अगर मर्द को शहवत तंग करती हो तो.....

﴿1﴾ कसरत से रोज़े रखे ﴿2﴾ गोशत कम और सब्ज़ियां और फल ज़ियादा इस्ति'माल करे ﴿3﴾ मुल्हट्टी तीन माशा, धनिया खुश्क तीन माशा पीस कर पानी के साथ इस्ति'माल कीजिये 15 दिन तक ।

मे'दा बीमार होने की पहचान

कूतुल कुलूब जिल्द 2 सफ़हा 316 पर नक्ल है कि खाने के बा'द (अलिफ़) "6 घन्टे से क़ब्ल अगर खाना निकल जाए तब भी मे'दा बीमार और अगर 24 घन्टे से ज़ियादा वक़्त तक ख़ारिज न हो तब भी समझ लीजिये कि मे'दा बीमार है ।" (बा) जोड़ों का दर्द पेट की हवा रोकने का नतीजा है (जीम) जिस तरह नहर का चलता पानी अगर रोक दिया जाए तो नहर के کنارों को नुक़सान होता और कनारे टूट कर पानी बहने लगता है इसी तरह पेशाब रोकने से जिस्म को नुक़सान होता है ।"

हाज़िमा कैसे दुरुस्त हो ?

वक़्त बे वक़्त खाते पीते रहने से मे'दा तबाह और हाज़िमा बरबाद हो जाता है । जब तक भूक न लगे उस वक़्त तक खाना सुन्नत नहीं । जब भी खाए तो भूक के तीन हिस्से कर ले, एक हिस्सा खाना,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

एक हिस्सा पानी और एक हिस्सा हवा। खाने के बा'द डेढ़ दो घन्टे तक न सोए, गोशत कम और सब्जी और फलों का इस्ति'माल ज़ियादा करे। हत्तल इम्कान रोज़ाना पौन घन्टा पैदल चले। चलने का बेहतर तरीका येह है कि पहले 15 मिनट तेज़ तेज़ क़दम, फिर 15 मिनट दरमियाना, आख़िर में फिर 15 मिनट तेज़ क़दम चले। रात का खाना खा कर कम अज़ कम 150 क़दम चले। बद हज़्मी की वोह बीमारियां जो किसी दवा को जवाब नहीं देती **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** दुरुस्त हो जाएंगी। आप को **80%** अमराज़ से तहफ़फ़ुज़ हासिल होगा जिन में हार्ट अटेक, फ़ालिज, लक़्वा, दिमागी अमराज़, हाथ पाउं और बदन का दर्द, ज़बान और गले की बीमारियां, मुंह के छाले, सीने और फेफ़डे के अमराज़, सीने की जलन, शूगर, हाई ब्लड प्रेशर, जिगर और पित्ते के अमराज़ वगैरा शामिल हैं। (माख़ूज़ अज़ फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 608)

“भूक न लगती हो तो” दो इलाज

﴿1﴾ भूक बहुत कम लगती हो, खाना जल्द हज़्म न होता हो, खाने को जी न चाहता हो तो संगतरे की काशों पर बारीक पिसी हुई सूंठ या'नी सूखी हुई अदरक और काला नमक छिड़क कर खाइये। **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** सात दिन तक येह खाने से भूक पहले के मुक़ाबले में बढ़ जाएगी ﴿2﴾ अदरक काट कर छोटी छोटी टुकड़ियां बना लीजिये और उस पर नमक छिड़क कर एक या दो ग्राम खा लीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** चमक कर भूक लगेगी, गोस ख़ारिज होगी और क़ब्ज़ दूर होगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक को कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकोजगी का बाइस है। (अबुसल्लि)

बद हज़मी के दो म-दनी इलाज

﴿1﴾ जिस शख्स को बद हज़मी की शिकायत हो और वोह नीचे दी हुई इन दो आयाते करीमा को पढ़ कर अपने हाथ पर दम कर के उसे पेट पर फ़ैरे और खाने वगैरा पर दम कर के खाना खाया करे **बद हज़मी** की शिकायत दूर हो जाएगी। आयाते मुबा-रका येह है :

كُلُوا وَأَشْرِبُوا هَيْبًا بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٣٧﴾ إِنَّكَ لَكَلَّامٌ جَزِي
الْبَحْسِينِ ﴿٣٧﴾ (प २९, المرسلات ६३, ६४)

तर-ज-माए कन्जुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा अपने आ'माल का सिला बेशक नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

﴿2﴾ इमाम कमालुद्दीन दमैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي बा'ज उ-लमाए किराम से नक़ल करते हैं : जिस ने खाना जि़यादा खा लिया और बद हज़मी का ख़ौफ़ हो वोह अपने पेट पर हाथ फ़ैरता हुवा तीन मरतबा येह कहे :

الْيَلَّةُ لَيْلَةُ عَيْدِي يَا كَرِشِي وَرَضِي
اللَّهُ عَنْ سَيِّدِي أَبِي عَبْدِ اللَّهِ
الْقَرَشِي -

तरजमा : ऐ मेरे मे'दे आज की रात मेरी ईद की रात है और अल्लाह غَوْحَلُّ मेरी राज़ी हो हमारे सरदार हज़रते अबू अब्दुल्लाह क-रशी¹ से।

1 : सय्यिदी अबू अब्दुल्लाह क-रशी हाशिमि عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي अकाबिर औलियाए मिस्र से हैं, सय्यिदुना गौसुल आ'जम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के ज़माने में सोलह सत्तरह साल के थे 6 जुल हिज्जह 599 सि.हि. को बैतुल मुक़द्दस में इन्तिकाल फ़रमाया।

(फ़तावा अफ़्रीका, स.173)

فَرْمَانِے مُسْتَفَا حَلَى اللّٰه تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

और अगर दिन का वक़्त हो तो **اَللَّيْلَةُ لَيْلَةُ عَيْدِي** की जगह **اَللَّيْلَةُ لَيْلَةُ عَيْدِي** कहे। (फैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 609, ६१० ص ۱ حیاة الحيوان الكبير ج ۱)

गेस और बद हज़मी का देसी इलाज

अगर पेट में हवा भर जाती हो, अफारा या'नी हवा के सबब पेट फूल जाता हो तो पिसी हुई **ख़ालिस हल्दी** 10 रत्ती (या'नी एक ग्राम से मा'मूली ज़ाइद) और नमक 10 रत्ती (या'नी एक ग्राम से मा'मूली ज़ाइद) गर्म पानी से इस्ति'माल कीजिये। हवा ख़ारिज हो कर पेट हलका हो जाएगा। कई रोज़ तक इस्ति'माल करने से **बद हज़मी** भी **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** दूर हो जाएगी।

हाज़िमे का मन भाता इलाज

काली मिर्च, काला ज़ीरा और नमक बारीक पीस कर एक बोतल में महफूज़ कर लीजिये, **तरबूज़** पर छिड़क कर इस्ति'माल कीजिये। इस तरह **तरबूज़** की लज़ज़त में भी इज़ाफ़ा हो जाएगा और वोह **हाज़िमे** की बेहतरीन दवा साबित होगा और भूक भी चमक उठेगी। **मेरे आका** आ'ला हज़रत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** रिवायत नक़ल करते हैं : “खाने से पहले **तरबूज़** खाना पेट को ख़ूब धो देता है और बीमारी को जड़ से ख़त्म कर देता है।” (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 442) **तरबूज़** के मुकम्मल छिलके का या धारियां या गोल धब्बे हों तो उन का **सब्ज़ रंग** जितना गहरा होगा उतना ही **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** अन्दर से लाल और मीठा निकलेगा। कहते हैं : **तरबूज़**

فَرَمَانِهِ مُسْتَفَا عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : تُمْ جَهَاً بِي هُوَ مُؤِزٌّ بِرِ دُرُودٍ بِرِ دُرُودٍ بِرِ دُرُودٍ مُؤِزٌّ تَكَّ
 پھڑچتا ہے ! (طرائق)

पर हल्का सा हाथ मारने पर मध्धम सी आवाज़ आना उस के उम्दा और पक्के होने की अलामत है ।

हाज़िमा दार चटनी बनाने का तरीका

रोज़ाना खाने के साथ इस चटनी का हाज़िमा वगैरा के लिये इस्ति'माल मुफ़ीद है ﴿1﴾ सुर्ख़ टमाटर 50 ग्राम ﴿2﴾ अदरक 50 ग्राम ﴿3﴾ लहसन 50 ग्राम ﴿4﴾ एक अदद लीमूं का रस ﴿5﴾ हरी मिर्च 25 ग्राम ﴿6﴾ जीरा सफ़ेद 25 ग्राम ﴿7﴾ पोदीना एक गड्डी ﴿8﴾ हल्दी 25 ग्राम ﴿9﴾ नमक हस्बे ज़ाएक़ा

क़ब्ज़ के तीन अस्बाब

﴿1﴾ कुरसी की पुश्त या दीवार वगैरा से टेक लगा कर या ﴿3﴾ खड़े खड़े या ﴿3﴾ सुवारी पर बैठ कर खाना खाने से बद हज़्मी होती है ।

“दिल मदीना बना लिया हम ने” के सत्तरह

हुरूफ़ की निस्बत से क़ब्ज़ के 17 इलाज

अगर क़ब्ज़ रहती हो तो ﴿1﴾ अपना हाज़िमा दुरुस्त रखिये । मुनासिब मिक्दार में बीज समेत पक्के अमरूद (कच्चे अमरूद क़ब्ज़ बढ़ाते हैं) या ﴿2﴾ मुनासिब मिक्दार में पपीता खा लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ । पेट साफ़ हो जाएगा ﴿3﴾ अगर दाइमी क़ब्ज़ हो तो आप का डॉक्टर इजाज़त दे तो हर दो या तीन माह बा'द पांच दिन तक सुब्ह व शाम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुद्दर से उठे। (شعب الایمان)

एक एक टिक्या ग्रामेक्स 400 मिली ग्राम **GRAMEX400mg** (Metronidazole) इस्ति'माल कीजिये। इसे क़ब्ज़, बद हज़्मी वगैरा अमराज़ और पेट की इस्लाह के लिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** बेहतरीन दवा पाएंगे। मगर जब भी येह टिक्या लेना शुरू करें तो मुसल्सल पांच दिन पूरे करना ज़रूरी है। ख़ाली पेट में भी ले सकते हैं ﴿4﴾ जिस वक़्त क़ब्ज़ हो उस दिन दो एक वक़्त खाने का फ़ाका कीजिये ﴿5﴾ नहार मुंह एक गिलास नीम गर्म या चार गिलास पानी पी लीजिये ﴿6﴾ सोते वक़्त एक गिलास नीम गर्म पानी में थोड़ा सा नमक घोल कर पी लीजिये ﴿7﴾ सोते वक़्त एक या दो संगतरे खा लीजिये ﴿8﴾ थोड़ी सी सोफ़ दूध या हल्के गर्म पानी से ले लीजिये ﴿9﴾ सादा या नीम गर्म पानी में लीमूं निचोड़ कर सुब्ह व शाम इस्ति'माल कीजिये ﴿10﴾ एक गिलास नीम गर्म पानी में दो चम्मच ख़ालिस शहद, एक चम्मच लीमूं और एक चम्मच अदरक का रस हल कर के पी लीजिये ﴿11﴾ “अमल्लास” के थोड़े से फूल गोश्त में पका कर कुछ दिन तक खाने से **إِنْ شَاءَ اللهُ** दाइमी क़ब्ज़ में इफ़ाका (कमी) हो जाएगा ﴿12﴾ रात को तीन खजूरें पहले धो लीजिये फिर भिगो कर रखिये और सुब्ह उसी पानी में मसल कर छान कर पी लीजिये (खजूरें और हर तरह के फल और सब्जियां धो कर ही इस्ति'माल करने चाहिए ता कि मैल कुचैल, मखिख्यों की बीट और खुसूसन जरासीम कुश दवा के अ-सरात

फरमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الجوامع)

धुल जाएं) ﴿13﴾ पक्के टमाटर का रस एक कप पी लीजिये
 ﴿14﴾ अस्पगोल की भूसी एक या तीन चम्मच (ज़रूरतन कमी बेशी कर सकते हैं) सादा पानी के साथ फांक लीजिये । अस्पगोल रोज़ रोज़ लें तो फ़ाएदा नहीं होता लिहाज़ा अगर अक्सर क़ब्ज़ रहती हो तो हफ़्ते में एक बार ले लीजिये । काम न चले वक्फ़ा मज़ीद बढ़ा दीजिये
 ﴿15﴾ कच्चा केला उबाल कर खाना क़ब्ज़ के लिये बेहद मुफ़ीद है
 ﴿16﴾ मा'मूल के ख़िलाफ़ "सिह्हत कुश" ग़िज़ाएं या किसी सरमाया दार की दा'वत में हिर्स के मारे बहुत ज़ियादा मुरग़न और सकील (या'नी वज़्नी) या'नी "बीमार कुन" ग़िज़ाएं खाने की भूल कर बैठें तो घर आ कर तीन चार चम्मच "अस्पगोल पानी के साथ फांक लीजिये । शायद नुक़सान में थोड़ी सी कमी आए । मगर येह ज़ेहन तो बना लीजिये कि इस तरह की दा'वतों के खाने उमूमन सिह्हत के दुश्मन होते हैं
 ﴿17﴾ हाज़िमा दार चूरन घर में रखा कीजिये । अगर कभी क़ब्ज़ हो जाए, ज़ियादा घी तेल वाली ग़िज़ा, देग की मसा-लहा दार बिरयानी, बिल खुसूस र-मज़ानुल मुबारक या बक़र ईद में अगर लालच में पड़ कर ज़ियादा कबाब समोसे वगैरा खा डालें तो पेट में गड़बड़ का इन्तिज़ार किये बिगैर चूरन फांक लीजिये । (मक-त-बतुल मदीना का मतबूआ मुख़्तसर रिसाला "कबाब समोसे के नुक़सानात" हदिय्यतन हासिल कर के ज़रूर पढ़ लीजिये हैरत अंगेज़ मा'लूमात हासिल होंगी । إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عزّ وجلّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अिन सून)

“रज़ा” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बेहोशी के 3 इलाज

﴿1﴾ आ-यतुल कुर्सी का येह हिस्सा, لَا تَأْخُذْهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ۝^۱ पढ़ कर पानी पर दम कर के मुंह पर छींटे मारिये और रोज़ा न हो तो हल्क़ में भी चन्द क़तरे टपकाइये । फिर कोई रुकावट न हो तो हिलाने जुलाने, बिठाने और ज़रूरतन अपने हाथ से मरीज़ की आंखें खोलने से **होश** आ जाएगा ﴿2﴾ पिसी हुई सियाह मिर्च के चन्द ज़रें बेहोश आदमी के नाक के नथनों में डाल कर फूंक मारिये । अगर छींके शुरूअ हो गई तो **होश** आ जाएगा ﴿3﴾ प्याज़ के चार टुकड़े कर के सुंघाने से भी **होश** आ जाएगा । (इलाज नम्बर 2 और 3 मस्जिद के अन्दर न कीजिये)

“आबे कौसर” के छ हुरूफ़ की निस्बत से जोड़ों के दर्द के 6 इलाज

﴿1﴾ رِيْدِ كِي هَضْبِي, घुटनों, जोड़ों वगैरा जिस्म में कहीं भी दर्द हो, चलते फिरते उठते बैठते पढ़ते रहिये **दर्द** जाता रहेगा ﴿2﴾ रोज़ाना दो भुने हुए **आलू** (छिलके समेत) और थोड़ी सी **अदरक** मिला कर खा लीजिये **जोड़ों के दर्द** में फ़ाएदा होगा ﴿3﴾ **मोसम्बी** के आधे गिलास ख़ालिस रस में एक चम्मच **मछली का तेल** (मेडीकल स्टोर से मिल सकता है) मिला कर पहली बार मुसल्लसल चार दिन तक रोज़ाना दिन के ग्यारह बजे पियें । इस के बा'द चार माह तक हर 15 दिन के बा'द मुसल्लसल दो दिन उसी वक़्त

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मरिफ़त है। (ابن عساکر)

में पियें। येह इलाज सर्दियों में ज़ियादा मुनासिब है। इस इलाज के दौरान ठन्डी तासीर वाले फल म-सलन मेठे, मोसम्बी, अनन्नास और अनार वगैरा ज़ियादा इस्ति'माल कीजिये ﴿4﴾ सुब्ह नहार मुंह घी कवार का हल्वा खाइये। (येह बाज़ार में मिल सकता है) ﴿5﴾ प्याज़ का रस और राई का तेल मिला कर जोड़ों पर मालिश करें। इस से सुस्त जोड़ खुल जाएंगे और बि फज़िलही तअ़ाला आप राहत महसूस फ़रमाएंगे। ﴿6﴾ अगर डॉक्टर इजाज़त दे तो रोज़ाना एक गोली न्यूरोमेट (NEUROMET) खाने के बा'द पानी से इस्ति'माल कीजिये जोड़ों के दर्द के लिये मुजर्रब¹ है। डॉक्टर के मश्वरे से रोज़ाना एक से ज़ियादा भी ले सकते हैं और अगर दर्द की शिद्दत कम हो तो नागे से भी ली जा सकती है। इस तरह की दवाएं बिला नागा मुसल्सल न खाई जाएं बीच में कुछ दिन वक्फ़ा कर लेना चाहिये म-सलन अगर मुसल्सल 12 दिन इस्ति'माल कर ली तो 7 या 12 दिन तक वक्फ़ा कर लिया फिर ज़रूरत महसूस हुई तो शुरू कर दे।

हड्डी जोड़ने के लिये

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾
तीन दिन तक अब्बल आखिर दुरूद शरीफ़ के साथ एक एक बार पढ़ कर बार बार दम कीजिये। (ب 11) توبه 129
تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللهُ ﴿١٢٩﴾
टूटी या फटी हुई हड्डी जुड़ जाएगी।

داينيه

1 : पछों के लिये कुव्वत बख़्श है और जिम्नन इस से जोड़ों के दर्द को भी फ़ाएदा पहुंचता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : عَنَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़िश को दुआ) करते रहेंगे। (طرائق)

नक्सीर फूटने का इलाज

अगर किसी की नक्सीर फूट जाए और खून बहने लगे तो शहादत की उंगली से पेशानी पर से بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ लिखना शुरू कर के नाक के आखिर पर ख़त्म करे **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** खून बन्द हो जाएगा।

नाक की हड्डी बढ़ी हुई हो तो...

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ﴿۲﴾ (پ ۳۰ العصر ۲)
नाक या बदन में कोई सी भी हड्डी बढ़ी हुई हो तो 92 दिन तक रोज़ाना रात को सोने से पहले अक्वल आखिर दुरूद शरीफ़ के साथ ऊपर दी हुई आयते करीमा 100 मरतबा पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लीजिये।

कान के दर्द के दो इलाज

﴿1﴾ ख़ालिस शहद या तुलसी के तेल के चन्द क़तरे कान में टपकाने से **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** कान के दर्द में राहत मिलेगी ﴿2﴾ अदरक के रस का एक क़तरा कान में टपकाने से दर्द व कसक **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** दूर होंगे।

कान में कीड़ा घुस जाए तो.....

कान में अगर कोई कीड़ा चला जाए तो सरसों का तेल डालने से **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** मर जाएगा।

बुख़ार के इलाज की हिंकायत

मन्कूल है, एक शख़्स को बुख़ार आ गया, उस के उस्ताजे मोहतरम हज़रते सय्यिदुना शैख़ उमर बिन सईद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُعِيَد**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क्रियामत के दिन में उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा । (ابن بشكوال)

इयादत के लिये तशरीफ़ लाए, जाते हुए एक ता'वीज़ इनायत कर के फ़रमाया : इस को खोल कर मत देखना । उन के जाने के बा'द उस ने ता'वीज़ बांध लिया, फ़ौरन बुख़ार जाता रहा । उस से रहा न गया, खोल कर जो देखा तो بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ लिखा था । दिल में वस्वसा आया, येह तो कोई भी लिख सकता है ! अक़ीदत में कमी आते ही फ़ौरन बुख़ार लौट आया । घबरा कर शैख़ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर ग़-लती की मुआफ़ी चाही । उन्होंने ने ता'वीज़ बना कर अपने दस्ते मुबारक से बांध दिया, बुख़ार फ़ौरन चला गया । अब की बार देखने की मुमा-न-अत न फ़रमाई थी मगर डर के मारे खोल कर न देखा । बिल आख़िर साल भर के बा'द जब खोल कर देखा तो वोही بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ तहरीर थी । अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْنِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ की बड़ी ब-र-कतें हैं और इस में बीमारियों का इलाज भी । इस हिकायत से दर्स मिला कि बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن अगर किसी मुबाह बात से भी मन्अ कर दें तो समझ में न आने के बा वुजूद भी उस से बा'ज़ रहना चाहिये । येह भी दर्स मिला कि ता'वीज़ खोल कर नहीं देखना चाहिये कि इस से ए'तिक़ाद मु-त-ज़लज़िल होने का अन्देशा

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़ क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुज़ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

रहता है। फिर इस की तह करने के मख़सूस तरीक़े के साथ साथ लपेटने के दौरान बा'ज अवक़ात कुछ पढ़ा हुवा भी होता है। लिहाज़ा खोल कर देखने से उस के फ़वाइद में कमी आ सकती है।

“या मुस्तफ़ा” के सात हुरूफ़ की निस्बत से बुख़ार के 7 म-दनी इलाज

﴿1﴾ لَا يَزُونَ فِيهَا شَسَاءٌ وَلَا زَمْهَرِيرٌ ﴿1﴾ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : न उस में धूप देखेंगे न ठिठर¹। ۲۹۹-الکُفْر۱۳) येह आयते करीमा सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये عَلَيْهِ إِنَّ شَاءَ اللهُ عَلَيْهِ बुख़ार की शिद्दत में नुमायां कमी महसूस होगी और मरीज़ सुकून महसूस करेगा ﴿2﴾ हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ फ़रमाते हैं, सू-रतुल फ़ातिहा 40 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के बुख़ार वाले के मुंह पर छींटे मारिये عَلَيْهِ إِنَّ شَاءَ اللهُ عَلَيْهِ बुख़ार चला जाएगा ﴿3﴾ सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को बुख़ार था तो हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने येह दुआ पढ़ कर दम किया था : بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ اَوْعَيْنِ حَاسِدٍ ط : اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ (तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से आप पर दम करता हूं हर उस चीज़ से जो आप को अज़िय्यत पहुंचाए हर नफ़स की

1 : या'नी सर्दी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

बुराई से या हर हसद वाली आंख से। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को शिफ़ा अता फ़रमाए। मैं आप पर अल्लाह के नाम से दम करता हूँ)

(صحیح مُسْلِم ص ۲۰۲ حدیث ۲۱۸۶) बुख़ार के मरीज़ को अ-रबी में दुआ (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये ﴿4﴾ बुख़ार में

मुब्तला शख़्स येह दुआ पढ़े : بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ : عَزَّوَجَلَّ

(तरजमा : किब्रियाई वाले अल्लाह के नाम से मैं हर जोश मारने वाली रग की बुराई से और आग की तपिश के शर से, अ-ज़मत वाले रब عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूँ)

(ترمذی ج ۴ ص ۲۰ حدیث ۲۰۸۲) ﴿5﴾ हदीसे पाक में है : जब तुम में से

किसी को बुख़ार आ जाए तो उस पर तीन दिन तक सुब्ह के वक़्त ठन्डे पानी के छींटे मारे जाएं। (المُسْتَدْرَك ج ۵ ص ۵۷۶ حدیث ۸۲۷۶)

﴿6﴾ हदीसे मुबारक में है : बुख़ार जहन्नम के जोश से है, इस को पानी के ज़रीए ठन्डा करो। (بخاری ج ۲ ص ۳۹۶ حدیث ۳۲۶۳)

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार

ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़रमाने वाला शान का खुलासा है : अहले अरब को अक्सर “सफ़ावी बुख़ार” आते थे जिन में गुस्ल मुफ़ीद होता है।

हम लोगों को जो कि अ-ज़मी या'नी ग़ैरे अरब हैं। तबीबे हाज़िक

(या'नी माहिर तबीब) के मश्वरे के बिग़ैर गुस्ल के ज़रीए बुख़ार का

इलाज नहीं करना चाहिये क्यूं कि हमें अक्सर वोह बुख़ार होते हैं जिन

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोजे मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

में गुस्ल नुक़सान देह है, इस से नुमूनिया का ख़तरा होता है। हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अली क़ारी عَلَيْهِ وَحَمَةُ اللَّهِ الْبَارِي “मिरक़ात” में फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने हृदीसे पाक का तरजमा पढ़ कर बुख़ार में गुस्ल के ज़रीए इलाज किया तो उस को नुमूनिया हो गया और बड़ी मुश्किल से उस की जान बची तो वोह हृदीसे पाक ही का मुन्किर हो गया, हालां कि उस की अपनी जहालत थी। (मुलख़ब़सन मिरआत, जि. 2, स. 429, 430) इस से येह भी सीखने को मिला कि अ़वामुन्नास को तरजमे के साथ साथ तफ़्सीरे कुरआन व शुरूहे अह़ादीस भी पढ़नी चाहिएं।

हड्डियों से इलाज के म-दनी फूल

हड्डियां भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत हैं और इन में भी ग़िज़ाइयत रखी गई है। जो लोग घर में पकाने के लिये बिग़ैर हड्डी का गोशत ही ख़रीदते हैं वोह अपने साथ साथ अहले ख़ाना को भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत से महरूम करते हैं। यकीनन अल्लाहु ग़फ़ार عَزَّوَجَلَّ ने कोई चीज़ बेकार नहीं बनाई। हड्डियां ग़िज़ा के साथ साथ दवा का काम भी देती हैं। अतिब्बा बा'ज़ मरीजों को हड्डियों की यख़नी पीने का मश्वरा देते हैं। बल्कि आप ने भी बारहा हड्डियों की यख़नी पी होगी। अलबत्ता ख़ालिस बोटी का सूप कभी नहीं पिया होगा ! हड्डियां बहुत अहम हैं, तिब्बी तरीके पर हड्डियों से हासिल शुदा अरक के इन्जेक्शन भी मरीजों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक कीरात् अन्न लिखता है और कीरात् उहुद पहाड़ जितना है। (मैदान)

को लगाए जाते हैं। गाय के सींग पीस कर खाने में मिला कर चौथिया वाले (या'नी जिस को हर चौथे दिन बुखार आता हो) को खिलाने से बि इज़्जिल्लाह عَزَّ وَجَلَّ शिफ़ा हासिल हो जाती है। गाय के बाल जला कर पानी में घोल कर पी लेने से दांतों का दर्द जाता रहता है। (हिया अक्रियान अक्रियान ج १ ص २१९) कबूतर जो कि हलाल परिन्दा है उस की हड्डी जला कर ज़ख़्म पर लगाने से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के फ़ज़ल से ज़ख़्म ठीक हो जाता है। (अजाइबुल हैवानात, स. 147)

“रहीम” के चार हुरूफ़ की निस्बत से पेट के दर्द के 4 इलाज

﴿1﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक बार मैं नमाज़ पढ़ कर सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पास बैठ गया, आप ने फ़रमाया : क्या तुझे पेट में दर्द है। अर्ज़ की : जी हां। फ़रमाया : “उठो और नमाज़ पढ़ो क्यूं कि नमाज़ में शिफ़ा है।” (ابن ماجه، ج ४، ص ९८، حديث ३६०८)

﴿2﴾ एक बार، (بارة २३ سورة الصّفت آیت ४۷) ﴿۱﴾ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنرَفُونَ¹ और अव्वल आख़िर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ कर पानी या किसी खाने की चीज़ पर दम कर के इस्ति'माल कीजिये। اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ। पेट के दर्द में फ़ाएदा होगा। दूसरा कोई भी पढ़ कर दम कर के दे सकता है ﴿3﴾ अच्छी तरह पके हुए अनार के दानों पर नमक और काली मिर्च ^{لدينه}
1 : तर-ज-मए कन्जुल ईमान : न उस में खुमार है और न उस से उन का सर फिरे।

फरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

छिड़क कर ख़ूब चबा कर खा लीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** पेट का दर्द काफ़ूर (रुख़सत) होगा (ख़ूब चबा कर खाना ज़रूरी है) **﴿4﴾** रोज़ाना सुब्ह व शाम एक एक अन्डे की सिर्फ़ **कच्ची सफ़ेदी** निगल लिया करें **إِنْ شَاءَ اللهُ** पेट का दर्द और इस की अक्सर बीमारियां दूर होंगी।

“हबीब” के चार हुरूफ़ की निस्बत से बच्चों के पेट के दर्द के 4 इलाज

बच्चों के पेट के दर्द की अ़लामत यह है कि वोह बार बार टांगों को सुकेड़ते और चीख़ते हैं। जब ऐसा हो तो **﴿1﴾** प्याज़ को आग में सेंक कर पानी निचोड़ लीजिये और 3 ग्राम पिला दीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** पेट के दर्द में आराम आ जाएगा या **﴿2﴾** पेट की सेंकाई कीजिये **﴿3﴾** शहद चटाइये या **﴿4﴾** अन्डे की सिर्फ़ **कच्ची सफ़ेदी** थोड़ी थोड़ी वक्फ़े से पिलाइये, मे'दे की गर्मी से पक जाएगी और जरासीम वगैरा का ख़ातिमा कर देगी। और **إِنْ شَاءَ اللهُ** पेट की तक्लीफ़ दूर हो जाएगी।

पेट की जलन के दो इलाज

﴿1﴾ रोज़ाना पांच खजूरें (धो कर) रात को पानी में भिगो लीजिये, सुब्ह कुचल कर शहद में मिला कर नहार मुंह पी लीजिये। (यह इलाज सात दिन तक जारी रखिये) **إِنْ شَاءَ اللهُ** ठन्डक हो जाएगी **﴿2﴾** मुनासिब मिक्दार में ग्लूकोज़ पानी में घोल कर दिन में दो या तीन बार पी लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللهُ** पेट में ठन्डक हो जाएगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोजे कियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (فردوس الاخبار)

पेचिश का इलाज

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٢٧﴾ (پہ النساء ۳۲)

तुलूए आफ़ताब से क़ब्ल अक्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक मरतबा पढ़ कर एक गिलास पानी पर दम कर के नहार मुंह पी लीजिये और आधे घन्टे तक कोई भी खाने पीने की चीज़ इस्ति'माल मत फ़रमाइये । **पुरानी पेचिश भी ख़त्म हो जाएगी ।**

(इलाज की मुद्दत 21 दिन)

पेट में कीड़े

पेट में कीड़े हों तो शहद में अज्वाइन मिला कर चाट लीजिये या ज़ीरे का जोशान्दा या'नी ज़ीरा उबाल कर उस का पानी पी लीजिये ।

कै के फ़वाइद व नुक़सानात

﴿1﴾ कै से मे'दे की सफ़ाई होती है । मशहूर त़बीब "बक़रात" का कहना है कि हर शख़्स को महीने में दो बार कै करना चाहिये ताकि एक बार अगर कुछ रह जाए तो दूसरी बार में निकल आए ﴿2﴾ ज़ियादा कै आना नुक़सान देह है कि इस से सीने और मे'दे में दर्द पैदा होता है ﴿3﴾ जब कै आने लगे तो उस को ज़बर दस्ती न रोका जाए कि सख़्त अमराज़ पैदा होने का ख़तरा है, म-सलन इस से फ़ौते बढ जाते हैं ।
मस्अला : खाना या पानी या सफ़्रा (या'नी पीले रंग के कड़वे पानी) की मुंह भर कै (या'नी जो बिला तकल्लुफ़ न रोकी जा सके) इन्साना पेशाब

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहारत है। (इब्नेल)

की तरह नापाक होती है, इस की छींटों से अपने कपड़े वगैरा को बचाना ज़रूरी है। ऐसी कै वुजू तोड़ देती है और रोज़ा याद होने की सूरत में क़स्दन करने से रोज़ा भी टूट जाता है जब कि मुंह भर कै हो और इस में खाना, पानी या सफ़रा आए। बलाम की मुंह भर कै से वुजू और रोज़ा नहीं टूटता। कै के तफ़सीली अहकाम सीखने के लिये फैज़ाने सुन्नत जिल्द अब्वल सफ़हा 1047 ता 1050 का मुता-लआ बेहद ज़रूरी है।

“ग़रीब नवाज़” के आठ हुरूफ़ की निस्वत से कै बन्द करने के 8 इलाज

﴿1﴾ किसी खाने या पीने की चीज़ पर सू-रतुत्तारिक़ पढ़ कर दम कर के खा या पी लीजिये ﴿2﴾ وَقَيْلٌ يَأْرُسُ الْبَلْعَى مَاءً ﴿3﴾ وَ لَيْسَاءُ أَقْلَبِي وَغَيْضُ الْمَاءِ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ ﴿4﴾ وَ قَيْلٌ بَعْدَ اللَّقَوْمِ الظَّلْمِينَ ﴿5﴾ (پ ۱۲ هود ۴) येह आयत कागज़ पर लिख कर नहार मुंह सात रोज़ तक पिलाइये। (चाहें तो एक ही बार में सात ता'वीज़ात लिख लीजिये और रोज़ाना एक एक पानी में डाल कर पिला दीजिये) ﴿3﴾ आधे कप पानी में एक लीमूं निचोड़ लीजिये और थोड़ा सा नमक डाल कर पी लीजिये ﴿4﴾ एक छोटी इलाएची और अन्जीर चबा कर खा लीजिये ﴿5﴾ हरे धनिये का अरक़ निकाल कर दिन में चार मरतबा एक एक चम्मच पी लीजिये ﴿6﴾ बर्फ़ चूसिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़ुरआन)

﴿7﴾ लीमूं काट कर पिसी हुई काली मिर्च और नमक छिड़क कर चूसिये ﴿8﴾ गर्म पानी में लोंग भिगो कर पीने से या मोसम्बी खाने से ज़च्चा¹ की कै إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى बन्द हो जाएगी।

पागल पन

येह मरज़ उमूमन नौद न आने या पेट की ख़राबियों के बाइस या कुंवारों को शादी में रुकावट या مَعَادِ اللهُ जलक़ (या'नी अपने हाथ के ज़रीए गुस्ल फ़र्ज़ करने की वज्ह) से हो जाता है। पागल पन के सबब आदमी अज़ीब अज़ीब ह-र-कतें करता, डरावनी आवाज़ें निकालता, बा'ज़ अवक़ात मारधाड़ करता और जो बातें पहले दिमाग़ से गुज़र चुकी होती हैं उन को दोहराता है। जब उस की आंखें सुर्ख़ हो जाती हैं, गुर्ग़ाता है तो बसा अवक़ात तवह्हमात (या'नी वहमों) के मारे लोग समझते हैं कि इस को जिन्नात के अ-सरात हो गए हैं! अगर्चे शरीर जिन्नात भी परेशान करते हैं लेकिन इस की मख़्सूस अलामात होती हैं, हर मरीज़े नफ़िसय्यात को ख़्वाह म ख़्वाह "आसेब ज़दा" क़रार नहीं दिया जा सकता।

पागल पन का इलाज

जुनून (पागल पन) के मरीज़ को काली हड़ का मोटा मोटा सुफूफ़ (चूरा) 6 ग्राम ख़िलाइये और एक पाव दूध में एक शहद का لِينَهُ

1 : जिस के पेट में बच्चा हो उसे "हामिला" कहते हैं जब कि बच्चा जनने के बा'द से खून बन्द होने तक औरत "ज़च्चा" कहलाती है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख़्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (1)

चम्मच हल कर के सू-रतुल फ़ातिहा सात बार अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर इस पर दम कर के पिला दीजिये, मरीज़ पर भी येही दम कीजिये और कोशिश कर के सुला दीजिये ।

गन्ज के चार इलाज

﴿1﴾ रोज़ाना जैत (या'नी जैतून शरीफ़ का तेल) सर में डाल कर गन्ज की ख़ूब मालिश कीजिये, إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ इस तरह बन्द शुदा मसाम खुल जाएंगे और बाल उगने लगेंगे । मगर येह अमल बहुत दिनों तक जारी रखना होगा ﴿2﴾ सर में प्याज़ का रस तेल की तरह डालने से जूओं का ख़ातिमा हो जाता है नीज़ बीमारी से जो बाल झड़ चुके होते हैं दोबारा उग जाते हैं । (इस से सर में बदबू हो जाएगी, इस सूरत में मस्जिद का दाख़िला हराम रहेगा । लिहाज़ा इस्लामी भाई सर अच्छी तरह धो कर बदबू ख़त्म कर के मस्जिद में हाज़िर हों) ﴿3﴾ दाढ़ी या सर के बाल झड़ते हों या गन्ज हो तो आठ चम्मच जैतून के गर्म किये हुए तेल में एक चम्चा अस्ली शहद और एक चम्चा बारीक पिसी हुई दारचीनी मिला लें फिर जहां के बाल झड़ते हों वहां ख़ूब मस्लें फिर अन्दाज़न पांच मिनट के बा'द धो लें या नहा लें । बचा हुआ तेल दोबारा भी इस्ति'माल कर सकते हैं । إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ 12 दिन में फ़ाएदा नज़र आ जाएगा, मगर ता हुसूले शिफ़ा येह अमल जारी रखिये ﴿4﴾ कलौंजी पीस कर मेंहदी में मिला कर सर में लगाने से सर के बाल झड़ना बन्द होते हैं ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह رَحْمَةً عَلَيَّ وَعَلَىٰ رَحْمَةً عَلَيَّ उस पर दस रहमते भेजता है। (مسلم)

“रब” के दो हुरूफ़ की निस्बत से कमज़ोरी के 2 इलाज

﴿1﴾ मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़रमाने आलीशान का खुलासा है : तल्बीना कमज़ोरी का बेहतरीन इलाज है इस को बनाने का तरीका येह है : दूध में (जव शरीफ़ या) गेहूं का आटा या भूसी डाल कर पतला पका लीजिये । और ज़रूरत के मुताबिक़ शहद डाल लीजिये । हस्बे ख़्वाहिश तनावुल फ़रमाइये । इस को अ-रबी में तल्बीना उर्दू में लपटा (राब) और पंजाबी में सीरा कहते हैं खुसूसन बीमारी के बा'द हो जाने वाली कमज़ोरी के लिये बेहद मुफ़ीद है । येह बहुत हलकी ग़िज़ा है, ज़ूद हज़्म है, पेट में बोझ नहीं करता, दिल को कुव्वत बख़्शाता है, रन्जो ग़म और दिल की घबराहट को दूर करता है । (मिरआत, जि. 6, स. 17 मुलख़ब्रसन)

﴿2﴾ भेंस के गर्म दूध में दो बड़े चम्मच शहद मिला कर रोज़ाना पीना जिस्मानी ताक़त बढ़ाने के लिये बेहद मुफ़ीद है ।

रात का खाना खाने का फ़ाएदा

मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने सिद्दहत निशान है : रात का खाना न छोड़ो चाहे एक मुठ्ठी खजूर ही क्यूं न हो क्यूं कि रात का खाना तर्क करना आदमी को ज़ईफ़ कर देता है ।

(ابن ماجه ج ٤ ص ٥٠ حديث ٣٣٥٥)

فَرَمَانَهُ مُسْتَفْهِمًا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

मसाने की पथरी का इलाज

खरबूजा ख़ूब खाइये कि येह सर की खुश्की और ख़ारिश को दूर भगाता, जिस्म की गांठें गलाता, ख़ूब पेशाब लाता और मसाने की पथरी से नजात दिलाता है । खरबूजा और खजूर मिला कर खाना नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से साबित है ।

(شمائل ترمذی ص ۱۲۱ حدیث ۱۹۰)

“ग़मे मदीना” के सात हुरूफ़ की निस्बत से तेज़ाबिय्यत (सीने की जलन) के 7 इलाज

﴿1﴾ अगर मुवाफ़िक़ आए तो रोज़ाना दिन के वक़्त एक केला खा लीजिये । ﴿2﴾ हर तीसरे दिन तीन चम्मच असपगोल की भूसी पानी से फांक लीजिये । ख़ाली मुंह में असपगोल डालेंगे तो चिपकेगी लिहाज़ा पहले थोड़ा सा पानी मुंह में भर लीजिये इस के बा’द असपगोल डालिये ﴿3﴾ हफ़्ते में दो रोज़े रखिये, स-हरी में खाना कम खाइये । हो सके तो जुमुआ और हफ़ता या जुमा’रात और जुमुआ रोज़ा रख लीजिये । मेरे आका आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ फ़रमाते हैं : जुमुआ या’नी जब इस के साथ पन्जशम्बा (या’नी जुमा’रात) या शम्बा (या’नी हफ़ता) भी शामिल हो मरवी हुवा कि दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है । (फ़तावा र-जविय्या, जि. 10, स. 653) ﴿4﴾ खीरा, ककड़ी,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

पत्तों समेत मूली, शलजम, चुकन्दर, गाजर, और सेब खाइये। इन सब्जियों और सेब के न छिलके उतारिये न ही उन को खुरचिये कि इस तरह अक्सर विटामिन्ज़ जाएअ हो सकते हैं, यूं ही धो कर इस्ति'माल कीजिये ﴿5﴾ रोज़ाना कुल 12 गिलास पानी पिया कीजिये (गिज़ाओं के ज़रीए पेट में जाने वाला पानी भी 12 गिलास में शामिल है) ﴿6﴾ ठन्डे मशरूबात, अचार, मेदे की बनावटों, पिज़्ज़ों पराठों और मीठी डिशों वगैरा से हत्तल इम्कान परहेज़ कीजिये। नीज़ खाना कम खाइये, ख़्वाहिश बाकी हो और हाथ रोक लीजिये। **सीने की जलन** समेत कई बीमारियों से बचे रहेंगे ﴿7﴾ जिस वक़्त **सीने में जलन** मचे या तीखा पानी मे'दे से हल्क़ में आता महसूस हो। PEPTINIL नामी टिक्या पानी से ले लीजिये। **इन् शَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** बहुत मुफ़ीद पाएंगे। (डॉक्टर के मश्वरे से यह गोली इस्ति'माल फ़रमाइये)

“**शिफ़ा**” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से दमा के 3 इलाज

﴿1﴾ रोज़ाना तीन या पांच खजूरें (धो कर) खा कर ऊपर से गर्म पानी पी लीजिये **इन् शَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** बल्ग़म पतला हो कर निकल जाएगा और दमा में आराम मिलेगा ﴿2﴾ तीन खुशक अन्जीर दूध में पका कर रोज़ाना सुब्ह और रात को इस्ति'माल करने से **बल्ग़म** और दमा से **इन् शَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** नजात मिलेगी ﴿3﴾ रोज़ाना गाजर का रस पीने से **इन् शَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** दमा में आराम मिलेगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद् बख़्त हो गया । (अबुनूर)

“फ़ज़ल” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से दमा के हज़्ज़ा करने के वक़्त के 3 इलाज

﴿1﴾ हल्दी और सूंठ (या'नी सूखी अदरक) का थोड़ा सा चूरन शहद के साथ ले लीजिये ۞ شَاءَ اللهُ ۞ दमा में राहत मिल जाएगी ﴿2﴾ एक पका हुआ केला आग की लौ पर गर्म कीजिये फिर छील कर पिसी हुई काली मिर्च छिड़क कर खा लीजिये ﴿3﴾ दो चम्मच अदरक का रस शहद के साथ इस्ति'माल कीजिये ।

उंगली कट जाए तो

उंगली वगैरा कट जाए तो कपड़े पर ख़ालिस शहद लगा कर पट्टी बांध दीजिये ۞ شَاءَ اللهُ ۞ खून बन्द और ज़ख़्म ठीक हो जाएगा ।

कांटा निकालने का तरीक़ा

अगर जिस्म में कहीं कांटा पैवस्त हो गया हो और न निकलता हो तो अन्डे की सफ़ेदी में थोड़ी सी फट्करी मिला कर उस जगह बांध दीजिये । ۞ شَاءَ اللهُ ۞ थोड़ी देर में निकल आएगा ।

“मुहम्मद” के चार हुरूफ़ की निस्बत से जल जाने के 4 इलाज

﴿1﴾ चूल्हे पर ख़ूब जोश दिया हुआ नारियल का तेल (क़ाबिले बरदाशत होने के बा'द) जले हुए हिस्से पर मलने से ۞ شَاءَ اللهُ ۞ फ़ाएदा हो जाएगा ﴿2﴾ बहुत ज़ियादा पक्का केला अच्छी तरह मसल कर जली

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (अल-बुख़ारी)

हुई जगह पर चिपका कर पट्टी बांध दीजिये **﴿1﴾** इِنْ شَاءَ اللهُ ﷻ फ़ौरन सुकून मिलेगा **﴿3﴾** गर्म पानी या भाप से जले हुए हिस्से पर चावल का आटा छिड़कना मुफ़ीद है **﴿4﴾** जली हुई जिल्द पर सफ़ेद दाग़ रह जाने की सूत में ख़ालिस शहद में रूई डबो कर बांधने से **﴿5﴾** इِنْ شَاءَ اللهُ ﷻ दाग़ निकल जाएगा।

“रहमत” के चार हुरूफ़ की निस्बत से थकन दूर करने के 4 इलाज

﴿1﴾ हज़रते ख़ातूने जन्नत सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज्ज़हरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا को महबूबे रब्बे जुल मिनन, सुल्लाने ज़मीनो ज़मन, शहन्शाहे शीरी सुख़न صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने थकन का यह इलाज इर्शाद फ़रमाया : “सोते वक़्त 33 बार سُبْحَانَ اللهِ 33 बार الْحَمْدُ لِلَّهِ 34 बार يَاقُدُّوسُ **﴿2﴾** (مُسْلِمٌ ص ١٤٦٠ ١٧٢٨) पढ़ लिया करो। **﴿3﴾** इِنْ شَاءَ اللهُ ﷻ का जो कोई (चलते फिरते उठते बैठते) विर्द करता रहेगा **﴿4﴾** इِنْ شَاءَ اللهُ ﷻ थकन से महफूज़ रहेगा **﴿5﴾** लीमू का शरबत शकर डाल कर पीने से भी थकन दूर हो जाती है **﴿6﴾** दो बड़े चमचे ख़ालिस शहद एक गिलास पानी में मिला कर पी लीजिये **﴿7﴾** इِنْ شَاءَ اللهُ ﷻ थकन दूर हो जाएगी।

बीमारियों से हिफ़ाज़त के लिये.....

पुरानी ज़नानी बीमारियों से नजात और आयिन्दा इन से तहफूज़ात के लिये इस्लामी बहनें यह चीज़ें ब कसरत इस्ति'माल करें

فَرَمَانِهِ مُسْتَفَا عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبرالزمان)

﴿1﴾ चुकन्दर ﴿2﴾ पत्ते वाली सब्जियां ﴿3﴾ साग ﴿4﴾ सोयाबीन ﴿5﴾ चोलाई का साग ﴿6﴾ सरसों का साग ﴿7﴾ कढ़ी पत्ता मरीज़ ग़ैर मरीज़ सभी इस को खा लें, इसे सालन से निकाल कर फेंक न दिया करें ﴿8﴾ हरा धनिया ﴿9﴾ पोदीना ﴿10﴾ काले और सफ़ेद चने ﴿11﴾ दालें ﴿12﴾ बिगैर छने आटे की रोटी। (ब्राऊन खुब्ज़ (रोटी) और ब्राऊन ब्रेड (डबल रोटी) के नाम से बिगैर छने आटे की रोटियां बेकरी से मिल सकती हैं)

हैज़ की ख़राबी के नुक़सानात

हैज़ खुल कर न आने, या तक्लीफ़ से आने या बन्द हो जाने से कई किस्म के अमराज़ जनम लेते हैं। म-सलन चक्कर आना, सर का दर्द और खून की ख़राबी के अमराज़ जैसे ख़ारिश, फोड़े फुन्सियां वगैरा।

हैज़ की ख़राबी और डरावने ख़्वाब

हैज़ की ख़राबियों की वजह से मरीज़ा को दूसरी परेशानियों के इलावा डरावने ख़्वाब भी तंग करते हैं, यहां तक कि बा'ज़ अवकात आमिल "अ-सरात" कह कर मज़ीद ख़ौफ़ज़दा कर देते हैं! हालां कि वोह आसेब ज़दा नहीं होती। इस्लामी बहन या इस्लामी भाई को जिस वजह से भी डरावने ख़्वाब आते हों तो रोज़ाना सोते वक़्त بِأَمْرِكَ 21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ लिया करे। इस अमल की पाबन्दी करने से إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ ख़्वाब में नहीं डरेंगे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा। (جمع الجوامع)

कसरते हैज़ के दो इलाज

﴿1﴾ बहुत ज़ियादा खून गिरता हो और चक्कर आते हों तो थोड़े से तुलसी के रस में एक चम्मच शहद मिला कर पीना मुफ़ीद है

﴿2﴾ छ ग्राम धनिया (बीज) आध किलो पानी में ख़ूब पकाइये यहां तक कि पानी आधा रह जाए अब उतार कर एक चम्मच शहद मिला कर नीम गर्म पी लीजिये, إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ जल्द फ़ाएदा हो जाएगा। (मुद्दत 20 दिन)

माहवारी की ख़राबियों के तीन³ इलाज

﴿1﴾ हींग खाने से रेहूम (बच्चादान) सुकड़ता और हैज़ साफ़ आता है ﴿2﴾ 12 ग्राम काले तिल, पाव किलो पानी में ख़ूब जोश दीजिये जब तीन हिस्से पानी जल जाए तो उस में कुछ गुड़ डाल कर दोबारा जोश दीजिये (पीने के क़ाबिल हो जाने के बा'द) येह पानी पीने से إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ माहवारी की तक्लीफ़ कम और अय्याम दुरुस्त हो जाएंगे ﴿3﴾ कच्ची प्याज़ खाने से माहवारी साफ़ आती है और दर्द नहीं होता।

हैज़ बन्द होने के 6 इलाज

﴿1﴾ अगर गरमी या खुश्की के बाइस हैज़ बन्द हो जाए तो एक कप सोंफ़ के अरक में एक छोटा चम्मच तरबूज के बीज का मज़ और एक चम्मच शहद मिला कर सुब्ह व शाम पियें إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

फ़ाएदा हो जाएगा । पानी ख़ूब कसरत से पियें, हो सके तो रोज़ाना 12 गिलास पी लें ﴿2﴾ 25 ग्राम गुड़ और 25 ग्राम सोंफ़ एक किलो पानी में जोश दीजिये, अन्दाज़न जब एक पियाली रह जाए तो छान कर गर्म गर्म पी लीजिये । ता हुसूले शिफ़ा रोज़ाना सुब्ह व शाम येह इलाज कीजिये ﴿3﴾ हर खाने के साथ लहसन का एक जवा (या'नी लहसन की पोथी की काश, कली) बारीक काट कर निगल लीजिये और बेहतर है कि उबाल कर पी लीजिये । (नमाज़ और ज़िक्रो दुरूद के लिये मुंह ख़ूब साफ़ कीजिये हत्ता कि बदबू ख़त्म हो जाए) ﴿4﴾ तीन अ़दद छुहारे, मज़े बादाम 10 ग्राम, नारियल 10 ग्राम और किशमिश या'नी खुश्क छोटे अंगूर 20 ग्राम हैज़ के दिनों में रोज़ाना गर्म दूध के साथ इस्ति'माल कीजिये ﴿5﴾ अय्यामे हैज़ से एक हफ़्ता क़ब्ल रोज़ाना दूध के साथ 25 ग्राम सोंफ़ इस्ति'माल कीजिये ﴿6﴾ आलू, मसूर और खुश्क ग़िज़ाएं माहवारी में रुकावट बनती हैं लिहाज़ा इन अय्याम में इन से परहेज़ कीजिये ।

हैज़ के दर्द का इलाज

25 ग्राम गुड़ और गाजर के बीज 15 ग्राम दो गिलास पानी में उबालिये जब आधा गिलास रह जाए तो छान कर पी लीजिये । अगर हैज़ दर्द से आता हो तो उस के अय्याम में बिगैर दर्द के आने लगेगा । اِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझे पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझे पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाइस है। (बुख़ारी)

“या खुदा” के पांच हुरूफ़ की निखत से बांझ पन के 5 इलाज

﴿1﴾ हर नमाज़ के बा'द दोनों मियां बीवी (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ) कुरआने करीम में वारिद येह दुआए इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ तीन बार पढ़ते रहें :

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿١﴾ (प ४३ अ ब्राहम ४०-४१)

﴿2﴾ दोनों हर नमाज़ के बा'द (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) दुआए ज़-करिय्या भी तीन मर्तबा पढ़ लिया करें :

رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾ (प १३ अ ब्राहम ३८)

﴿3﴾ एक अदद जाइफल बारीक पीस कर सात हिस्से कर लीजिये । तीन माह तक औरत एक एक हिस्सा रोज़ाना सुब्ह पानी से इस्ति'माल करे । मगर हैज़ के दौरान न ले ﴿4﴾ 12 ग्राम सोंफ़ और 50 ग्राम गुलक़न्द रोज़ाना रात को गर्म दूध से खाइये ﴿5﴾ आधा किलो शकर, आधा किलो सोंफ़, 250 ग्राम मग़जे बादाम, आधा किलो देसी घी । सोंफ़ को बारीक पीस कर गर्म घी में मिला दीजिये नीज़ शकर डाल दीजिये फिर चूल्हे से उतार कर कूटे हुए बादाम ऊपर डाल दीजिये ।

لَدِينِهِ

1 : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब ! और हमारी दुआ सुन ले ऐ हमारे रब ! मुझे बख़्शा दे और मेरे मां बाप को और सब मुसल्मानों को जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा ।

2 : तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद, बेशक तू ही दुआ सुनने वाला ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्ज़ूस तरीन शख्स है। (सन्द अहमद)

तरकीबे इस्ति'माल : जिस दिन माहवारी शुरू हो उस दिन से मियां बीवी दोनों तीस तीस ग्राम सुब्ह व शाम दूध के साथ इस्ति'माल करना शुरू कर दें। (मुद्दते इलाज कम अज़ कम 92 दिन)

हामिला की तकालीफ़ के 6 इलाज

﴿1﴾ देसी घी में भुनी हुई हींग देसी घी के साथ खाने से दर्दे जिह और चक्कर में फ़ाएदा होता है ﴿2﴾ अगर हामिला को भूक न लगती हो तो दो चम्मच अदरक के रस में सुपारी जितना गुड़ और पाव चम्मच अजमा का चूरन मिला कर सुब्ह व शाम इस्ति'माल करने से भूक ख़ूब लगती है ﴿3﴾ दौराने हम्ल बुख़ार और विलादत के बा'द दर्दे कमर हो तो आधा चम्मच पिसी हुई सूंठ, आधा चम्मच अजमा और आधा चम्मच देसी घी मिला कर सुब्ह व शाम खिलाइये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ आराम आ जाएगा ﴿4﴾ हामिला रोज़ाना माल्टा और सिर्फ़ एक अदद छोटा सेब खाए, अगर मजबूरी हो तो तब भी आयरन की गोलियां कम से कम इस्ति'माल करे। إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ हर किस्म की बीमारी से हिफ़ाज़त होगी और बच्चा ख़ूब सूरत होगा। सेब और आयरन की गोलियां ज़ियादा खाने से बच्चा काला पैदा हो सकता है ﴿5﴾ कै, मतली, बद हज़्मी, गेस से पेट फूलना, बलग़म, पेट का दर्द और हामिला की दीगर तकालीफ़ में अजमा का चूरन आधा चम्मच नीम गर्म पानी के साथ सुब्ह व शाम इस्ति'माल करना बहुत मुफ़ीद है ﴿6﴾ तीन ग्राम पिसा हुवा धनिया और 12 ग्राम शकर को चावल के धोवन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

(या'नी चावल का धोया हुआ पानी) के साथ हामिला इस्ति'माल करे तो कै में इफ़का (कमी, फ़ाएदा) होता है।

हसीन व अक्ल मन्द औलाद के लिये

हामिला अगर ब कसरत ख़रबूज़ा खाए तो औलाद हसीन और सिद्दहत मन्द पैदा होगी **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**। और अगर हामिला "लोबिया" (जो कि एक मशहूर सब्जी है) कसरत से खाए तो औलाद अक्ल मन्द पैदा हो। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**

अय्यामे हम्मल के लिये बेहतरीन अमल

हम्मल में किसी किस्म की भी तक्लीफ़ हो उस के लिये नीज़ वज़ू हम्मल (या'नी विलादत) में आसानी की ख़ातिर **सूरए मरयम** (पारह : 16) का विर्द बेहद मुफ़ीद है। हामिला रोज़ पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया करे या कोई दूसरा पढ़ कर दम कर दे। रोज़ाना न पढ़ सके तो जब दर्द की शिद्दत हो या बच्चा पेट में टेढ़ा हो जाए तो पढ़ कर दम कर लिया करे। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की ब-र-कतें ख़ूब ज़ाहिर होंगी।

हम्मल में ताख़ीर

अगर हम्मल में मल्लूबा दर्द शुरू होने में ताख़ीर हो जाए तो बहुत पुराना गुड़ 30 या 40 ग्राम ले कर 100 ग्राम पानी में गर्म कीजिये, जब गुड़ पिघल जाए तो "सुहागा" और "फूली हुई फट्करी" दो ग्राम मिला कर पिलाने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** आसानी से विलादत हो जाएगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया तो.....

सू-रतुल इन्शिकाक़ की इब्तिदाई पांच आयात तीन बार पढ़े । (अव्वल व आख़िर तीन मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़े) आयतों के शुरूअ में हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ ले । पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले । रोज़ाना येह अमल करती रहे । वक़तन फ़ वक़तन इन आयात का विर्द करती रहे । दूसरा कोई भी दम कर के दे सकता है । اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ । बच्चा सीधा हो जाएगा । दर्दे ज़िह के लिये भी येह अमल मुफ़ीद है ।

सफ़ेद पानी

﴿1﴾ तीन तीन ग्राम ज़ीरा और शकर को पीस कर मिला लीजिये । इस चूरन को मुनासिब मिक्दार में चावल के धोवन में मिला कर पीने से اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ । सफ़ेद पानी गिरना बन्द हो जाएगा ﴿2﴾ 6 ग्राम ख़ालिस घी और एक पक्का केला साथ खाने से اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ । पानी गिरना बन्द होगा ।

“या फ़तिमा” के सात हुरूफ़ की निस्बत से

हम्ल की हिफ़ाज़त के 7 इलाज

﴿1﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ (ए'राब लगाने की हाज़त नहीं अलबत्ता दोनों जगह 8 के दाएरे खुले रखिये) किसी काग़ज़ पर 55 बार लिख कर (या लिखवा कर) हस्बे ज़रूरत ता'वीज़ की तरह तह कर के मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े या रेग़ज़ीन या चमड़े में सी कर हामिला गले

फरमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و اله وسلم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूद पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

में पहन या बाजू में बांध ले। **इं شَاءَ اللهُ** हम्मल की भी हिफ़ाज़त होगी और **बच्चा** भी बला व आफ़त से सलामत रहेगा। अगर 55 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ) पढ़ कर पानी पर दम कर के रख लें और पैदा होते ही **बच्चे के मुंह** पर लगा दें तो **इं شَاءَ اللهُ** बच्चा ज़हीन होगा और बच्चों को होने वाली बीमारियों से भी महफूज़ रहेगा। अगर येही पढ़ कर **ज़ैत** (या'नी जैतून शरीफ़ के तेल) पर दम कर के **बच्चे के जिस्म** पर नरमी के साथ मल दिया जाए तो बेहद मुफ़ीद है। **इं شَاءَ اللهُ** कीड़े मकोड़े और दीगर मूज़ी जानवर बच्चे से दूर रहेंगे। इस तरह का पढ़ा हुआ जैत बड़ों के **जिस्मानी दर्दों** में मालिश के लिये भी निहायत कारआमद है (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 995) ﴿2﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** (बिगैर ए'राब मगर दोनों जगह 8 के दाएरे खुले हों) किसी रिकाबी (या कागज़) पर 11 बार लिख कर धो कर औरत को पिला दीजिये। **इं شَاءَ اللهُ** हम्मल की हिफ़ाज़त होगी। जिस औरत को दूध न आता हो या कम आता हो **इं شَاءَ اللهُ** उस के लिये भी येह अमल मुफ़ीद है। चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख कर पिलाएं हर तरह से इख़्तियार है ﴿3﴾ **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 111 बार किसी कागज़ पर लिख कर **हामिला** के पेट पर बांध दीजिये और विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये (ज़रूरतन कुछ देर के लिये खोलने में हरज नहीं) **इं شَاءَ اللهُ** हम्मल भी महफूज़ रहेगा और

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अबु सरी)

बच्चा भी सिद्धहत मन्द पैदा होगा । (फैज़ाने सुन्नत, जिल्द अब्वल, स. 1296) ﴿4﴾ हिफ़ाज़ते हम्मल के लिये शुरूए हम्मल से ले कर बच्चे का दूध छुड़ाने तक रोज़ाना एक बार **सूरए वशम्मस** (पारह : 30) पढ़े ﴿5﴾ हम्मल जाएअ होने के ख़तरे की सूरत में रोज़ाना बा'दे नमाजे फ़त्र शोहर हामिला जौजा के पेट पर शहादत की उंगली रख कर दस बार दाएरा बनाए और हर बार उंगली घुमाते हुए **يَا مُبْتَدِئُ** पढ़े ﴿6﴾ सात बार रोज़ाना पांचों नमाजों के बा'द अपने पेट पर हाथ रख कर हामिला पढ़े **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** बच्चा जाएअ न होगा ﴿7﴾ जिस औरत का हम्मल गिर जाता हो उसे चाहिये कि आगाज़ से ले कर आख़िरी दिन तक रोज़ाना सुब्ह खुश्क धनिया 21 दाने और शाम को काला जीरा दो चुटकियां ठण्डे पानी के साथ निगल लिया करे । **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** मुक़ररा वक़्त पर तन्दुरुस्त बच्चे की विलादत हो जाएगी

लीकोरिया का इलाज

﴿1﴾ नाश्ते के बा'द तीन खुश्क अन्जीर खाइये **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा होगा ।

इक़ुन्निसा के दो² इलाज

﴿1﴾ रोज़ाना दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अब्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ सू-रतुल फ़ातिहा एक बार और सात मर्तबा येह दुआ पढ़ कर दम कर दीजिये : **اللَّهُمَّ أَهْبِ عَنِّي سُوءَ مَا أَحْدُ** (ऐ अल्लाह मुझ से मरज़ दूर फ़रमा दे) अगर दूसरा कोई पढ़ कर दम करे तो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

कहे। **عَنْهَا** ² औरत के लिये और **عَنْهُ** ¹ की जगह मर्द के लिये। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा) **يَا مُحَيِّي** ﴿2﴾ सात बार पढ़ कर गेस हो या पीठ या पेट में तकलीफ़ या **إِكْرُنِيسَا** या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उज़्व के ज़ाएअ हो जाने का ख़ौफ़ हो, अपने ऊपर दम कर दीजिये। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा)

देसी मुर्गी के फ़वाइद

देसी मुर्गी का गोशत पेट के दर्द के लिये मुफ़ीद है, इस से **कुव्वते हाफ़िज़ा** भी बढ़ती है। आज कल मुजरिमाना ज़ेहन के लोग छोटी छोटी फ़ार्मी मुर्गियों और फ़ार्मी मुर्गी के अन्डों को रंग लगा कर देसी की तरह बना देते हैं। देसी मुर्गी की एक पहचान येह भी है कि उस का पेट कदरे पतला होता है और वज़न भी बहुत ज़ियादा नहीं होता।

وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

घरेलू झगड़ों का इलाज

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ** फ़रमाते हैं : घर में दाख़िल होते वक़्त पढ़ कर पहले सीधा क़दम दरवाज़े में दाख़िल करना चाहिये फिर घर वालों को **सलाम** करते हुए घर के अन्दर आएँ। अगर घर में कोई न हो तो **السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ** कहे। बा'ज़ बुजुर्गों को देखा गया है कि दिन की इब्तिदा में घर में दाख़िल होते

داينسه

1, 2 : या'नी इस से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (भरान्)

वक़्त बिसْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ और قُلْ هُوَ اللّٰهُ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है (या'नी झगड़ा नहीं होता) और रोज़ी में ब-र-कत भी। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 9)

या इलाही हर घड़ी शैतान से महफूज़ रख

दे जगह फिरदौस में नीरान¹ से महफूज़ रख

कलौंजी के 19 म-दनी फूल

﴿1﴾ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : काला दाना (कलौंजी)

में मौत के सिवा हर बीमारी की शिफ़ा है। (बुख़ारी ज ६, स १९, حدिथ ०६१८७)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान

फ़रमाते हैं : हर मरज़ से मुराद हर बल्ग़मी और रतूबत

के अमराज़ हैं क्यूं कि कलौंजी गर्म और खुश्क होती है लिहाज़ा मरतूब

और सर्दी की बीमारियों में मुफ़ीद होगी। (मिरआत शर्ह मिश्कात, जि. 6,

स. 216) ﴿2﴾ रोज़ाना नहार मुंह चुटकी भर कलौंजी तक्रीबन 12 क़तरे

अस्ली शहद में मिला कर बिसْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ कर शहादत की

उंगली से चाटिये إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ बहुत सी बीमारियां ख़त्म हो जाएंगी

﴿3﴾ कलौंजी को जला कर खाना बवासीर को दूर करता है ﴿4﴾

कलौंजी खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं ﴿5﴾ कलौंजी को तेल में

जोश दे कर सर में वोह तेल लगाने से दर्दे सर, नज़्ला और ज़ुकाम

में फ़ाएदा होता है ﴿6﴾ अगर खुश्की की वज्ह से सर पर पपड़ियां सी

1 : नीरान या'नी दोज़ख़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन में उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा। (ابن بشكوال)

बन गई हों तो कलौंजी खाने से ख़त्म हो जाती है ﴿7﴾ कलौंजी को पानी में जोश दे कर गरारे करने से दांतों का दर्द दूर होता है ﴿8﴾ पेशाब न आने की सूरत में कलौंजी के खाने से पेशाब खुल कर आ जाता है ﴿9﴾ कलौंजी में सिर्का मिला कर खाने से बल्ग़मी वरम दूर होता है ﴿10﴾ जैतून के तेल में कलौंजी डाल कर सूंघने से आंखों का दर्द जाता रहता है ﴿11﴾ कलौंजी बल्ग़मी बुख़ार के लिये मुफ़ीद है ﴿12﴾ कलौंजी हैज़ की रुकावट को दूर करती है ﴿13﴾ कलौंजी सिर्के में मिला कर बरस (कोढ़) पर लगाने से फ़ाएदा होता है ﴿14﴾ फ़ौते की सूजन में कलौंजी पीस कर सिर्के में मिला कर लगाएं तो फ़ाएदा होता है ﴿15﴾ कलौंजी पीस कर मेंहदी में मिला कर सर में लगाने से सर के बाल झड़ना बन्द होते हैं ﴿16﴾ कलौंजी का इस्ति'माल सीने के दर्द और खांसी में मुफ़ीद है ﴿17﴾ घर में कलौंजी की धूनी देने से खटमल और मच्छर का ख़ातिमा होता है ﴿18﴾ दिमाग़ की बीमारी हो तो कलौंजी के इक्कीस दाने कपड़े की पोटली में बांध कर पानी में उबालिये। पहले दिन सीधे नथने में दो क़तरे और उल्टे नथने में एक क़तरा। दूसरे दिन उल्टे नथने में दो क़तरे और सीधे नथने में एक क़तरा डालिये। اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ। तीन दिन में शिफ़ा हासिल हो जाएगी ﴿19﴾ कलौंजी शहद के साथ खाने से (गुर्दे मसाने की) पथरी निकल जाती है।

अन्जीर के 33 म-दनी फूल

﴿1﴾ अन्जीर में दीगर तमाम फलों के मुक़ाबले में बेहतर

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुज़्ज़ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

गिज़ाइयत है । ﴿2﴾ अन्जीर बवासीर को ख़त्म कर देता और जोड़ों के दर्द के लिये मुफ़ीद है ﴿3﴾ अन्जीर नहार मुंह खाने के अजीबो ग़रीब फ़वाइद हैं ﴿4﴾ खुश्क अन्जीर सख़्त हों तो उन को कमो बेश 25 मिनट पानी में भिगो दीजिये और धो कर छाउं में सुखा दीजिये ۞ ۞ ۞ नर्म हो जाएंगे । सब्जियां, फल, खुश्क मेवे वगैरा मुम्किना सूरत में धो कर ही इस्ति'माल किये जाएं ताकि जरासीम कुश अदविय्या का असर धुल जाए ﴿5﴾ अगर खूनी बवासीर हो तो पांच अ़दद अन्जीर टुकड़े कर के पाव भर दूध में उबाल कर ठन्डा कर के रोज़ाना सोने से पहले खा लीजिये । ۞ ۞ ۞ थोड़े ही दिनों में खून बन्द हो जाएगा । यह अ़मल मुस्तक़िल जारी रखें तो बहुत अच्छा है ﴿6﴾ खुश्क बवासीर के सबब बहुत दर्द हो तो पानी में एक चम्मच शहद मिला कर उस के साथ नहार मुंह या'नी नाशते से क़ब्ल और अगर रोज़ा हो तो इफ़तार में ख़ाली पेट पांच अ़दद अन्जीर रोज़ाना खाइये ﴿7﴾ ताज़ा अन्जीर का रस निचोड़ कर मस्सों को लगाया जाए तो मस्से झड़ जाने की उम्मीद है ﴿8﴾ जिन को बवासीर की तकलीफ़ कम मगर बद हज़्मी ज़ियादा हो वोह हर खाने से क़ब्ल तीन अ़दद अन्जीर खा लें ﴿9﴾ जिन के पेट में बोझ हो जाता हो वोह हर बार खाना खाने के बा'द तीन अ़दद अन्जीर खा लें ﴿10﴾ अन्जीर मोटे पेट को छोटा करता और मोटापा दूर करता है ﴿11﴾ कमर के दर्द वाले रोज़ाना सात अ़दद अन्जीर खा लिया करें ﴿12﴾ जिस को क़ब्ज़ रहता हो वोह रोज़ाना नहार मुंह 5 अ़दद अन्जीर खा ले ﴿13﴾ अन्जीर खाने से हैज़ के खून में इज़ाफ़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

और दूध में ज़ियादती होती है ﴿14﴾ अन्जीर में खांसी और दमे का इलाज है ﴿15﴾ अन्जीर चेहरे का रंग निखारने के लिये मुफ़ीद है ﴿16﴾ अन्जीर पुरानी बलग़मी खांसी के लिये नफ़अ बख़्श है ﴿17﴾ अन्जीर बलग़म को पतला कर के ही निकाल देता है ﴿18﴾ अन्जीर प्यास बुझाता है ﴿19﴾ अन्जीर का गूदा बुख़ार के दौरान मरीज़ के मुंह को खुश्क नहीं होने देता ﴿20﴾ मेथी के बीज और अन्जीर पानी में पका कर ख़ूब गाढ़ा कर के उस में शहद मिला कर खाने से खांसी की शिद्दत में राहत होती है ﴿21﴾ अन्जीर गुर्दा और मसाना (या'नी पेशाब की थेली) की सोज़िश के लिये मुफ़ीद है ﴿22﴾ सफ़ेद अन्जीर सब से बेहतरीन माना जाता है। येह गुर्दा, मसाना और पित्ते की पथरी को हल कर के निकाल देता है ﴿23﴾ अगर किसी के गुर्दे फ़ेल हों और वोह तवील मुद्दत तक अन्जीर इस्ति'माल करे तो बि फ़ज़िलही तअाला उस को सिद्दहत मिल सकती है ﴿24﴾ अन्जीर पेट की रीह को बाहर निकालता है ﴿25﴾ अन्जीर और बादाम मिला कर खाएं तो पेट की अक्सर बीमारियां दूर भागती हैं ﴿26﴾ अन्जीर हल्क़ की सोज़िश, सीने के बोझ और फेफ़ड़ों की सूजन में फ़ाएदा करता है ﴿27﴾ अन्जीर जिगर और तिल्ली को साफ़ करता है ﴿28﴾ अन्जीर जिगर और पित्ते के सुद्दे या'नी गन्दी गांठों को निकालता है ﴿29﴾ अन्जीर छाती की पुरानी सोज़िश के लिये नफ़अ बख़्श है ﴿30﴾ अन्जीर के जोश दिये हुए पानी के गरारे करने से मसूड़ों और गले की सोज़िश कम होती है ﴿31﴾ खुश्क अन्जीर को जला कर उस की राख से मन्जन करने से दांत का

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोजे मुझ पर दुरुद को कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा कियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

मैल और धब्बे दूर होते हैं ﴿32﴾ जब शरीफ़ की रोटी और अन्जीर मिला कर खाना मु-तअद्द दिमागी अमराज़ का इलाज है ﴿33﴾ अन्जीर ब्लड प्रेशर (B.P.) और कोलेस्ट्रॉल (CHOLESTROL) के मरीज़ के लिये मुफ़ीद है।



ग़मे मदीना, बकीअ,
मग़िफ़रत और बे
हिसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आका
के पड़ोस का तालिब



21 रबीउल अव्वल शरीफ़ 1437 सि.हि.

22-02-2012

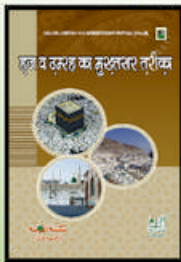
माخذ و مراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالفکر بیروت	مجمع الروايات	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	قران پاک
داراحیاء التراث العربی بیروت	شمالی ترمذی	داراحیاء التراث العربی بیروت	تفسیر کبیر
دارالفکر بیروت	مرقاۃ المفاتیح	مکتبۃ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور	تفسیر نعیمی
ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور	مرآة المناجیح	دارالکتب العلمیۃ بیروت	صحیح بخاری
دارالمعرفۃ بیروت	رد المحتار	دارابن حزم بیروت	صحیح مسلم
رضافاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	داراحیاء التراث العربی بیروت	سنن ابوداؤد
نوری کتب خانہ مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ افریقہ	دارالفکر بیروت	سنن ترمذی
دارالکتب العلمیۃ بیروت	قوت القلوب	دارالمعرفۃ بیروت	سنن ابن ماجہ
دارصادر بیروت	احیاء العلوم	دارالفکر بیروت	مسند امام احمد
دارالکتب العلمیۃ بیروت	بہجۃ الاسرار	دارالفکر بیروت	معجم الاوسط
دارالکتب العلمیۃ بیروت	حیاۃ الجنان الکبریٰ	دارالمعرفۃ بیروت	مستدرک
مکتبۃ العصریہ بیروت	حصن حصین	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الترغیب والترہیب
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	الوظیفۃ الکریمیۃ	بیروت	عمل ایوم واللیۃ
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	فیضان سنت جلد اول	دارالکتب العلمیۃ بیروت	جامع صغیر

सुन्नत की बहारें

تَبَلَّوْا كُرْآنُو سُنَنَاتِ كِی اَآلَمَآرِی رَی رِیَآسِی تَهْرِیك دَا 'وَته इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिजाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिकाने रसूल के म-दनी काफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ. इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुदने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ।" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी काफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ।



मक-त-घतुल मसीवा®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net